









The heroine (nāyikā) is Vasantasenā, a beautiful and wealthy lady, who although "according to the strictest standard of morality, not irreproachable in character, might still be described as conforming to the Hindu conception of a high minded liberal woman. Moreover, her naturally virtuous disposition becomes strictly so from the moment of her first acquaintance with Charadatta" (Momer Williams). "The masterpiece of the play, however, is Samsthānika, the Raja's brother in law. A character so utterly contemptible has perhaps been scarcely ever delineated, his vices are egregious, he is coldly and cruelly malicious, and yet he is so frivolous as scarcely to excite our indignation, anger were wasted on one so despicable, and without any feeling of compassion for his fate, we are quite disposed, when he is about to suffer the merited punishment of his crimes, to exclaim with Charudatta, 'Loose him and let him go'. He is an excellent sample of a genus too common in every age in Asia, whose princes have been educated by sloth and servility, and have been ordinarily taught to cherish no principle but that of selfish gratification"\*

Dr Grierson has mentioned two other Hindi translations of this play in his *Modern Vernacular Literature of Hindustan*. These seem to be out of print. The importance of the play, however, I believe, will be considered sufficient apology for my including a fresh translation of it in the present series.

CAWNPORÉ }  
28th August, 1899 }

SITARAM

## पहिली आवृत्ति की भूमिका

— ० —

अथर्वपुरी सुखमाश्रयधि तामधि स्वर्गद्वारि ।  
 जगपावनि सरयू जहाँ बहुत सुहावन धारि ॥  
 तहाँ रह्यो कायस्थ एक श्रीशिवरत्न उदार ।  
 धीरघुपतिपदकमल मँहँ ताकी भक्ति अपार ॥  
 सियरघुषरयुगचरनरत तामुत सीताराम ।  
 रासिनाम कवितासुगम धरत भूप उपनाम ॥  
 श्रीसुरसरि के तट नगर कानपूर करि बास ।  
 नाटकमाला के रतन कीन्हँ चारि प्रकास ॥  
 सषत ऋतुशरनन्दशशि नभ सित झूठ शनियार ।  
 मृच्छकटिकभाषा विरिचि करत लोकउपहार ॥  
 देशकालइतिहास जो जानत चतुर प्रवीन ।  
 गनँ विक्रमहू से अधिक यह नाटक प्रवीन ॥  
 इहाँ बिलोकँ रसिकजन लोकरीति कुल-बाल ।  
 साधारण जन मँहँ रही सष जैसी तेहि काल ॥  
 दोष न गनत कुलोन करि प्रेम पातुरी मग ।  
 देइ निवाहत प्राणहँ पातुर प्रेम अभग ॥  
 जाय अदालत माँह ज्यो दुष्ट प्रकृति के लोग ।  
 झूठ जाल रचि सिध करत नारिषधनअभियोग ॥  
 सभ्यन सग हाकिम करत ज्यो अभियोग विचार ।  
 निर्णय परिपाटी सकल दृढदेनव्यवहार ॥  
 युक्ति अनूठी सहित सब शूद्रक रब्यो सवारि ।  
 पढ़ँ मुदित मन सुजन तेहि मेरे दोष बिसारि ॥

सीताराम

## नाटक के पात्र

### पुरुष—

चारुदत्त—एक विगडा रईस और नाटक का नायक ।

रोहसेन—चारुदत्त का लडका ।

मैत्रेय—नाटक का विद्वेषक और चारुदत्त का साथी ।

वर्द्धमानक—चारुदत्त का नौकर ।

संस्थानक—राजा पालक का भाला और उज्जयिनी का कोतवाल ।

स्थावरक—संस्थानक का नौकर ।

आर्यक—एक अहीर जो राजा पालक को मारकर पीछे राजा हुआ ।

शर्विलक—एक ब्राह्मण, आर्यक का मित्र ।

सबाहक—एक जुआरी, जो पीछे, बौद्धसंन्यासी हो गया ।

माथुर—जुए को नालधाला ।

दर्दुरक—एक जुआरी ।

कर्णपूरक  
कुम्भिलक } वसतसेना के सेवक ।

फौजदारी अदालत का हाकिम ।

सेठ और कायस्थ—अदालत के मध्य ( असेसर ) ।

वीरक  
चन्दनक } नगर की रक्षा के अधिकारी ( पुलिस के अफसर )

जोधनक—अदालत का नाजिर ।

### स्त्री—

वसतसेना—एक परम उदार पातुरी और नाटक की नायिका ।

बुद्धिया—नायिका की मा ।

मदनिका—वसतसेना की लौंडी ।

धृता—चारुदत्त की स्त्री ।

रदनिका—चारुदत्त की लौंडी ।

घिट ( मुसाहिब ), जुआरी, बधुल, सिपाही, चांडाल, चेरिया  
आदि ।

श्रीसीतारामाभ्यासम  
मृच्छकटिकभाषा

प्रस्तावना

[ स्थान—एक कमरा ]

( नान्दी )

जय घुटनन लपटत भुजङ्ग वैठे योगासन ।  
जय रोके निज प्रान किए निज बस इन्द्रिय मन ॥  
जयति करत सहार सृष्टि सन दृष्टि हटाये ।  
जयति समाधि अभग ब्रह्म निज माहि लगाये ॥  
जय जयति वैठि साकार प्रभु लाय दृष्टि निज ज्ञानमय ।  
निज ब्रह्मरूप आकार दिन निरखत श्रीगौरीश जय ॥

शम्भुकण्ठ जनु श्याम घन, सदा करे कल्याण ।

गौरीभुज सोहत जहाँ, बिजुरीरेख समान ॥

( नान्दी के पीछे सूत्रधार आता है )

सूत्र—बस, बस, बहुत हो चुका, लोग उकता गये । आप लोगों से हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि आज हम लोग मृच्छकटिक नाटक खेलना चाहते हैं जिसको सम्वृत में राजा शूद्रक ने रचा था ।

सुब्रह्मण्यरीर चकौरद्वग मसिमुल धारुज्वाल ।

द्विजधर शूद्रक नृप रहो बल सोइ धरत विशाल ॥

सामवेद ऋग्वेद गणितविद्या पद्मि डारी ।

गजगिज्ञा सब सीखि, कला वैजिकिह सारी ॥

शिष की कृपा प्रसाद जोति दूग की फिर पाई ।

अश्वमेध को यज्ञ कीह निज कीर्ति दूदाई ॥

हृषीकेश



करि पूर्ण काम निज जन्म कर देइ राज निज पुत्र कहँ ।  
 माँ गरिस दिषसदम आयु लहि पैठे नृप सोइ अग्नि महँ ॥  
 समर सहत तप करत अरु जानत वेद अघाह ।  
 रिपुगज से निज भुज भिरे धीशूद्रक नरनाह ॥

आर उनके इस ग्रंथ में

चारदत्त एक छिज रागो निर्धन गुणी उदार ।  
 सोइ नगरी उज्जैनि में करत धनिज व्यौपार ॥  
 वसतमेना तहँ रही गनिका परम सयानि ।  
 चारदत्त के देखि गुन तापे रही लुभानि ॥  
 तिन की प्रेमकथा सफज दुष्ट खजन की नीति ।  
 राजा शूद्रक यह रची न्यायालय की रीति ॥

उम्र अपूर्व ग्रन्थ का श्री अघधवासी सीताराम ने यथाशक्ति  
 देशभाषा में अनुवाद किया है। आशा है कि आप लोग कृपा-  
 दृष्टि से हमारा अभिनय देख कर ग्रन्थकार के परिश्रम को सफल  
 करेंगे।

( घूम कर देख कर ) अरे ! हमारी संगीतशाला सूनी क्यों  
 देख पड़ती है ? नट कहां चले गए ? ( सोच कर ) हाँ जाना—

पुत्रहीन घर सून है, मिश्रहीन जग सून ।

मूरख को सज सून है, धारिद सब से ऊन ॥

गाना हो चुका, अब घड़ी बेर से गाते गाते गर्मी में घाम के  
 सूखे कमल के बीजों की नाई भूटा के मारे मेरी आँखें कड़कड़ा  
 रही हैं, तो अब घरवाली को बुलाकर पूँछू कि कुछ कलेवा है कि  
 नहीं। अरे, अरे, बेर से गाते गाते सूखे कमल के डहे की नाई  
 मेरे हाथ पैर कुम्हलाए जाते हैं, तो अब घर में जाकर देखू कि  
 घरवाली ने कुछ बनाया है कि नहीं। ( घूम के देख कर )  
 है मेरा घर, तो अब चलूँ। ( घूम कर देख कर )

तो हमारे घर घड़ा सामान हो रहा है—माँ

मृच्छकटिकभाषा

रही है, कटाहो के मारे रसोई का घर ऐसा जान पड़ता है मारे  
 धरती के मुँह पर गोदना गोदा गया है, भोजन की सुगंध से  
 मेरे पेट की आग और भी भड़क उठी। क्या कोई पहिले का  
 रखा धन मिल गया है या हमी को भूल के मारे घर में  
 भात ही भात देख पड़ता है! हमारे घर में कलेषा करने को  
 कुछ है नहीं और भूल के मारे हमारे प्राण निकले जाते हैं।  
 और यहाँ समान नया हो रहा है, एक रग पीस रही है,  
 एक फूल गूँध रही है। (सोच कर) यह क्या है? अच्छा,  
 घरवाली को बुलाकर पूछूँ (नेपथ्य की ओर देख कर)—  
 प्यारी! इधर तो आओ।

(नटी आती है)

नटी—कहिय।

सूत्र—यहुत अच्छे आई।

नटी—कहिय क्या आशा है?

सूत्र—बड़ी बेर से गाते २ (इत्यादि फिर पढ़ता है)—हुड  
 मारे घर में ताने बाने के है?

नटी—जो, सब कुछ है।

सूत्र—क्या क्या है?

नटी—मीठा भात है, घी है, दही है, जो जो आप खा सकते  
 सो सब कुछ है, सब तो भगवान ने दिया है।

सूत्र—क्या हमारे घर में सब कुछ है! या हँसी कर रही हो?  
 नटी—(आपही आप) अच्छा जाओ हँसी ही करूँ (प्रकाश)

सूत्र—(क्रोध से) अरे तेरा सत्यनाम हो! वृ मुझे मिट्टी  
 की नाई आकाश पर चढ़ा कर गिरा रही है।

नटी—(हाथ जोड़कर) वृमा कीजिय, मैंने हँसी की थी

सूत्र—तो आज यहाँ क्या सामान हो रहा है ? एक रंग पीसती है, दूसरी माला गूँधती है, आँगन में फूलों का चौक पूरा हुआ है।

नटी—आज व्रत है।

सूत्र—क्या नाम है इस व्रत का ?

नटी—' अभिरूपपति '।

सूत्र—इसका क्या किया ?

नटी—जिसमें अच्छा घर मिले।

सूत्र—इस लोक में या परलोक में ?

नटी—जी परलोक में।

सूत्र—( क्रोध से ) देखिये, देखिये, आप लोग ! यह हमारा भात लुटाकर परलोक का भतार माँगती है।

नटी—ऊमा कीजिए, मेने इस लिए किया है कि दूसरे जन्म में भी आपही मिलें।

सूत्र—यह व्रत किसने बताया है ?

नटी—आपके मित्र चूर्णवृद्ध ही ने तो।

सूत्र—( क्रोध से ) अरे चूर्णवृद्ध ! एक दिन तुम्हें भी राजा पालक नहीं बहू के जूड़े की नाई बाँध देंगे।

नटी—ऊमा कीजिए, आपही के लिये यह व्रत किया गया है।  
( हाथ जोड़ पैरो पर गिरती है )।

सूत्र—उठो, उठो, कहो अब इस व्रत में क्या करना चाहिये।

नटी—हम लोगो के बराबर का घामहन खिलाना चाहिये।

सूत्र—अच्छा, तो तुम जाओ, हम भी अपने बराबर घामहन हूँ हूँ।

नटी—घरुत अच्छा।

( बाहर जाती है )

सूत्र—( कुछ चलकर ) अरे इतनी बड़ी उज्जयिनी में बराबर का घामहन कहाँ हूँ हूँ ( देखकर ) अरे, चावदस का मित्र मैत्रेय श्वरही आ रहा है, तो इसी से पूछें—मैत्रेय जी ! आप का आज हमारे घर न्योता है।

( परदे के पीछे )

अजी, तुम और वाह्यन न्योता, हम छुट्टी नहीं है ।

सूत्र—सग भोजन तैयार है और वहाँ आगे आप होंगे और  
दुष्ट दक्षिणा भी आप को मिल जायगी ।

( परदे के पीछे )

एक घेर तो तुम को जवाब देही दिया, क्या बार बार हठ कर  
रहे हो ?

सूत्र—यह तो चला गया, अब चलूँ और किसी से कहूँ ।

( बाहर जाता है )

## पहिला अङ्क

[ स्याम—चारुदत्त के घर के आगे सड़क ]

( दुपट्टा हाथ में लिए मैत्रेय आता है )

मैत्रेय—अजी तुम और वाह्यन न्योता, अब हम को और और  
के घर न्योता खाना पड़ेगा । हा, अब ऐसी दशा हो गई ! जब चारु  
दत्त की बढ़ती थी तब तो हम दिन रात पिना भगड़े घसेड़े के महुँ  
कती महुँकती मिठाइयाँ खाते थे । और फाटक पर बैठे रग रग के  
भोजनों से चित्तरे की गई अपनी अंगुली रगते थे या चोक में साँड  
की नाई बैठे पागुर सी किया करते थे, अब वह दरिद्र हो गये तो  
पालतू कुबूतर ऐसे इधर उधर दाना चुग चुग कर यहाँ रात को  
घसेरा लेने आते हैं ! आज चारुदत्त जी के मित्र चूर्णवृद्धि ने  
चमेली के फूलों से बसा दुपट्टा दिया है और कहा है कि जब  
चारुदत्त जी सध्या पूजा कर चुकें तो उनको दे देना । ( घूमके  
देखकर ) अरे, चारुदत्त जी तो पूजा करके बलि देते हुए इधर ही  
आ रहे हैं, तो हम भी इन के पास चलें ।

## मृच्छकटिकमाया

[ दूसरा स्थान—चारदत्त की बैठक ]

( चारदत्त घनि का कटोरा हाथ में लिये हुए खड़ा है और रदनिका उस के पीछे खड़ी है )

चारु—( ऊपर देख कर मांस लेकर )

मेरे घर को देहरी धारत साँभ सकार ।

खाई मारस इस जो छकि छकि चारहि धार ॥

साई घनि अथ द्वारपै जमत घास फूसि जात ।

ताहि खाय के हाथ सध क्रीटहुँ नाहिँ अघात ॥

( धीरे धीरे चल कर बैठ जाता है )

( मैत्रेय आता है )

मैत्रे—( आगे बढ़कर ) जय हो, बढ़ती हो !

चारु—अरे मैत्रेय, आओ आओ बेटो ।

मैत्रे—बहुत अच्छा । ( बैठ कर ) अजी आप के मित्र चूर्णबुद्ध ने चमेली के फूलों का घमा हुआ यह दुपट्टा दिया है और कहा है कि जब चारदत्त जी पूजा कर चुकें तब उन्हें दे देना, सो यह लीजिये ( दुपट्टा दे देता है )

चारु—( दुपट्टा लेकर कुछ सोचता है )

मैत्रे—अजी क्या सोचते हो ?

चारु—माई, सुखरस मिले दु ख कछु पाई ।

घन अघेर दीपक की नाहिँ ॥

सुख लहि जे दरिद्र है जाहीं ।

ते जीघत मृत सरिस लखाहीं ॥

मैत्रे—तो आपको क्या अच्छा लगता है, दरिद्र रहना या मरना ?

चारु—मोहिँ दारिद्र अरु मरन में दारिद्र नाहिँ सोहाय ।

मरन होत दुख एक ही, दारिद्र दुखसमुदाय ॥

मैत्रे—आप को सोच करना नहीं चाहिए । आपने अपना धन घाँट दिया अब आप अमावस के से चाँद हो गये जिस का अमृत पी गये हैं ।

चारु—भाई हमको कुछ धन का सोच नहीं ।

मो कह एक दुख बड़ जागत ।

भा घर अतिथि लोग अब त्यागत ॥

सूखत मनहुँ कुम्भ पर दाना । न जल

हात हीनमद छिरद समाना ॥

मैत्रे—अजी धन भी बड़ा पाजी होता है कि वरैयो के ढर के मारे अहीरो के लौंडे सा जहाँ उसे कोई खा न डाले वहाँ जाता है ।

चारु—मोहिँ धन नास सोच कछु नाहीं ।

मिलैं भाग सन धन अरु जाहीं ॥

एक दुख मोहिँ नित्य जराघत ।

अथ मिश्रहु कछु ढील जनाघत ॥

और भी—धन नसत उपजत लाज तेहि सन तेज सकल नसात है ।

बिन तेज परिभव लहत परिभव पाइ मन मरिजात है ॥

मन मरे उपजत सोच बुद्धिहु सोचबस सब नसत है ।

पिन बुद्धि को छ्य होत, दारिद सकल अनरथ बसत है ॥

मैत्रे—अजी धन के लिये कत तक सोच करेंगे ?

चारु—भाई दरिद्रता भी,

चिता घेरे रहत और से लहै अनादर ।

मिश्रहु देखि घिनात व्यर्थही बैर करत नर ॥

सगे पराये होत करत आदर नहिँ नारी ।

सोचत ही दिन पितत रहे नर सदा दुखारी ॥

मैत्रेय, हमने कुछ द्वेषताओं को बलि दे दी, अथ तुम जाके चौराहे पर बलि दे आओ ।

मैत्रे—हम तो न जायेंगे ।

चारु—क्यों ?

मैत्रे—अजी पूजा करने से द्वेषता तुम पर प्रसन्न नहीं होते तो क्यों पूजा करते हो ?

चारु—भाई, ऐसा न कहो, यह तो गृहस्थ का धर्म है,  
तन मन वच बलिकर्म से पूजे सुर ससार ।  
होत प्रसन्न मनुष्य पर, यहि में कोन विचार ॥

तो जाओ देवियो को बलि चढा आओ ।

मैत्रे—हम न जायेंगे और किसी को भेज दीजिये । हम तो  
घाम्दन हैं, हमसे सब उलट्टे का पुलटा हो जाना है, जैसे दर्पनी में  
परछाई, दहिने का बाया और बायें का दहिना, और एक घात  
और है, रात की बेर सड़क पर गड्डी, बटमार, राजा के लग्गू  
भग्गू सब घूमते फिरते हैं, उनके बीच में जो कहीं पड़े तो मेढक  
के बोखे साँप के मुँह में सूमे की दशा हमारी हो जायगी, आप  
यहाँ बैठे बैठे क्या करते हैं ?

चारु—अच्छा ठहरो हम जप करते हैं ?

( परदे के पीछे )—खड़ी रहो बसन्तसेना, खड़ी रहो ।

( बसन्तसेना और उसके पीछे सस्थानक, उसका सङ्गी विट  
और टहलुआ दौड़ते हुए आते हैं )

विट—खड़ी रहो बसन्तसेना, खड़ी रहो ।

फयो डर बस निज अङ्ग की सुकुमारता विहाय ।

नाच माहि लीला करत डारत सो निज पाँय ॥

घबराती चचल नयनि इत उत चकित निहारि ।

मृगी सरिस भागति चलो पीछे व्याव विचारि ॥

सस्था—खड़ी रह, बसन्तसेना, खड़ी रह,

गिरति पड़ति भागी तू जाहि ।

ठाढी रह तू मरिहै नाहि ॥

तो पर हियरा जरै हमार ।

जैसे मांस परे अङ्गार ॥

टहलुआ—बाई जी ठाढी रहो,

डर से मोसे भागी जाय ।

जैसे मेरी पूँछ फुजाय ॥

आय गये हमरे सरकार ।

जैसे कूकुर करै मिकार ॥

षिट—खड़ी रहो, बसतसेना, खड़ी रहो ।

नव कदली सी देह कँपावत ॥

वायु-वेग निज बख्र हिलावत ॥

टांकी सन ज्यों मनसिल फारत ।

लाल कमल पद पद पर डारत ॥

सस्था—खड़ी रहो, बसतसेना, खड़ी रहो,

मेरे मन मँहँ चाह बढावति ।

तेरे बिना नौंद नहि आवति ॥

भाग न तू परिहँ मेरे बस,

रावन हाथ परी कुन्ती जस ॥ लीला

षिट—बसतसेना,

क्यों भागति वेगहि तू ऐसी ।

गरुड़ प्रास सम नागिनि जेमो ॥

सकत धाय मै जाधि बयारी ।

मै चाहत नहिँ अपति तुम्हारी ॥ गिरत अला

सस्था—अजी सुनो,

चेरन की मनहरनिहारि यह नाचनधारी ।

मङ्करीखानेहारि काम की रचिर पिटारी ॥

परधन नासनहारि बसडूबाधनधारी ।

सुन्दरि गहनेधारि नहीं बसि आयनधारी ॥

यहि पातुर रडी बसबा नाम अनेकन हम कहत ।

पै नीच पातुरी दुष्ट यह तऊ हमे नाहीं चाहत ॥

षिट—क्यों डर बस व्याकुल तू धावति ।

कुहल सन निज गाल बसावति ॥

धाजत मनहु चतुर कर बीना ।

गर्जत घन हँसी ज्यो दाना ॥





सस्था—गहना धाजति जव तू भागति ।

राम के डर द्रुपदी अस जागति ॥

हरष तुमहि जैसे हनुमान ।

धरी सुमद्रा थय तैं जान ॥

दहलुआ—आउ राजसारे के पास ।

तव तू खैई मझरी मांस ॥

जव पावत हैं मझरी मांस ।

तव नहि कूकुर छुवैं जहास ॥

विट—वसतसेनाबाई,

कटितट सुन्दर किकिनि छाजत ।

तारागन सम जसत धिराजत ॥

मुखळधि सेंदुररग जजाधात ।

डर वस पुरदधी मम धावति ॥

सस्था—अरषराय के भागति नारि ।

कूकुर से जैसे सीधारि ॥

जल्दी जल्दी दौरत जाय ।

मेरा चित तैं जियो चुराय ॥

वसतसेना—पल्लविका ! पल्लविका ! परभृतिका ! परभृतिका !

सस्था—भाई, कोई और भी है ?

विट—डरो न, डरो न,

वसत—माधविका ! माधविका !

विट—अजी, वह तो अपनी लोंडियो को पुकार रही है ।

सस्था—भाई, लुगाई हूँ दती है ।

विट—हां, हां ।

सस्था—लुगाई तो हम सौ मार सकते हैं—हम बड़े सूर हैं ।

वसत—(सूना डेल कर) हाय, हाय, क्या सब पीछे रह

गई ! हाय, तो अकेली ही हूँ !

विट—हूँ देा, हूँ देा !

सस्था—घसतसेना, रो रो, परभृतिका को बुला चाहे पल्लविका को, हमसे तुझे कोई छुड़ा नहीं सकता ।

भीमसेन जमदग्नि का घेटा ।

कुन्ती सुत औ दसकधर वा ॥

अथ हम भौंटा धरष तुम्हार ।

दु सासन केरी अनुहार ॥

अरे देख, देख—हम मारष पैनी तरवार ।

काटव अषर्ही मूँड़ तुम्हार ॥

तो भाग, न, जो मरने को होता है सो जीता नहीं ।

घसत—हम तो अयला हैं ।

घिट—जभी तो जीती हो ।

सस्था—जभी तो न मरैगी ।

घसत—( आप ही आप ) यह सीधी बातें कहता है तब भी जी डरता है, अच्छा यह कहूँ । ( प्रकाश ) आप लोग मेरे गहने लेंगे ।

घिट—राम, राम, घसतसेना जी, बाग की लता से कोई फूल चुराता है ? गहने का नाम न लो ।

घसत—तो फिर क्या करोगे ?

सस्था—हम घासुदेव हैं, हमारे पास रह ।

घसत—बुप रे बुप, पेसी घात न कह ।

सस्था—( तालो बजा कर हँसता है )

घिट—घसतसेना जी, आप अपने वेश्यापन के विरुद्ध क्यों बातें करती हैं ?

उधानन के सँग रहनही परमधर्म निज मानु ।

उगो लता सी राह पै निजहि पातुरी जानु ॥

तेरो तन जोवन अहै धन के हाथ पिकान ।

नीको लगे कि ना लगे मिलु गनि सबहि समान ॥

पण्डित बाग्हन मूरख नीच नहात सबै जसु एक तजार्ह ।

बैठत बायस फूजी लता सोह पख के भार जो मोर नवार्ह ॥

वाग्हन द्वित्रिय वैश्य और शूद्र उतारत एकहि नाव चढ़ाई ।  
तूहें जतासी, तजाईमी, नावसी, पातुरि है ; सबसे मिलु धाई ॥  
वसत—गुन देख कं मन लगता है, बरजोरो से नहीं ।

सस्था—यह पतुरिया जब से कामदेव के मन्दिर में गई, तब से  
दरिद्र चारुदत्त से इस का मन लग गया है, हमें नहीं चाहती ।  
उसका घर वार्ये हाथ है, देखिए यह हमारे हाथ से निकल न-  
जाय ।

विट—( आप ही आप ) जो छोड़ना चाहिये वही गधा कह  
रहा है । क्या वसतमेना चारुदत्त को चाहती है ? ठीक है, रत्न  
रत ही के साथ रहता है, इस मूर्ख को लेके क्या करेगी । (प्रकाश)  
चौधरी का घर क्या वार्ये है ?

सस्था—हाँ, हाँ, वहाँ और घर है ।

वसत—( आप ही आप ) अरे, उनका घर वहाँ और है तो  
इन पापियो ने मेरे साथ बड़ा उपकार किया जो मुझे पीतम के  
घर पहुँचा दिया ।

सस्था—अजी, बड़ा अंधेरा है । वसतमेना पेसी हेराय गई  
है जैसे उर्द की ढेरी में मसीका टुकड़ा ।

विट—बड़ा अंधेरा है ।

यद्यपि सब कुछ लखि सकैं परे अंधेरे माहि ।

पुले तक मूँटे सरिस देखैं दृग कछु नाहि ॥

और, घरसे जनु काजल गगन॥तम लिपटत सब गात ।

दीठि नीचसेवा सरिस विफल भईसी जात ॥

सस्था—अजी हम तो वसन्तसेना को हूँ दते हैं ।

विट—तुम्हें कोई चिन्ह मिलता है ?

सस्था—कैसा चिन्ह ?

विट—गहनों की झमझमहाट या फूलों की महक ?

सस्था—अजी, हम फूलों की महक सुन रहे हैं और नाक में  
है तो भी गहनों की झमझमहाट साफ देख रहे हैं ।

## [मृच्छंकीकटिकभाषा

षिट—( अलग घसतसेना से ) धाई जी ।

तुम तम वस लखि परै न कामिनि ।

झिपी भेघ भीतर ज्यो दामिनि ॥

मालगन्ध औ नूपुर की धुनि ।

तुमहि जनाघत लेहु हिये गुनि ॥

धाई जी, आपने सुना ?

घसत—( आपही आप ) सुना और समझ भी लिया ।  
( गहने उतार डालती है और माला फेंक देती है—कुछ चल कर हाथ से छूकर ) अरे भीतर टटोलने से लिङ्की जान पड़ती है सो भी सयोग से बन्द है ।

चारु—( भीतर से ) भाई, हमारा जप हो गया है । अथ तुम औराहे पर बलि दे जाओ ।

मैत्रे—( भीतर से ) मैं न जाऊँगा ।

चारु—हाथ ! हाथ ॥

दारिद्र घस कोउ तासु कहने माहि नार्ही रहत है ।

रिपु धनत नेही भीतहु, नित विपति नई सो लहत है ॥

बल घटत ताके गीजससि की ज्योतिहु घटि जात है ।

जो औरहु कोउ पाप कीन्हो ताहि सबै सुगातु है ॥

साथ नहीं कोउ ताको करे अरु आदर से नहि बोजत कोई ।

उसघ में घर जात धनीन के देखै अनादर से सब लोई ।

घोरेहि बख धरे तन जाजसे दूरि चलै सब लोग से सोई ।

पाँचही पाप बड़े हैं लिखे हम जानें छठो यह दारिद्र होई ॥

दारिद्र सोच होत मोहि पहा ।

हित सम रहत मोरि तुम देहा ॥

जैहैं निसरि जवै मम प्राना ।

रहिहैं कहाँ तुम्हार ठिकाना ॥

मैत्रे—( उदास होकर ) अच्छा, जो हमी को जाना है सो हमारे साथ रदनिका को कर दो ।

चारु—रदनिका, मैत्रेय के साथ जाओ ।

रदनि—बहुत अच्छा ।

मैत्रे—तुम दिया लेलो और बलि उठाओ, हम खिड़की खोलते हैं । ( खिड़की खोलता है )

वसत—यह मेरे ही लिए खिड़की खुली है, मैं घर में घुस जाऊँ । ( देखा कर ) हाथ दिया कहीं से आया ? अबल से दिया ठहा करके घुस जाती है ) ।

चारु—मैत्रेय, क्या हुआ ?

मैत्रे—अजी खिड़की खुलते ही वयार का भोंका जो लगा तो दिया बुझ गया । रदनिका तुम बाहर चली जाओ, हम भीतर के चौक से दिया वारे लाते हैं । ( बाहर जाता है )

सस्था—अजी, वसंतसेना को कब से हूँ ढते हैं, नहीं मिलती ।

घिट—हूँ ढिये ।

सस्था—( घिट को पकड़ कर ) यह पकड़ी, यह पकड़ी ।

घिट—अजी यह तो हम हैं ।

सस्था—अच्छा तो तुम अलग खड़े हो ( फिर टटोल के टहलुए को पकड़ कर ) अब पकड़ा ।

टहलुआ—सरकार, मैं तो चाकर हूँ ।

सस्था—इधर चाकर, इधर सगी, सगी चाकर, चाकर सगी तुम एक ओर खड़े हो । ( फिर टटोल कर रदनिका को पकड़ कर ) अब पकड़ा वसंतसेना को ।

भागत निशि अंधियार में सूँघि मालतीवास ।

द्रुपदी को चाणक्य ज्यों घरी पकरि कचपास ॥

घिट—यह गणिका जोवनमदमाती ।

शुनी कुलीन पुरुष रंगराती ।

गूँघि फूल जेहि नित्य सँवारा ।

खँचत गहि सोइ केश शकारा ॥

सस्या—हम पकरा धरि तौर कपार ।

जूरा म्मौटा केसा धार ॥

रोठ विघरु औ सौर मचाउ ।

शकर शिष महदेव बुजाउ ॥

रदनि—( डरके ) आप क्या करेंगे ?

षिट—भ्रजी यह तो किसी और की बोलती है ।

संस्था—भ्रजी जब बिल्ली दही खुराने को होता है तो कैसी बोलती बदल लेती है ?

षिट—भ्ररे, क्या बोलती बदल डाली ? बडा अचरज है और अचरज भी क्या है—

सिखे बोल बहु खानि के यह नाटक के हेत ।

नहि अचरज धानो बदलि जो यह धोखा देत ॥

( मैत्रेय आता है )

मैत्रे—भ्ररे, साँक को बयार मे दिया पेसा फुरफुराता है जैसे बलिदान के बकरे का जी । ( बढके ) भ्ररे रदनिका !

सस्या—षिट जी, कोई और आगया ।

मैत्रे—देखो, यह अन्डी बात नहीं है कि चारुदत्तजी दरिद्र हो गये तो उनके घर जिसका जी चाहे घुस आवें ।

रद—देखो मैत्रेय जी ! हमारी कैसी बेइज्जती करते हैं ।

मैत्रे—यह तुम्हारी बेइज्जती नहीं, हमारी है ।

रद—और क्या आपकी तो हर्ष है ।

मैत्रे—तो क्या धरजोरी करता है ?

रद—जी हाँ ।

मैत्रे—सच ?

रद—सच ।

मैत्रे—( क्रोध से लाठी उठाके ) राम, राम, अपने घर में तो कुत्ता भी सेर होता है, हम तो धाम्दन हैं । तो अब इसी लाठी से जो हमारे भाग की नाई टेंढ़ी है पाजी का सिर तोड़ डालेंगे ।

विट—देवता ! छमा करो छमा करो ।

मैत्रे—(विट को देख कर) इसने कुछ नहीं थिगाडा (सस्थानक को देखकर) अबे क्यों वे राजा के साले पाजी ! यह कौन मलमसी है कि आज चारुदत्त जी दरिद्र हो गये तो क्या उनके गुना से उज्जयिनी की बड़ाई नहीं है जो तू उनके घर में घुस के नौकर चाकर के सताता है ।

धुरा होत धन नसे न कोई ।

दैव सौँह से धुरा न होई ॥

सदाचार जो छाँड़त जोगा ।

धनी रहेह निन्दनजोगा ॥

विट—( घबड़ा के ) महाराज ! छमा करो, छमा करो ।  
धौर के घोखे पेसा अपराध किया, कुछ गर्व से नहीं किया ।

हम हूँ दूत एक कामिनी—

मैत्रे—इस को ?

विट—राम राम— जा तन निज आधीन ।

सो भागी घोखा परे यह कलक हम जिन ॥

तो अब कृपा करके छमा कीजिए ( तलवार रख कर हाथ जोड़, पैरों पड़ता है )

मैत्रे—तुम बडे भले मानुस हो, उठो उठो, हमने विना जाने तुम्हें कहा, अब जान गये तो छमा मांगते हैं ।

विट—आप भी हमारा अपराध छमा कीजिए ; हम तो तब उठेंगे जब आप हमारी एक बात मान लेंगे ।

मैत्रे—कहो कहो ।

विट—कृपा करके यह बात चारुदत्त जी से न कहियेगा ।

मैत्रे—न कहेंगे ।

विट—विप्र अनुग्रह तोर यह हम धरें निज माथ ।

हम हारे गुणशत्रु से यदपि शत्रु निज हाथ ॥

सस्था—(रोप से) तुम्हें क्या हुआ जो पाजी वरु के हाथ जोड़ के पाँव पड़ते हो ?

घिट—हम डरते हैं ।

सस्था—किसको डरते हो ?

घिट—चारुदत्त के गुणों को ।

सस्था—उसमें कौन गुण है जिसके घर में खाने को नहीं है ?

घिट—पेसा न कहे ।

हम सम जन पालत भयो, चारुदत्त धनहीन ।

नहि याचक अपमान तिन, कयहुँ रहे धन कीन ॥

ग्रीषम ऋतु महँ जल भरे, धिमल तडाग समान ।

नित प्रति व्याकुल नरन की प्यास बुझाय सुखान ॥

सस्था—(क्रोध से) कौन है जोड़ी का बधा ?

श्वेतकेतु वह अमित प्रभाऊ ।

पाँडव राधापूत जटाऊ ॥

कुतीसुत जायो जेहि रामा ।

धर्मपुत्र कै अश्वत्थामा ॥

घिट—अजी तुम कैसी मूर्ख की नाई बातें करते हो ? वह चारुदत्त हैं,

दीन काज कल्पवृत्त, गुनन सुके हैं सोई,

सज्जन के हेत सगे वधु के समान हैं ।

सभ्यन के दर्पन, कसौटी से चरित्र के हैं,

शील के तरंगन के सागर महान हैं ।

करते भलाई चित्त काहू को दुखावैं नाहि,

सरल उदार गुनमनि के निधान हैं ।

गुन अधिकारि से है जीना उनहीं को धन्य,

भ्राथी से तो और सबे धारतेई मान हैं ॥

तो यहाँ से चल दो ।

सस्था—बिना बसतसेना को लिये ?



षिट—गई घसतसेना ।

सस्था—कैसे ?

षिट—अन्धे की ज्यों डीठि, रोगजागे तन बल ज्यों ॥

ध्याजस कीन्हें सिद्धि मूर्ख की बुद्धि सकल ज्यों ॥

जती पुरुष को पठन करै जो नहि अभ्यासा ।

रति सी तुम पहुँ आइ गई वैरी के पासा ॥

सस्था—हम तो बिना बसन्तसेना को लिये न हटेंगे ।

षिट—अज्ञी तुमने यह भी सुना है—

गज को फन्दा डारि, हय बस कीजे रास गहि ।

मनही बस करु नारि, जाओ न जो यह करि सकी ॥

सस्था—तुम जाते हो तो जाव हम न जायेंगे ।

षिट—हम जाते हैं ! ( बाहर जाता है )

सस्था—जाओ भाड़ में—( मैत्रेय से ) अरे पाजी बरुप !

तेरे तो कौए के पजे से सिर में बाल हैं , बैठ, बैठ ।

मैत्रे—हम तो बैठे ही हैं ।

सस्था—किसने बैठाया ?

मैत्रे—दर्ह ने ।

सस्था—उठ उठ ।

मैत्रे—ठठेंगे ।

सस्था—कव ?

मैत्रे—जव फिर भगवान् सोचे होंगे ।

सस्था—अरे रेा रेा ।

मैत्रे—रुलाए तो जाते हैं ।

सस्था—कौन रुलाता है ?

मैत्रे—अभाग ।

सस्था—अरे हँस हँस ।

मैत्रे—जब फिर चाखदत्त की बढ़ती होगी ।

सस्या—हरे पाजी बरुप ! हम तुम्ह से कहते हैं, तू हमारी ओर से दरिद्री चाखदत्त से कह कि यह सोनेवाली नया नाटक देख कर उठी सूत्रधारी सी रहीं की लड़की घसतसेना कामदेव के बाग के मेले के दिन से तुम्हें चाहती है, हम लोग उसे बरजोरी पकड़ना चाहते थे सो तुम्हारे घर में घुस गई, उसे तुम आके हमारे हाथ सौंप दो नहीं तो मरते दम तक हमारा तुम्हारा बैर रहेगा । और देखो—

कुम्हिडा डठल मांदि जव गोषर धरो जगाय ।

मांस वधारी घीष में धरै जो साग सुषाय ॥

पद्माप्रो चुरप्रो ऋतु हेमत की धरो राति को भात ।

धरो रहै वासी तऊ कवहुँ नांदि वमात ॥

अच्छी तरह कहना और झट पट कह डालना और ऐसा कहना कि हम अपने महज मे बंगले पर से बैठे बैठे सुनें । न कहोगे तो कौये के गोले की नाई तुम्हारा सिर तोड़ डालेंगे ।

मैत्रे—अच्छा कह देंगे ।

सस्या—( अलग टहलुप से ) घिट जी गये ?

स्यावरक—जी हाँ ।

सस्या—तो हम भी भागें ।

स्याव—जीजिये, तलवार लीजिये ।

सस्या—तुम्हीं लिये रहो ।

स्याव—नहीं सरकार, आप लीजिये ।

सस्या—( उल्टी तलवार पकड़ कर ) ।

अहे रग खुली तरवारि ।

हारि म्यान महँ कांधे धारि ॥

जखि फूकर ज्यो पीछे जागत ।

स्यार सरिस मैं घर को भागत ॥

( सस्रगानक और स्थावरक बाहर जाते हैं )

मैत्रे—रदनिका तुम अपमा हाल चारुदत्त जी से न कहना उन्हें धन जाने का योही दुख है और भी उदास हो जायेंगे ।

रद—मैत्रेय जी मैं रदनिका हूँ मेरे मुँह से बात न निकलेगी ।

मैत्रे—बहुत अच्छा ।

चारु—( वसन्तसेना से ) रदनिका ! रोहसेन हवा में सो गया है उसे जाड़ा जगता होगा उसे भीतर पहुँचा के यह दुपट्टा ओढ़ा दो । ( दुपट्टा फेंक देता है )

वसन्त—( आप ही ) मुझे अपनी टहलनी समझ रहे हैं ।

( दुपट्टा उठा कर सूँघ कर ) अरे चमेली के फूलों से बसा हुआ है, आप जवानी का सुख भूले नहीं बैठे हैं । ( दुपट्टा ओढ़ लेती है ।

चारु—अरी रदनिका रोहसेन को भीतर पहुँचा दे ।

वसन्त—( आपही आप ) मेरे ऐसे भाग कहीं कि आप के घर के भीतर जाऊँ ।

चारु—अरी रदनिका बोलती तक नहीं ! हा !

नसी जवै धनसपति सिगरी ।

भगवतकोप दशा जय विगरी ॥

मित्र होत रिपु, जन अनुरागी ।

रहे सदा मो होत विरागी ॥

( रदनिका और विदूषक आते हैं )

मैत्रे—यह है रदनिका ।

चारु—और यह कौन है ।

अन जाने धूपित करी जेहि मैं यख उदाय ।

वसन्त—नहीं, मेरी बड़ाई हुई ।

चारु—चद्रकला सी जरद के धन, मे ढकी लगाय ॥

स्त्री हो देपना न चाहिये ।



जी ! आप मुझ पर कृपा करते हैं तो मैं यह चाहती हूँ कि यह गहने आप के यहाँ छोड़ जाऊँ ये पापी गहने के लिये मेरे पाँव पड़ते हैं ।

चारु—यह घर इस कामका नहीं है कि इसमें याती रखी जाय ।

वसन्त—आप क्या कहते हैं याती भले मानसों को सौंप जाती है कि घरों को ?

चारु—मैत्रेय गहने ले लो ।

वसन्त—आपने बड़ी कृपा की ।

( गहने देती है )

मैत्रे—( लेकर ) जय हो आप की ।

चारु—क्या बकते हो यह याती है ।

मैत्रे—( अलग ) याती है, जो इसे चोर लेजायँ !

चारु—आजही कल में ।

मैत्रे—इस याती को ?

चारु—हम आप ही के पास भेजवा देंगे ।

वसन्त—मैं चाहती हूँ कि बाम्हन देवता मुझे घर पहुँचा दें ।

चारु—मैत्रेय, चले जाओ आप के साथ ।

मैत्रे—अजी घाई जी को हसो की सी चाल है, तुम जाओगे तो हस पेसे लगेगे । हम ठहरे बाम्हन, हमें चौराहे के उतारा पेसा कुत्ते नोच खाँयगे ।

चारु—अच्छा हमीं आप के साथ जायँगे तो मशाल जलवाओ ।

मैत्रे—बर्द्धमानक ! मशाल जलाओ ।

बर्द्ध—( अलग बिदूपक से ) तेल तो है नहीं मशाल को जलै ?

मैत्रे—( अलग चारुदत्त से ) अजी हमारी मशालें दखिरी याँ रडियों की नाई बिना सनेह की हो गई ।

चारु—क्या करोगे मशाल ले के ?

वसत—क्या नाम है उनका घताशो ।

मद—जो वही जो सेठो के चौक में रहते हैं ।

वसत—अरी नाम घता ।

मद—जो उनका तो भला सा नाम है । चाणदत्त जी !

वसत—( हर्ष से ) घाह मदनिका घाह ! तूने खुब जाना ।

मद—(आप ही आप) तो यह कहूँ (प्रकाश) यह तो दरिद्र हैं ।

वसत—इसीसे तो चाहती हूँ । दरिद्र से आँख लगने से पातुर

को कोई धुरा नहीं कहता ।

मद—कहाँ भौंरी भी घेघौर के ग्राम के पास जाता है ।

वसत—तभी तो उन्हें मधुकरी कहते हैं ।

मद—जो वही हैं तो चलिये । उनमें आप मिलिये ।

वसत—अरी उनके पास यो जाना अच्छा नहीं । वह कुछ दे

तो सकते नहीं ऐसा न हो उनका मिलना कठिन हो जाय ।

मद—इसी लिये अपने गहने उनके घर छोड़ें ।

वसत—हाँ ।

( परदे के पीछे )

अरे भाई, पकड़ो ! पकड़ो ! दस मोहर द्वार कर जुआरी

भाग जाता है !! खड़ा रह रे कहाँ भाग के जायगा !

( घबराया हुआ सधाहक आता है )

सधा—जुआरी की भी धुरी गति है । हाय, हाय बन्धन तोड़

कर भागे गधे को नाई मुझे मारते हैं और अब नहीं बचता ।

जुआरी मेरे ऊपर ऐसे दौड़ रहे हैं जैसे कर्ण की शक्ति घटोत्कच

पर गिरी थी ।

भागो अवसर पाय, लेलक सन अरुभक्त सभिक ।।

राह घोच महँ आय जाउँ कौन की सरन अब ॥

तो अब इस सभिक जुआरी से बचने का यह उपाय

उलटते पाँवों चल कर इस सुने मंदिर में देवी बन जाऊँ ।

चेरी—वाई जी ! अम्मा ने कहा है कि पूजा कर लीजिये ।

वसत—अरी अम्मा से कह दे आज न नहाऊँगी, आज बाग्हन पूजा करले ।

चेरी—बहुत अच्छा ।

( बाहर जाती है )

मद—( हाथ जोड़कर ) वाई जी ! कसूर माफ हो ? जी नहीं मानता, एक घात पूँछती हूँ—आज कल आप का क्या हाल है ?

वसत—अरी मैं कैसी हो रही हूँ ?

मद—आप सुध बुध भूली कुछ सेवा करती हैं इससे जान पड़ता है कि आप का मन किमी से लगा है ?

वसत—तूने ठीक जाना, तू और का मन जानने में बड़ी चतुर है ।

मद—तो बहुत अच्छा है । किस जवान के आज भाग खुले ! कोई राजा या राजा का प्यारा है जिसके सेवने का मन है ।

वसत—अरी सेवना नहीं चाहती, रमना चाहती हूँ ।

मद—तो कोई पढ़े लिखे बाग्हन से मन लगा है ।

वसत—अरी बाग्हन को तो मैं पूजती हूँ ।

मद—तो क्या कोई देश देश घूम कर व्यापार करने वाले धनी बनिया महाजन से ?

वसत—अरी, व्यापार करनेवाले प्रीति लगा के परदेश चले जाते हैं और उनके धियोग में मरना पड़ता है ।

मद—तो न राजा, न राजवल्लभ, बाग्हन, न महाजन, तो फिर ऐसा कौन है जिसे आप चाहती हैं ?

वसत—अरी, तू मेरे साथ कामदेव के घाग गई थी ?

मद—जी हाँ गई थी ।

वसत—तो फिर क्यों अज्ञान ऐसी पूँछती है ?

मद—जो जाना, जिनके घर आप छिप के बची थीं ।

माथुर—( पकड़ कर ) क्यों वे, अब तो पकड़ गया ! ला दस मोहर ।

सम्बा—देगे ?

माथुर—अभी दे ।

सम्बा—रूपा कीजिये, दे दूँगा ।

माथुर—नहीं अभी ला ।

सम्बा—मैं तुम्हारे पाँव पड़ता हूँ ( माथुर के पाँव पड़ता है दोनों उसे मारते हैं )

माथुर—चल तू जुआरियो की मडली में पकड़ा गया ।

सम्बा—( उठकर रोता हुआ ) हाय, क्या मुझे मण्डली ने पकड़ लिया ! हाय, अब क्या करूँ , मण्डली से बच कर कहाँ जाऊँ कहाँ से दूँ ।

माथुर—अच्छा जिम्मा करो ।

सम्बा—अच्छा ( जुआरी के हाथ जोड़कर ) आधा छोड़ दो तो आधा हम तुम्हें दे दें ।

जुआरी—बहुत अच्छा आधा ही दो ।

सम्बा—( माथुर से ) आधे का मैं जिम्मा करता हूँ आधा आप छोड़ दीजिए ।

माथुर—क्या दर्ज है, पेसा ही सही ।

सम्बा—( प्रकाश ) आधा आपने भी छोड़ा ?

माथुर—छोड़ा ।

सम्बा—( जुआरी से ) आधा आपने भी छोड़ा ?

माथुर—हाँ छोड़ा ।

सम्बा—अच्छा तो अब मैं जाता हूँ ।

माथुर—जायगा कहाँ, दस मोहर दे

सम्बा—देखते हैं आप लोग !

जिम्मा किया दूसरा कहता है कि भी रहे हैं ।



( मन्दिर के भीतर घुसकर देवता के स्थान पर खड़ा हो जाता है )

( माथुर और एक जुआरी आता है )

जुआरी—जाउ इन्द्र की सरन कै भागि पैतु पाताज ।

शिषहु समिक सो नहिं सकै तेहि, वचाय यहि काल ॥

माथुर—द्वै समिकहि धोखा कहँ जात ।

मेरे डर से कांपत गात ॥

गिरत परत उठि उठि पुनि धाय ।

अपने कुल जस कारिख जाय ॥

जुआरी—( पैर के चिह्न देखकर ) इधर गया है, इधर आगे देखा पैर के चिह्न नहीं मिलते ।

माथुर—( देखकर, सोचकर ) अरे उलटे पांव हैं यह सूती मठिया है, ( सोचकर ) धूर्त जुआरी उल्टे पांवों से मन्दिर में घुस गया है ।

जुआरी—तो चलो मन्दिर में चलें ।

माथुर—अच्छा ।

( मन्दिर में घुसकर देखते हैं और एक दूसरे को इशारा करते हैं )

जुआरी—इया काठ की मूरत हैं ?

माथुर—नहीं, नहीं पत्थर की तो है ( मूर्ति को हिजा चला कर ) आओ यहीं जुआ खेलें ।

( दोनों बैठ कर जुआ खेलते हैं )

संवा—( जुआ खेलने की घबराहट जानता हुआ ) अरे

पैसा जाके पास नहि परत दाँधँ घबराय ।

सुनत नगारा और को गये राज जिमि राय ॥

जुआरी—हमारा दाँव है हमारा दाँव ।

माथुर—नहीं, नहीं, हमारा दाँव है ।

संवा—( स्तब्ध आगे बढ़ कर ) अजी हमारा दाँव है ।

जुआरी—( मवाहक को पकड़ कर ) क्यों वचा, अब तो पक गये ।

किये जुआ से भोग विलासा ।

भयो जुआ मे सर्वसनासा ॥

तीये से सर्वस गयो नक्की उपजी आस ।

सूखि दुआ मे देह अरु चौक भयो सवनास ॥ :

( आगे देख कर ) अरे ! यह तो पुराने समिक माथुर इधर ही आ रहे हैं । अब तो हम भाग भी नहीं सकते, तो मुँह लपेट कर अलग खड़े हो जायँ ( दुपट्टे को देख कर )

यदि पट मे हैं छेद हजार ।

यदि के देखि परें सब तार ॥

यह पट आदे फाह छिपावै ।

यह पट गठरी बँधी सुहावै ॥

क्या करेगा यह हमारा ?

एक पाँध भुँई मां घरे एक घरे आकाश ।

तौलों इहाँ खड़ो रहों जौलों दिवमउजास ॥

माथुर—दे या दिला दे ।

सम्बा—कहाँ से दू ? ( माथुर उसको फिर घसीटता है )

दरु—यह क्या हो रहा है ? ( आकाश से ) “इस जुआरी को समिक मार रहा है और कोई छुड़ाता नहीं । अच्छा अब दरुर्क छुड़ायेगा ”। ( आगे बढ़ कर ) हटो । ( देखकर ) अरे, यह तो माथुर है और बेचारा सधाइक है, यह क्या खाके जुआ खेलेंगा ।

सौस मुकाय सत्रे से साँक लों बैठि सकै जो जुआ मई नाहीं ।  
हारे पे मारत खींचत पीठ पे जाके न ईट के दाग लखाहीं ।  
फूथुर पेमे जुआरी सदा मिलि जाकी न जाँध को मांस चगाहीं ।  
सो घपुरा अति कोमल देह को नाहक आय फस्यो यदि माँहीं ॥

अच्छा तो अब माथुर को मना करें । ( प्रणाम करके ) माथुर जी, राम राम ।

माथुर—राम राम !

दरु—माथुर जी, यह क्या कर रहे हो ?

मृ०—३

माथु—( पकड़ कर ) अरे धूर्त्त ! हम माथुर हैं, हमारे तेरी धूर्ताई न चलेगी, लेखा अभी सय धर दे ।

सम्बा—कहाँ से दूँ ।

माथु—बाप को बेंच के दे ।

सम्बा—मेरे बाप कहाँ ?

माथु—मा को बेंच के दे ।

सम्बा—मेरी माँ कहाँ है ?

माथु—अपने को बेंच के दे ।

सम्बा—अच्छा चलिये सड़क पर चलें ।

माथु—चल ,

सम्बा—बहुत अच्छा ( कुछ चल कर ) अरे भाई ! इस समिक के हाथ से मुझे कोई दस मोहर को लेते हो ? ( आकाश में ) क्या कहते हो ' क्या करोगे ' । तुम्हारे घर के टहल करेंगे । अरे इन्होंने तो कुछ उत्तर न दिया और चले गये ; तो अब और किसी से कहें ( अरे भाई ! इत्यादि फिर कहता है ) हाय, ए तो मेरी सुनते ही नहीं ! चारुदत्त जी के कगाल हो जाने से मेरी यह गति हो गई ।

सम्बा—कहाँ से दूँ ? ( धरती पर गिर पड़ता है—माथुर उसे घसीटता है )

सम्बा—अरे भाई मुझे कोई बचाओ ।

( दर्दुरक आता है )

दर्दुर—जुआ भी घेसिहासन का राज है । ।

हरत देत धनही नित सोई । ।

हार जीत मोइ गनत न कोई ॥

राजा सम नित धनहि दिखावत ।

जन अनेक निज साथ नचावत ॥

मिली जुआ से सम्पति सारी ।

मिले जुआ से हित औ नारी ॥

दुर्—न्यो वे, हमारे पीड़े दिक् किया तो किया, हमारे सामने भी दिक् करेगा ?

( माथुर सवाहक को खींच कर उसकी नाक में एक धूँसा मारता है, सवाहक की नाक से लोह निकल आता है और वह धरती पर गिर पड़ता है, दुर्दुरक बीच में पड़ जाता है । माथुर दुर्दुरक को मारता है )

माथु—अबे छिनाल के लडके पाजो, देख तो तुम्हें इसका कैसा फज मिलता है ।

दुर्—अबे, आज तो हमने तुम्हें सड़क पर मारा, कल तुम्हें कचहरा में मारेंगे तब देखना ।

माथु—अच्छा देखेंगे ।

दुर्—कैसे देखोगे ?

माथु—( आखें फाड़ कर ) ऐसे देखेंगे ।

( दुर्दुरक माथुर की आँख में धूँज मोंक देता है और सवाहक से भाग जाने का इशारा करता है, माथुर आँख बंद करके बैठ जाता है और सवाहक भाग जाता है )

दुर्—( आप ही आप ) माथुर का बड़ा अधिकार है, उससे मेने बेर कर लिया तो अब यहाँ रहना ठीक नहीं, मेरे प्यारे मित्र शत्रिजक ने कहा था कि एक सिद्ध का वचन है कि अहीर का लड़का आर्यक राजा होगा और यही समझ कर हम ऐसे बहुत लोग उसके साथ हो रहे हैं तो हम भी उसी के पास चलें ।

( बाहर जाता है )

सवा—( डर से देख कर ) अबे, यह तो किसी की खिड़की खुली है, तो इसमें घुस चलूँ ( घुस कर वसन्तसेना को देख कर ) तुम्हारी सरन हूँ ।

वसन्त—सरनागत को अभय । अरी खिड़की बन्द कर ले ।

( लौंडी खिड़की बन्द कर लेती है )

वसन्त—तुमको किसका डर है ?

माथु—अजी यह दस मोहर हारा है ।

ददु—तो कौन बड़ी बात है ?

माथु—( ददुरक की काँख से दुपट्टा खोंच कर ) देखते हैं आप लोग, यह सत्तर छेद का दुपट्टा लिये है और कहता है कि दस मोहर कौन बड़ी बात है ।

ददु—अबे, हम दस मोहर एक दाँध में जीतते हैं और जिसके धन होता है क्या वह काँख में दाँवे फिरता है ।

महा नीच तैं नष्ट तैं दस मोहर के काज ।

पाँच इन्द्रियन को मनुज मारे डारत आज ॥

माथुर—भाई, तुम्हें दस मोहर कुछ नहीं हैं हमें तो बहुत कुछ हैं ।

ददु—अच्छा तो इसे दस मोहर और दो, यह फिर जुआ खेले

माथुर—तो क्या होगा ?

ददु—जो जीतैगा तो देगा ।

माथुर—जो न जीते ?

ददु—तो न देगा ।

माथु—क्या धकते हो, जो तुम्हें नहीं अच्छा लगता तो तुम्हें दे दो । तू बड़ा धूर्त है, माथुर तुम्हसे घट नहीं, जा दूर हो, हमने तुम्हें ऐसे लुच्चे बहुत देखे हैं ।

ददु—कौन है लुच्चा ?

माथु—तू है लुच्चा !

ददु—तेरा बाप है लुच्चा ! ( सयाहक से भाग जाने का इशारा करता है )

माथु—क्यों वे दिनाज के लड़के ! तू इसी लिये जुआ खेला है ?

ददु—हाँ, हमने ऐसे ही जुआ खेला है ।

माथु—अबे सयाहक, दे दस मोहर ।

सया—देता हूँ ( माथुर उसे घसीटता है )

एक ऐसे भलेमानुस की सेवा की जो बड़े सुंदर हैं, बहुत ही मीठा बोलते हैं, किसी को कुछ देते हैं तो जनाते नहीं और उनका कोई कुछ बिगाड़े तो चित्त में नहीं लाते। कहां तक कहूँ पराये को भी अपना समझते हैं और जो कोई उनकी सरन आजाय उसे तो बहुत ही मानते हैं।

मद—उज्जैनी में ऐसा कौन है जो वाईजी के भावते के गुन घुरा रहा है ?

वसन्त—वाह रो वाह ! मैंने भी अपने मन में ऐसाही समझा था।

मद—जी, तो फिर ?

सया—नाह जी ! वह दोन दुलियों को अपना धन दे देकर—

वसन्त—क्या कगल होगये ?

सया—आपने कैसे जान लिया ?

वसन्त—रसमें जानने की कौन बात है। गुन और धन इकट्ठा नहीं रहते। जिस तालाब का पानी पीने लायक नहीं होना वह सदा ही भरा रहता है।

मद—उनका क्या नाम है ?

सया—वाई जी ! इस ससार के चंद्रमा उनका नाम कौन नहीं जानता ? वह सेठों के चौक में रहते हैं। उनका नाम चारुदत्त जी—

प्रसन्न—( हर्ष से आसन से उतर कर ) तब तो यह आपही का घर है। अरी आपको आसन दे और पला ले। आप थके जान पड़ते हैं।

( चेरी आसन लाकर रख देती है और पला उठा लेती है )

सया—( आपही आप ) क्या चारुदत्त जी के नाम लेने ही से इतना आदर बढ़ गया। वाह चारुदत्त जी वाह ! ससार में आपही का जीना ठीक है और सब लोग तो जोहार की भावी की सिस लेते हैं। ( वसन्तसेना के पाँव पक कर ) वाई चुका आप आसन पर विराजिये।

सधा—धनी का ।

वसन्त—अरी खिड़की खोल दे ।

संधा—( आप ही आप ) अरे, क्यों यह भी धनी से डरती है!

लोगों ने ठीक कहा है,

अपने बल को जानिकै बोक उठारै जोय ।

अरधराय सो सकत नहि, गिरैखडु नहि सोय ॥

माधु—( आँखें मीच कर जुआरी से ) दे वे दे ।

जुआरी—हम लोग जब दर्दुरक से झगड़ा करते थे तभी यह

भाग गया था ।

माधु—अजी हमने उसकी नाक में घूँसा मारा था । सो उसकी नाक फूट गई थी, चलो लोह देखते हुए चलो ।

जुआरी—वह वसन्तसेना के घर में घुस गया है ।

माधुर—तो अब मोहरें मिल गईं ।

जुआरी—चलो कीतवाली में चल कर कह दें ।

माधु—यहीं खड़े रहो जब वह निकल कर और कहीं जाना चाहेगा तब घेर कर पकड़ लेंगे ।

( वसन्तसेना मदनिका को इशारा करती है )

मद—आप कौन हैं, कहां से आते हैं, किसके लड़के हैं, कौन उद्यम करते हैं, किसका डर है ।

सधा—वाई जी सुनिये, मेरा जन्म पटने में हुआ था, एक भलेमानुस का लड़का हूँ, अब भलेमानुसों के हाथ पाँच दवा कर पेट पालता हूँ ।

वसन्त—आपने बहुत अच्छी कला सीखी है ।

सधा—जी, पहले तो कला समझ के सीखी थी, अब उसी से रोटी मिलती है ।

बहुत उदास होकर बोलते हैं, तो फिर ?

—मैं जब अपने घर ही में था तो लोगों से सुन सुन कर देस देखने को यहाँ आया । यहाँ उज्जैनी में आकर

मद—उसी के लिये हमारी वाई जी ने यह कड़ा भेजा है, नहीं नहीं, मैं भूल गई उर्हीं ने भेजा है ।

माधु—( हर्ष से लेकर ) घरी तुम जाकर उनसे कहो कि तुम्हारी मातवरी हो गई, आओ फिर जुआ खेलें ।

मद—( बसन्तसेना के आगे जाकर ) वाई जी ! सभिक और जुआरी दोनों खुश होकर चले गये ।

बसन्त—तो आप भी जाइये, आपके भाईवन्द घबरा रहे होंगे ।

सवा—वाई जी, आप कृपा करें तो मैं इस कला से आप ही की सेवा किया करूँ ।

बसन्त—आपने जिनके लिये यह कला मीखी थी और जिनके साथ आप इतने दिन रहे उर्हीं के पास जाइये ।

सवा—( आपही आप ) इन्होंने कैसी चतुराई से बहुत ठीक जवाब दिया । अब इनके साथ मैं कौन सा उपकार करूँ जिससे उरिन हो जाऊँ । ( प्रकाश ) वाई जी ! इस जुप की दुर्गति से मैं बहुत घबरा गया अब मैं बौद्धसन्यासी हो जाऊँगा । जब कभी घौसग पड़े तो आप न भूलियेगा कि जुआरी सवाहक बौद्धसन्यासी हो गया ।

बसन्त—ऐसा साहस न कीजियेगा ।

सवा—मैंने अपना मन पक्का कर लिया है ।

जेजा पति उतराई मोरि यह जूआ घीच घजार ।

सिर मुँडाय अब छाडि भय करिहो तहाँहिँ बिहार ।

( परदे के पीछे हल्ला होना है )

सवा—( सुनकर ) अरे यह क्या हुआ ? ( आकाश में ) “क्या कहते हो, बसन्तसेना का खुटमोटक दुष्ट हाथी खुना फिर रहा है” तो चलके वाई जी के मतवाले हाथी को देखू । अहँ, अब जो निश्चय किया है उसे चलकर करूँ । ( बाहर जाता है )

( घबराया हुआ धिक्कट रूप में उजला दुपट्टा ओढ़े कर्णपूरक आता है )



वसन्त—( आसन पर बैठ कर ) आपका धनी कौन है ?

सुव—सज्जन धन सतकार है धन बहुतन के होइ ।

पूजन ममुक्त है सोई पूजा जानत जोइ ॥

वसन्त—कहिये फिर क्या हुआ ?

सुव—उन्होंने मुझे चाकर रख लिया था । जब उनके धन न रहा तब मैं जुआ खेजने लगा । आज अपने अभाग से दस मोहर हार गया ।

माधु—अरे ठग गये ! लुट गए !

सुव—यही सभिक जुआरी मुक्तको हूँ रह रहे हैं, इतनी बात है ।

वसन्त—अरी ! पेड़ सूख जाने से पछी इधर उधर भटकते फिरते हैं । दोनों जुआरियों के पास जा और कह दे कि यह सोने का कड़ा तुमको भेजा है ।

( इतना कहकर अपने हाथ का कड़ा उतार कर मदनिका को दे देती है )

मद—( कड़ा लेकर ) बहुत अच्छा । ( घर से बाहर जाती है )

माधु—अरे ठग गये ! लुट गये !

मद—ये लोग ऊपर देखते हैं और लम्बी लम्बी साँसें ल रहे हैं और लिङ्की की ओर ताक रहे हैं इससे मैं समझती हूँ कि सभिक और जुआरी यही हैं । ( उनके पास जाकर ) आर्य, प्रणाम ।

माधु—अच्छी रहे ।

मद—आप लोगों में से सभिक कौन है ?

माधु—अरी सुदरी कौन तू देखति तिरछे नैन ।

कटे ओंठ दिखराय के बोलति मीटे वैन ॥

पास धन नहीं है तुम और किसी को हूँ दे ।

—आप कैसे जुआरी हैं जो ऐसा कहते हैं आपका कोई दा है ?

वसन्त—तूने बहुत अच्छा किया । फिर क्या हुआ ?

कर्ण—तब तो सारी उज्जैनी घोसी नाथ की नाई हिल उठी और सब कहने लगे, घाह रे कर्णपूरक घाह ! उस समय एक भले मानुस घड़ी खड़े थे उन्होंने जहाँ जहाँ गहने पहने जाते हैं सब सूना देख कर साँस लेकर यह चादर मेरे ऊपर फेंक दी ।

वसन्त—कर्णपूरक, देख तो यह चादर चमेली के फूजों से बसी तो नहीं है ।

कर्ण—मेने तो आज इतना मद पिया है कि उमकी गन्ध से चादर की सुगंध नहीं जान पड़ती ।

वसन्त—देख तो कहीं नाम है ।

कर्ण—यह नाम है, आप बाँच लें ( चादर उतार के देता है )

वसन्त—चारुदत्त—( इतना पढ़ कर चादर छोड़ लेती है )

मद—कर्णपूरक ! घाई जी को चादर कैसी अच्छी लगती है ।

कर्ण—हाँ अच्छी तो लगती है ।

वसन्त—कर्णपूरक, यह ले अपना इनाम । ( उसे एक अँगूठी देती है ) ।

कर्ण—( अँगूठी लेकर मत्थे से लगा कर ) अब चादर आपको बहुत अच्छी लगती है ।

वसन्त—चारुदत्त जी कहाँ है ?

कर्ण—इधर ही से घर को लौट जा रहे हैं ।

वसन्त—अरी तो चल अटारी पर चढ़ कर चारुदत्तनी को देखें । ( सब बाहर जाते हैं )

[ स्थान—चारुदत्त के घर के भीतर और बाहर ]

तीसरा अङ्क

( यत्नमानक आता है )

## मृच्छकटिकभाषा

कर्ण—कहाँ है, घाई जी कहाँ है ?

मद—तू सिड़ी हो गया है, क्यों इतना घबरा रहा है ? घाई जी  
 तामने बेठी हैं देरता नहीं ।

कर्ण—( देखकर हाथ जोड़कर ) प्रणाम ।

वसन्त—तू बड़ा खुश जान पड़ता है, क्या हुआ ?

कर्ण—( अचरज से ) घाई जी आज आपने कुछ न देखा तो  
 परी घहादुरी न देखी ।

वसन्त—न्या, क्या, कहे तो ।

कर्ण—सुनिये, वह जो आपका खुटमोटक हाथी है वह खूँट  
 तोड़ महाघत को मार बड़ा गडबड़ मचाता हुआ सडक पर पहुँचा  
 तब तो सब लोग चिक्लाने लगे, देखते नहीं

घालक वेगि हटाउ विगड़ा गज आवत हतै ।

बख अटा बड़ि जाव भागो अपने प्राण ले ॥

श्रौर  
 टूटत है मनि करधनी छूटत नूपुर पायँ ।

सुन्दर रतनन तें जड़े कगनहँ गिरि जायँ ॥

तब तो दुष्ट हाथी अपने सुँड़ पाँव और दाँतों से कमल भरे  
 तलाव की नाई सारी उज्जनी को मथकर एक सन्यासी के पास  
 पहुँचा । उसका दड कमडल तोड़ उसके मुँह पर पानी छिड़ककर  
 उसे अपने दाँतों के बीच में उठा लिया । तब तो सब चिक्लाने लगे  
 ' मरा, सन्यासी मरा ' ।

वसन्त—( घबराकर ) हाय, हाय बहुत घुरा हुआ ।

कर्ण—घबराइये नहीं, सुनती जाइये, मैंने जो देखा कि यह  
 अपनी मोटी मोटी साँकरें तोड़ कर दाँतों के बीच सन्यासी को  
 उठाये हुए है तो मुझ कर्णपूरक, नहीं आपके जूठन के पले हुए  
 दास ने, जुए के खेल को जात से मार जोहे का एक मोटा डडा  
 लेकर हाथी को जलकारा ।

वसन्त—तब फिर ?

कर्ण—विंध्याचल घोटी सरिस गज को मारि हटाय ।

ताके दाँतन बीच सन जागी जियो छुडाय ॥

झुके कान मनहूँ द्रव्यो, कहँ लगि करौं बखान ।

रही सो रेभिल देह में मानहु प्रिया समान ॥

मीठा सुरीली गान मिलि मोह घोल के मग घीन के ।

पुनि स्वर चढ़ाव उतार गुञ्जत भुड मनहु अलीन के ॥

स्वर मूर्खना महँ चढ़त होत विराम धुनि पुनि मृदु भई ।

एक राग दोहरा बजत लीला सहित यति रोकी गई ॥

भयो बध कव गान, आये पती दूर चलि ।

तान भरे हैं कान अग्रहँ सोई सुनि परे ॥

मैत्रे—अजी, गली में तो इस वर कुत्ते भी सुख से सो रहे हैं,

बलो घर चलें ( आगे देखकर ) देखिये, देखिये, अंधेरे का भी

प्रकाश देते हुए आकाश की अटारी में चन्द्रमा उतर रहे हैं,

चारु—तुमने बहुत ठीक कहा ।

बूडत तम कहँ राह दै कोटि उठाये चन्ड ।

मनहु निकासे दांत कछु जल महँ धुसी गयद ॥

मैत्रे—अजी यही तो है घर । बद्धमानक ! बद्धमानक !

किष्काद खोल ।

बद्ध—( भीतर से ) मैत्रेय जी की घोली सुन पड़ती है तो

वारुदत्त जी आ गये । किष्काद खोल दूँ ( किष्काद खोल कर )

पालागन ! मैत्रेय जी तुम्हारे भी पालागन ! पलंग जिद्धे हैं । आप

जोग बंधें ।

( दोनों घर में आकर बैठते हैं )

मैत्रे—बद्धमानक, रदनिका को पुकार दे, पाँव धो जाय ।

चारु—क्यों सोते को जगाते हो ?

बद्ध—मैत्रेय जी में पानी डालता हूँ आप पाँव धो दीजिए ।

मैत्रे—( क्रोध से ) देखते हो यह जोड़ी का घना पानी डालोगे

और हम घाग्हन हैं हमसे पाँव धोने को कहता है ।

चारु—तुम्हीं पानी ले ला, बद्धमानक पाँव धो देगा ।

बद्ध—मैत्रेय जी, पानी डालिए ।

बद्ध—मालिक भला गरीब हू मानै सेवक जोह ।  
 खल गकर धनका करै अंत सवै नहिं सोह ॥  
 जगी वान की चाट जेहि वर्ध न हाँको जात ।  
 फँसो और की नारि से सुनै कौन की बात ?  
 परी जुआ की चाट जेहि तेहि को सकै हटाय ?  
 जो सुभाष को दोष है तेहि को सकै मिटाय ?

बड़ी देर हुई । चारदत्त जो गाना सुनने गये अभी तक नहीं लौटे, आधी रात हो गई । अब मैं ज्योड़ी में पढ़कर सोऊँ ( किवाड धन्द करके मो जाता है )

( चारदत्त और मैत्रेय आते हैं )

चारु—घाह, रेभिल ने कैसा अच्छा गाया और कैसा सुन्दर बजाया । वीना भी समुद्र से नहीं निकली तो क्या, एक रत ही है ! उतकण्ठित के मन को समि सी यह धीरज है समुष्मावती है । जब आघत वेर लगाघत मीत संकेत मनें बहलावती है । जन व्याकुल हैं जो वियोग में भूष तिन्हें यह धीर करावती है । हिय नेह को अंकुर जामो है जो रस सौच के ताहि बढावती है ॥  
 मैत्रे—चलिए घर में चलें ।

चारु—घाह रेभिल ने कैसा अच्छा गाया ।

मैत्रे—हमसे जो पूछिये तो हमें तो जब खी संस्कृत पढ़ती है या मर्द काकली गाता है तो बड़ी हँसी आती है । खी जो संस्कृत पढ़ने लगती है तो नई व्याई गाय की नाई सू सू करती है और जय मर्द काकली गाने लगता है तो सूखे फूलों की माला पहिने बूढे पुरोहित पेसा मत्र जपता जान पडता है ।

चारु—भाई रेभिल ने बहुत अच्छा गाया, - क्यों भाई अच्छा ?

एक एक स्वर सुनि परत ललित भाष के संग ।  
 मधुर मनोहर गान सोह सुन्दर सम सब अंग ॥

सरकत चलो घसत निज अङ्गा ।

कँचुत छोड़त मनहुँ भुजङ्गा ॥

( आकाश की ओर देखा कर ) अरे, क्या चन्द्रमा डूब रहे हैं ?

करें पाहक मोहि जखि शका ।

धीर महलफोड़न महुँ यका ॥

घन अधेर सन जगहि द्विपावति ।

रैन नाय सी मोहि अंग जावति ॥

कुलवारी में सेंध जगा के यहाँ पहुँचा, अथ इस केठे में सेंध लगाऊँ

चेरो के काम को नीच कई सय घात जगे नर सोवत पाई ।

देखै घोखा हरी परके धन चोरी सो कायर रीति कहाई ।

नाम बुरो पै अधोन न काहूँ के चोरो भली न भली सेवकाई ॥

द्रोण के पुत्र युधिष्ठिर मेन के मारन के हित सेंध लगाई

भीगी है कहुँ भीति जहँ खोदत शब्द न होय ।

कौन ठाय जहँ आड़ में सेंध न देखै कोय ॥

गलो भीति जोना जगी है पतरी कहि ठाम ।

सौँहैं जहाँ न तिय परै सिद्ध होय सब काम ॥

तो कहाँ से सेंध फोड़ूँ ( भीत को छूकर ) नित सूर्यनारायण

के अर्घ का पानी पडते पडते यहाँ की मिट्टी खुद सी गई है और

चूहों ने भी यहाँ कुत्र खोद डाला है; अथ हमारा काम सिद्ध

होगया । स्कन्ददेवता के पुत्रों की सिद्धि का पहिला लच्छन यही

है । तो अथ वैसी सेंध फोड़ूँ, कनकशक्ति जो ने चार रीतियाँ सेंध

खोदने की कही हैं—पक्की ईंटों को खींच लेना, कच्ची को काट

देना, गोदे को भिगा देना और काठ को काट डालना । तो यहाँ

भीत है एक ईंट हटाऊँ ।

खिले कमलसम कूप सरसि नवचन्द्र अकारा ।

स्वस्तिक पूरनकुम्भ सूर्य सम सन्धिप्रकारा ॥

सैंधि में प्रकट करौँ अपनो चतुराई ।

देखि जेहि चकित होयँ सब लोग लुगाई ॥

( मैत्रेय पानी डालता है और वर्द्धमानक चारुदत्त के पाँव धोव  
( अलग राड़ा हो जाता है )

चारु—अजी ब्राह्मण देवता के पाँव भी धो दो ।

मैत्रे—अजी हमारा पाँव बोके फ्या होगा हम तो मारे ग  
की नाई फिर लोट्टेहींगे ।

वर्द्ध—मैत्रेय जी आप तो चाम्हन हैं ।

मैत्रेय—अरे जैसे साँपों में डोंडहा होता है वैसे ही हम चाम्हने  
में चाम्हन हैं ।

वर्द्ध—मैत्रेय जी, लाइये आपने भी पाँव धो डू । (मैत्रेय के पाँ  
धोता है ) मैत्रेय जी मैंने गहनो का डिब्बा दिन भर रखाया, अ  
रात को आप इसकी रखवारी कीजिये ( मैत्रेय को डिब्बा देकर  
बाहर जाता है ) ।

मैत्रे—( डिब्बा लेकर ) अरे, अभी यहाँ है ! क्या उज्जैनी में  
चार भी नहीं हैं जो इस नौद के चार को चुरा ले जायँ, भाई मैं ते  
भीतर जाता हूँ ।

चारु—यह भूपन हैं पातुर कर ।

ले न जाहु यह घर महँ मेरे ॥

धरो मित्र आपहि तुम पही ।

जोएो मे साँपो नहि तेहीं ॥

( सोने का भाव बताता है )

मैत्रे—फ्या आपको नौद आ रही है ?

सिर मे उतरि आँखि महँ आवत ।

आलस सारे तन पर ज्ञायत ॥

अलख रूप जनु चपल बुढ़ाई ।

आवत नर पर तेज नसाई ॥

सायें ।

( किषाड़ बन्द करके सो जाता है )

( शर्बिलरू आता है )

शर्बि—बल विद्या दोड सग लगाई ।

तन प्रमान निज सँघ बनाई ॥

( इधर उधर देख कर पानी का लोटा उठा लेता है और पानी छिड़क कर डरता हुआ ) धरे, पानी गिरने से लोग चौक न पड़ें तो किषाह उतार लूँ ( पीठ के सहारे मे पल्ला उतार लेता है )  
 अथ इन्हे देखूँ सत्रमुच सो रहे हैं या झूठ मूठ ( देख कर ) वेधड़क सो रहे हैं, देखो,

चलत बराबर साँस नहीं शका कहूँ लागै ।

मुँदी आखि नहिँ सिथिलभाष पुतरी निज त्यागै ॥

ढोलो परी शरीर कहूँक शय्या के बाहर ।

दीप मई नहिँ सौह करे सोधत द्रज जो नर ॥

( चारों ओर देख कर ) यह ढोल रखी है, यह मृदङ्ग है, यह घीना है, यह बाँसुरी है, यह पोथियाँ हैं । क्या नाटकवाले का घर है ? हम तो बड़ा घर देख के घुसे थे, यह तो महादरिद्री है, येना तो नहीं कि राजा और चोर के मारे घन धरती में गाड़े हो । मेरे भी तो धरती में गड़ा है । ( धीज फेंकता है ) धीज फेंकने से कुछ नहीं जान पड़ता, यह महादरिद्री है, चलें निकल चलें ।

मैत्रे—( सपने में बोलता है ) भाई, सेंध जगी है, चोर भी देख पड़ता है, यह डिन्वा आप ले लीजिए ।

शर्वि—क्या मुझे आया जान यह दरिद्री मेरी हँसी कर रहा है, तौ इसे मार डालूँ । यह सपना देव रहा है ( देख कर ) अरे फटी धोती में सत्रमुच गहने का डिन्वा झलक रहा है, तौ अथ इसे लेलूँ । इसकी भी मेरी सी दशा जान पड़ती है, जाने दो क्या किसी भले मानुस को सतावें ।

मैत्रे—भाई, तुम्हें गाय और घाम्दन की सौह है जो तुम डिन्वा न लो ।

शर्वि—भाई गौ घाम्दन की सौह तो माननी चाहिये तो इसे लेही जो । दिया बर रहा है मेरे पास दिया घुम्काने का कीड़ा भी तो है तो उसी को देाड़ दूँ इसी का अथसर है ( कीड़ा



जय भगवान कार्तिकेय की ! जय कनकशक्तिजी की ! ब्राह्मण  
देव की जय ! जय भार्गवरत्न की और जय गुरु योगाचार्य की  
की जिन्होंने प्रसन्न होकर मुझे योगरचना सिखाई थी ।

जखै न चौकीदार यहि के प्रबल प्रभाव से ।  
तन लागे हथियार कटै न पीरा होय कछु ॥

( सेंध फोड़ने को वैठता है ) अरे, नापने का डेरा भूल आया  
( सोच कर ) क्या हुआ, जनेऊ तो है, इसी से नाप लेंगे, जनेऊ  
भी ब्राह्मणों के बड़े काम का होता है और विशेष करके हम  
पैसों का,

नापि सकै यह सेंधप्रमाना ।  
यही उतारत भूपन नाना ॥  
साँकर खोजत, डसत भुजगा ।  
रोकत विष यह बाँधत अगा ॥

( नाप के ) अब लगा लगाऊँ ( सेंध फोड़ता है ) अब सेंध  
में एक ईंट और रह गई । हाय, हाय, साँप ने काट लिया ( जनेऊ  
से उँगली बाँध कर विष का चढ़ना जनाता है और औषधि बाँध  
लेता है ) अब तो नहीं पिराता ( फिर खोद कर देख कर ) अरे  
दिया जल रहा है ।

घन अंधेर महुँ सेंध से निसरति दीपकजोति ।

खिंची कसौटी पै मनौ सोनरेख सो होति ॥

( फिर देख कर ) सेंध तो पूरी होगई, तो भीतर चखूँ य  
पहले देखूँ कोई है तो नहीं ( देख कर ) जय कार्तिकेय की ।  
( घुसता है )

[ स्थान दूसरा—चारदत्त के घर के भीतर ]

( शरियलक सेंध से निकल कर आता है )

शरिय—अरे, दो जने सो रहे हैं, तो किबाड़ खोलदूँ जिस  
को राह रहे । अरे घर ऐसा जजल हो रहा है कि किबा  
करता है । तो पानी ढूँ । पानी कहाँ मिलेगा

सकट में डुडुम, तुरग हैं सुयज्ञ पर ।

जल बीच नाथ, रात दीपकह हम हैं ।

गिर सम धिर, भागन भुजग, भूपटन में हम वाज ।

पकरन वृक, इतउत लखन गण, बल महँ मृगराज ॥ ।

( रदनिका आती है )

रद—हाय, हाय, ड्योढ़ी पर वर्द्धमानक सोता था सो भी नहीं देख पलता, कहाँ गया । तो अथ मैत्रेय को पुकारूँ । ( आगे चलती है )

शर्वि—( रदनिका को मारना चाहता है ) अरे स्त्री है, तो भाग चलूँ । ( बाहर जाता है )

रद—( डरती हुई ) हाय, हाय, घर में सेंध फूट गई चोर भाग गया, मैत्रेय को जगाऊँ ( मैत्रेय के पास जाकर ) मैत्रेय जी उठो उठो ! घर में सेंध फोड़ के चोर भाग गया ।

मैत्रे—अरी लौंडी क्या बकती है ! चोर फोड़ के सेंध भाग गई ।

रद—क्या बकते हो, देखते नहीं ।

मैत्रे—अरी लौंडी क्या बकती है ? ये केवाड़ किसने उतारे ?

अरे भाई चारुदत्त जी उठिए उठिए, घर में सेंध फोड़ कर चोर भाग गया ।

चारु—( जाग कर ) भाई क्यों हँसी करते हो ?

मैत्रे—अरे भाई हँसी नहीं है देख लीजिए ।

चारु—कहाँ ?

मैत्रे—यह क्या है ।

चारु—( देख कर ) क्या सुन्दर सेंध है ।

ऊपर से इक एक ईंट जखि परे हटाई ।

ऊपर सकरी चौड़ी है कछु घोष बनाई ॥

अति भजोग जन जनु कुमार्त्त सन आषत जानी ।

हरके घस यहि महज केरि छाती विजगानी ॥

मैत्रे—हमारे घर सेंध देना या तो किसी नौनिलखे

मृ०—४

है ) कीड़े ने, देखो, दित्रे के ऊपर उड़ उड़ कर अपने पत्तों की घघार से छँधेरा कर दिया , मैंने भी तो अपने वाग्हन के कुल को छँधेरे में डाल दिया, मेरे बाप चार घेद के पढ़ने वाले दान का पैसा लेने वाले थे, उनका लड़का मैं रडी के लिये चोरी कर रहा हूँ। वाग्हन देवता की बात तो माननी चाहिये ( डिब्बा ले लेता है )

मैत्रे—आपका हाथ ठडा है ।

शर्वि—अरे, पानी छूने से मेरा हाथ ठडा हो गया है तो इसे काँख में दबा कर गरम कर लूँ ( थाँयें हाथ को गरम करके डिब्बा ले लेता है ।

मैत्रे—क्यों भाई ले लिया ?

शर्वि—वाग्हन की बात कौन न मानेगा, ले लिया ।

मैत्रे—तो अब दुकान बँच कर बनिये की नाई सोऊँगा ।

शर्वि—अजी ! तुम सौ बरस सोओ । हाथ मैंने मदनिका रंडी के लिये वाग्हन के कुल पर कलक लगाया, कुल के क्या लगा अपने लगा ।

दारिद्र तोहि धिक्कार तू सब कुछ मनै कराय ।

करत जात सो काज नर मन सन निन्दत जाय ॥

तो मदनिका को छुड़ाने के लिये बसन्तसेना के घर चले ( देख कर ) अरे, किसी के पाँव की आहट जान पड़ती है पहरेवाला तो नहीं आ रहा है ! चुपचाप खभे की नाई खड़ा जाऊँ । ओर पहरेवाले भी शर्विलक का क्या कर सकते हैं ।

ऋषटा के मारन में चीन्ह के समान हम

जल्दी जल्दी भागने में मृग से न कम हैं ।

सोये जागे चीन्ह लेत कूकुर की नाई नित

बिल्ली के से पाँय मेरे चलत नरम हैं ।

मायारूप धारन में साँप से हैं सर्कन में

देश भाषा जानन में धानी के सम हैं ।

मैत्रे—उठिए, उठिए, जो घाती को चोर ले गया तो आप क्यों घबरा गये ?

चारु—( साँस लेकर ) भाई ।

दोप जगै हैं मोहि सय, को माने सच बात ।

बिना तेज दारिद्र पै सबै, दोप फबि जात ॥

हाय, हाय, मेरे धन के हरन को चाह दैव जो कीन्ह ।

तो अब काह विचारि कै पापी अपजस दीन्ह ॥

मैत्रे—हम बात बना लेंगे किसने लिया, किसने दिया, कौन साखी है ।

चारु—अरे तुम यह जानते हो, क्या हम कमी मूँठ धोलेंगे ?

करि हो यातो देन को भीखहु मांगि उपाय ।

मूँठ क्यों नहि धोलिहो जेहि से धर्म नसाय ॥

रद—अब इसे जाके धाई जो से कहँ । ( याहर जाती है )

[ स्थान दूसरा—चारुदत्त के घर के भीतर दूसरी जगह ]

( चारुदत्त की स्त्री धूता बैठी है, रदनिका आती है )

धूता—( घबरा कर ) अरी आर्यपुत्र को या मैत्रेय जी को चोट तो नहीं आई ।

रद—जो चोट तो किसी को नहीं आई, पर जो गहने पातुर छोड़ गई थी उन्हें चोर ले गया ( धूता प्रसन्न हो जाती है )

रद—उठिए ।

धूता—( साँस लेकर ) अरी क्या कहती है कि उन्हें चोट नहीं आई । अरी हाथ पैर कट गये होते तो कुछ धुरा न था, इस से तो उन पर कलंक लग जायगा, सारी उज्जैनी के लोग यही कहेंगे कि चारुदत्त ने धन के जालब में पेसा काम किया । ( ऊपर देख कर साँस लेकर ) भगवान ! तुम हम लोगों को पुरहन के पत्ते पर पानी की बूँद का भाँति क्या नचा रहे,

काम है या कोई नगर में आया है, नहीं तो सारी उज्जैनी कौन नहीं जानता कि हमारे कुछ नहीं है।

चारु—परदेशी अभ्यास करत कौऊ सेंध जगाई।

जान्यो नहि बिनधन सोने सब सोच बिहाई ॥

पहिले कीन्हीं आस देखि यह महल महाना।

सेंध फोरि बहुधेरि अवसि घपुरा पड़िताना ॥

यह पिचारा अपने साथियो में जाकर कहैगा कि हम चौघरा के लड़के के घर गये वहाँ कुछ न मिला।

मैत्रे—आप भी चार के लिये सोच करते हैं। उसने देखा होगा कि यह बड़ा भारी घर है इसमें हीरा मोती का डिब्बा या सोने के गहनों का डिब्बा पाऊँगा। (सोच कर दुख से आपही आप) गहनों का डिब्बा कहाँ है? (फिर सोच कर प्रकाश) भाई, तुम सदा कहते थे कि मैत्रेय मूर्ख है, हम ने कैसे अच्छा किया जो गहनों का डिब्बा तुम को दे दिया नहीं तो वापसी ली जाती।

चारु—अजी क्या हँसी करते हो?

मैत्रे—क्या हम पेसे निरे मूर्ख हैं जो हम हँसी का औस नहीं जानते।

चारु—तुम ने कब दिया?

मैत्रे—जब हमने तुमसे कहा था कि तुम्हारा हाथ ठढा है।

चारु—कदाचित् दिया हो (चारो ओर हँड कर) भाई बहुत अच्छी बात हुई।

मैत्रे—क्या बच गया?

चारु—नहीं चार ले गया।

मैत्रे—इसमें कौन अच्छी बात हुई?

चारु—चार हमारे घर से निरास नहीं गया।

मैत्रे—अजी यह तो पराई धाती थी।

चारु—अरे! (बेसुध होकर गिर पड़ता है)

तुम हित सुख दुःख मांहि, नारि दजाअनुकूल है ।

सांचहुँ छूटो नाहि, दारिद में नहि सुलभ जो ॥

मैत्रेय जी ! सवेरा होने चाहता है, द्वार लेकर बसन्तसेना के पास जाओ और उसमें हमारी ओर से वह कहना कि हम अपना समझ के गहने का डिंघा जुए में द्वार गए, उसके बदले यह द्वार ले लीजिये ।

मैत्रे—घाप । ऐसे महँगे रत्नों का यह द्वार ऐसे डिब्बे के कारण क्यों दे रहे हैं जिसे किसी ने लाया न पहिना और चोर ले गया ।

चारु—भाई ऐसी बात न कहो ।

दीन्हे भूपन सौंपि सो करि हम पर विश्वास ।

तेहीं सो हम द्वार दै गुह्यता करत प्रकाम ॥

भाई तुम्हें हमारे सिर की सौ है बिना दिये न लौटना । धर्मानक,

भरौ त्रेणि यहि सँघ को पही ईट लगाय ।

सँघ लगे को दोष यह घर जेहि सन मिट जाय ॥

भाई मैत्रेय ! तुम भी वहाँ लुब्धता छोड़ कर उदार बन जाना ।

मैत्रे—अरे कगाल कैसे उदार की बातें करेगा ?

चारु—अजी हम कगाल नहीं हैं ।

'तुम हित सुख'—इत्यादि फिर से पढ़ता है ।

तुम जाओ, हम भी हाथ मुँह बोकुर सव्या करेंगे ।

( सब बाहर जाते हैं )

## चौथा अंक

( पहिला स्थान—बसन्तसेना का घर )

( चैरी आती है )

चैरी—अम्मा ने मुझे बाई जी के पास भेजा है । बाई जी यह बड़ी चित्र देखती जाती हैं और मदनिका से कुछ कह रही हैं । तो मैं भी उनके पास चलूँ ।

( बाहर जाती )

हो ? मेरे पास मैत्रे की एक माला बची है उसे भी धार्यपुत्र अपना भलमसी से न लेंगे । अरी मैत्रेय जी को बुला तो ला ।

रद—बहुत अच्छा । ( मैत्रेय के पास जाकर ) मैत्रेय जी धार्य जी बुलाती हैं ।

मैत्रे—कहाँ हैं ?

रद—वह क्या हैं ।

मैत्रे—( आगे बढ़ कर ) जय हो आप की !

धूता—आइये प्रणाम, हमारी ओर मुँह कीजिये ।

मैत्रे—लीजिये मैंने आप की ओर मुँह कर लिया ।

धूता—इसे लीजिए ( माला देती है ) ।

मैत्रे—यह क्या है ?

धूता—मैं रत्नलुठ उपासी थी उस में वाग्धन का जितना हो सकै दान देना चाहिये, उस दिन मैंने कुछ नहीं दिया था इसी से आज यह हार देती हूँ ।

मैत्रे—( हार लेकर ) आपका भला हो, मैं जाकर चाक्षुष जी को दिलाऊँ ।

धूता—मैत्रेय जी मुझे क्या लगते हो ? ( बाहर जाती है )

मैत्रे—घाह घाह कैसी उदार है !

चारु—मैत्रेय—क्या कर रहे हैं, बड़ी देर हो गई है ; पेसा हो कि घघराहट में कुछ अनर्थ कर बैठें । मैत्रेय ! मैत्रेय !

मैत्रे—( आगे बढ़कर ) कहिये, लीजिये, ( हार दिखलाता है )

चारु—यह क्या है ?

मैत्रे—जैसे आप हैं वैसी ही आपकी स्त्री होने का यही फल है

चारु—हा ! क्या मेरी ब्राह्मणी भी मुझ पर दया करती है

मेरे कंगाल होने में सन्देह नहीं ।

अपना धन सब खोय, तियसम्पत्ति से पति रहो ।

धनहि पुरुष तिय होय, होत धनहि से तिय पुरुष ॥

दरिद्र नहीं हैं ।

घसन्त—तो अम्मा से कह आ जो चाहती हैं कि में जीती रहें  
तो फिर मुझ से कभी ऐसी बात न कहें ।

चेरी—बहुत अच्छा । ( बाहर जाती है )

( शर्विलक आता है )

घिमल रैन महुँ दोष लगाई ॥

नौद जीति पहरु बहिराई ॥

उअत दिनेश होत इप्रिमदा ।

धीते रैन भयो जनु चदा ॥

देखे मोहि प्रबरात चलत जो मग महुँ धाघत ।

कै मोहि ठाढ़े देखि पास मेरे चलि आघत ॥

चढ़े पाप सिर प्राण जात डर जगत सुराई ।

करत आपही पाप आपही नाहि डेराई ॥

मैने मदनिका के लिये पेसा साहस किया ।

चाकर से बतरात एक की आँखि बचाई ।

नारी ही इरु गेह देखि तेहि चलो विहाई ॥

चौखट से है खढ़े देखि पहरे कर फेरा ।

चाज अनेकन चलि कोन्हो कोउ भाति सघेरा ॥

घसन्त—अरी यह पट हमारे पलग पर रख दे और पला  
लेकर जल्दी आ ।

मद—बहुत अच्छा ( पट लेकर बाहर जाती है )

शर्वि—घसन्तसेना का घर यही है, मदनिका को हूँ दे ।

( परना हाथ में लिए मदनिका आती है )

शर्वि—( देखकर ) यही तो है मदनिका ।

जेते गुन यहि सुदरि माहीं ।

ते ते गुन कामहुँ महुँ नाहीं ॥

हैं यहि के सत्र अग अनूपा ।

रति है खड़ी धरे जनु रूपा ॥

यह मोहि जरत काम की जाला ।

करति ठढ चदन सम,



[ दूसरा स्थान—वसन्तसेना के घर का एक कमरा ]

( हाथ में चित्र लिये वसन्तसेना बैठी है, मदनिका खड़ी है )

वसन्त—अरी, मदनिका ! चारुदत्त जी का ठीक चित्र उतरा है।

मद—जी हाँ ठीक है।

वसन्त—तूने कैसे जाना ?

मद—मेने देखा कि आप इसे बड़े ध्यान से देख रही हैं।

वसन्त—अरी मदनिका, धेसघापने की चतुराई से ऐसा कहती है।

मद—बाई जी, क्या वेमघा होने से कोई सच नहीं बोलता !

वसन्त—अरी, वेमघा झूठ न बोलें तो क्या करे, उसका रग के लोगों से काम रहता है।

मद—आप का मन और आपस दोना लग गये उसका आप कारन क्या पूछती हैं ?

वसन्त—अरी, मैं अपनी सहेलियों की हँसी से बचना चाहती हूँ।

मद—बाई जी ! ऐसा न कहिए। सखी सहेलियाँ सब आप ही के मन की करेंगी।

( चेरी आती है )

चेरी—बाई जी ! अम्मा कहती हैं कि चारुदत्त जोड़ लीजिये सिढकी के पास रथ खड़ा है।

वसन्त—क्या चारुदत्त जी बुला रहे हैं ?

चेरी—जी नहीं एक और कोई है उन्होंने दस हजार के गहने भी भेजे हैं।

वसन्त—यह कौन है ?

चेरी—जी, राजा के साले सस्यानक।

( क्रोध से ) चल दूर हो, हमारे सामने ऐसा फिर

—बाईजी, मुझे जमा कीजिए मैं अम्मा के कहने से बाई जी

ऐसा सनेसा ही बुरा लगता है।

मद—अपना शरीर और अपनी भलमसी ।

शर्वि—अरी तू नहीं जानती है साहसही में लक्ष्मी रहती हैं ।

मद—अच्छा तुम भले मानुस ही बने रहे ? कहीं मेरे कारन

साहस करते करते अनरथ तो नहीं कर डाला ?

शर्वि—मूलत हों गहने पहिने सुकुमारि नहीं कोउ फूली जतासी ।

लेत नहीं धन घाम्हन को जो धरो, तिन यह के काज निकासी ।

झीनेा नहीं धन जालचसे कोउ बाल जो गौद खिलावति दासी ।

चोरी के कामहु में मे परौ नित योग अयोग विचार प्रकासी ॥

तो अथ तुम जाके वसन्तसेना जी से कहो ।

मेा पर कृपा दिपाय अपनेहि तन की नाप के ।

पहिरिय इहैं छिपाय ए भूपन कीजिये ग्रहन ॥

मद—शर्विलक ! हम बेसबा हैं । हमारे गहने छिप नहीं

सकते । इस से घन्द डिव्वा देना अच्छा नहीं । खोजो तो देखें इस

में क्या क्या है ?

शर्वि—लो ! ( डरता हुआ डिव्वा देता है )

मद—अरे, यह गहने तो मेरे देखे हैं, कहो तो तुमने कहाँ पाये ?

शर्वि—मदनिका, तुम यह जान कर क्या करोगी ?

मद—( रोप से ) तुम हमें नहीं पतिभ्राते तो हम को छुड़ा के

क्या करोगे ?

शर्वि—अरे, कल मेने चौक में सुना था कि चौधरी के हैं ।

( वसन्तसेना और मदनिका बेसुध होकर गिर पडती है )

शर्वि—उठो मदनिका, क्या है ?

छूटत तेरो दासपन, तू दुप से घवराति ।

कौपति चितवति हैं रूही, हम पर तरस न खाति ॥

मद—( साँस लेकर ) अरे, मेरे कारन तुम ने अकाज तो

किया, उस घर मे किसी को मारा तो नहीं ?

शर्वि—मदनिका ! डरे या सोये को शर्विलक न मारेगा, वहाँ

न मैंने किसी को मारा है न घायल किया है ।

मद—( देपकर ) अरे शर्विलक, अच्छे घाये, कहो क्या है ?  
शर्वि—कईगे । ( दोनो एक दूसरे को बड़े अनुराग से देखते हैं )

वसन्त—क्या कर रही है मदनिका ? कहां चली गई ?  
( खिड़की से झांक कर ) अरे यह तो किसी मर्द से बात कर रही है और उमे उड़े ध्यान से टकटकी घांघे देख रही है । हो न हो यह इसे छुड़ाने आया है तो इन दोनों को छेड़ना न चाहिए ; न पुकारूंगी ।

मद—शर्विलक, कहो ।

शर्वि—( डरता हुआ चारो ओर देखता है )

मद—शर्विलक, क्यों डरते से हो ।

शर्वि—कुछ चुपके से कहना है, कोई है तो नहीं ।

मद—कोई नहीं है ।

वसन्त—( आप ही आप ) क्या कोई छिपी बात है ? तो न सुनूँ ।

शर्वि—मदनिका ! भला वसन्तसेना तुम्हें कुछ लेके छोड़ देंगी ?

वसन्त—( आप ही आप ) क्या कुछ मेरी ही बात कर रहे हैं ? तो इस खिड़की की ओट हो कर सुनूँ ।

मद—मैंने वार्ह जी से कहा था तो वार्ह जी बोलों हमारी चले तो हम अपनी बेरियाँ छोड़ दें । तुम तो बताओ तुमने इतना धन कहां पाया जो मुझे वार्ह जी से छुड़ाओगे ?

शर्वि—पाय सको तब नेह में धन न और कोठ भांति ।

कोन्हो तेरे काज में साहस पिड़ली राति ॥

वसन्त—( आप ही आप ) रूप तो इस का बहुत अच्छा है साहस कैसे किया ?

—शर्विलक, तुमने लुगाई के कारन अपने दोनो ससौ

क्या, क्या ?

खी तो सदा की चचल होती हैं और  
मन में चाहें और को कर और दिसि नैन ।  
डारें मंद शोउ और पै करें और संग सैन ॥

किसी ने बहुत ठीक कहा है—

गदहा करै न ह्य कर काम ।  
परधत पर सेरोज कब जाम ॥  
जब बोये उपजे नहि धान ।  
रहै न शुचि पातुरसतान ॥

अरे पापी चारुदत्त रह, अब तू नहीं बच सकता ( इतना कह कर दो चार पग चलता है ) ।

मद—( आँचल पकड़ कर ) क्या बैठकाने की धातें कर रहे हो ? तुम नाटक विगड़ते हो ।

शर्वि—न्यों ?

मद—गहने धाँई जो के हैं ।

शर्वि—तो फिर ?

मद—चारुदत्त के घर छोड़ धाँई धों ।

शर्वि—क्यो ?

मद—( कान में कहती है ) ।

शर्वि—( घबड़ा कर ) ?

कठिन घाम से जलत तन जासु सरन मैं लीन्ह ।

बिना पात को रुख मोह में अनजाने कीन्ह ॥

यसत—( आप ही आप ) यह भी पढ़िना रहा है, तो हो न हो इस्ते घेजाने यह काम किया ।

शर्वि—मदनिका, अब क्या करें ?

मद—तुम्ही जानो ।

शर्वि—मेरी बुद्धि काम नहीं करती ।

होह स्वभाषदिते सदा नारी चतुर प्रथीन ।

पुरुषन की है चतुरई विद्या के आधीन ॥

मट—मन्त्र ?

शर्दि—हां सच ।

वसन्त—ब्रस, घड़ी घात हुई ।

मट—बहुत अच्छा हुआ ।

शर्दि—( ईर्ष्या से ) मदनिका ! तुम्हारी घात हमारी में नहीं आती ।

शुद्ध शील आचार रहे पुरखा सब मेरे ।

करत नीच यह काम नेह वस केवल तेरे ॥

नसी काम धन बुद्धि मान अपना मैं राखत ।

दूधौरन सों मिलति मित्र मुख से मोहि भाखत ॥

राँचि लेत जब धन सकल छुवें न पुरुष बहोरि ।

तजें महाडर के सरिस पातुर रग निचेरि ॥

( सोच कर ) सरवस धन फल वे जैसे तरवरपुरुष कुलोन ।

पातुर चिड़ियन के भखे होत पंशफलहीन ॥

मेज प्रीति इन्धन परम कठिन काम की, ज्वाल ।

धन जोवन जहँ नरन के भसम हात ततकाल ॥

वसन्त—( आप ही आप मुसुकरा कर ) अरे, यह बृथा घबरा रहा है ।

शर्दि—रहै सिंधु की जहर सम चंचल नारि सुभाष ।

साँझ समय के मेघ सम इरु द्वित राग दिखाव ॥

बहुत न फँसिये तियन सग निदरें फँसे सयानि ।

जो मानै तेहि सँग रहै तजिये निदरत जानि ॥

किसी ने ठीक कहा है—

रोषेँ हँसै सदा धन के हित ।

नरहि बिसासि देई धोखा नित ॥

चातुर तजै पातुरी कैसे ?

जन मसान के फूलन जैसे ॥

महामूढ़ ते लोग जो श्रिय तिय को पतिआयें ।  
तिय अरु श्रिय नागिनि सरिस मटकत सटकत जायें ॥

मद—बाईंजी, क्या मैं अपने घर के लोग भी नहीं पहचानती ।

वसन्त—( आपही आप सिर हिलाकर हँस कर ) ठीक है,

( प्रकाश ) अच्छा बुला जा ।

मद—बहुत अच्छा ( शर्षिलक के पास जाकर ) आओ जी शर्षिलक ।

शर्षि—( वसन्तलेना के पास जाकर ) जय हो आप की !

वसन्त—आइए, पालागन, बैठिये ।

शर्षि—चौधरी ने आपसे यह बिनती की है कि हमारा घर आज कल जजल हो रहा है, डिब्बे की रखवाली बड़ी कठिन है इसे आप लीजिये । ( दिव्या मदनिका को देखकर जाना चाहता है )

वसन्त—तो मेरा भी जघाय लेते जाइ ।

शर्षि—( आप ही आप ) अब यहाँ कौन जायगा ? ( प्रकाश ) आप क्या कहेंगी ?

वसन्त—आप मदनिका को लेते जाइये ।

शर्षि—बाईं जी, आप की बात में ममझा नहीं ।

वसन्त—मैं समझा हूँ ।

शर्षि—कैसे ?

वसन्त—मुझ से चारुदत्तजी ने कहा था कि जो तुम्हें गहने दे उसे तुम मदनिका को दे देना, तो यही इसे दिलवा रहे हैं अब आप समझे ?

शर्षि—( आप ही आप ) इन्होंने जान लिया ( प्रकाश ) वाह चारुदत्त जी वाह ! ।

( गुनही में जायै सदा चित नर चतुर सुजान )

गुनयुत भलो दरिद्र हू नहीं गुनबिन धनधान ॥

और ' गुन हित करौ यतन सब कोई ।

गुन सन कह्यु-दुर्लभ नहीं होई ॥

गुनअधिकाइ हित रजनीसा ।

पहुँच्यो अगम शत्रु के सोसा ॥

मद—शर्विलक ! जो तुम मेरा कहना मानो तो गहने ल  
जाकर उन्हीं को देखाओ ।

शर्वि—और जो कहीं यह कोतवाली में कह-दें ?

मद—कहीं चन्द्रमा से भी गरमी आती है ।

वसन्त—( आप ही आप ) घाह मदनिका, घाह !

शर्वि—नहि विपाद यहि काज दड को नहि कछु प्रासा ।

मो मञ्जन के सुगुन करौ जेहि काज प्रकासा ।

सुमिरि नीच यह काज होत मेरे मन लाजा ।

जो न कर सो थोर गठन मो सम कर राजा ।

तो भी यह बात नीति के विरुद्ध है और कोई चाल सोचो ।

मद—अच्छा, एक और उपाय है ।

वसन्त—( आप ही आप ) और क्या उपाय होगा ?

मद—तुम चारदत्त जी के भेजे हुए घने और गहने वार्डजी  
को दे दो ।

शर्वि—ऐसा करने से क्या होगा ?

मद—तुम चोर न रह जाओगे, चारदत्तजी उरिन हो जायेंगे ।  
और वार्ड जी अपने गहने पाजायेंगी ।

शर्वि—बड़ी ढिठाई का काम है ।

मद—ढिठाई है तो कर डालो ।

वसन्त—( आप ही आप ) घाह मदनिका, घाह, तू ने गिरल  
की सी बात कही है ।

शर्वि—मै सीखी यह चतुर्गई सुनि तुम्हारी सल्लाह ।

रात अंधेरी चंद्र विन कौन दिखावै राह ॥

मद—अच्छा तो तुम अब कामदेव के मन्दिर में ठहरो, हम  
वार्ड जी को तुम्हारा आना जना दें ।

शर्वि—ग्रहुत अच्छा ।

मद—( वसन्तसेना के पास जाकर ) वार्ड-जी चारदत्त जी के  
से एक घामहन आया है ।

वसन्त—धरी तू ने कैसे जाना कि उन्हीं का भेजा है ?

शर्वि—( सुन कर ) क्या मेरे प्यारे आर्यक को राजा पालक ने बांध लिया, मैं गृहस्थ भी बन गया, अब क्या करूँ !

नर के नारी और हित प्यारे जग में दीय ।  
यदिह्नन सौ तिय से अधिक मित्र पियारो होय ॥

तो अब उतरूँ ( रथ से उतरता है )

मद—( आसू भर कर हाथ जोड़ ) आर्यपुत्र ! आप जाते हैं तो मुझे अपने घर पहुँचा दीजिये ।

शर्वि—बाह ! प्रिया बाह ! तुमने हमारे मन की बात कही ।  
( चेरे से ) क्या भाई चौधरी रेमिल का घर जानते हो ?

चेरा—जी हाँ ।

शर्वि—प्रिया को वहीं पहुँचा दो ।

चेरा—बहुत अच्छा ।

मद—आप सँमल के जोखम में पड़िपगा ( बाहर जाती है ) ।

शर्वि—विट भुज बल जो विदित गीत के लोगहु सिगरे ।

राजा से अपमान पाइ सेषक जो विगरे ॥

योग्यरायन कीन्ह भूप उदयन हित जेसे ।

इष्ट मित्र के काज उमारों जन सत्र तैमे ॥

नाहक बांध्यो मित्र को डर बस रिपु मतिमन्द ।

ऋपटि छुड़ाओ ताहि ब्यों परत राहुमुख चद ॥

( बाहर जाता है )

[ चौथा स्थान—वसन्तसेना का महल ]

( चेरी और वधुल के साथ मैत्रेय आता है )

मैत्रे—अरे ! रावण ने मर मर के तपस्या की तो राजाओं का राजा हुआ पुष्पकविमान पर चढ़ चढ़ घूमा, और मैंने न तपस्या की न बुद्ध, रडियों के साथ फिरता हूँ ।



वसन्त—कोई रथ है ।

( एक रथ लेकर चेरा आता है )

चेरा—रथ हाजिर है ।

वसन्त—( मदनिका को चादर ओढ़ा कर घूँघट खींचकर )  
मदनिका ! अब जा तू हमसे विदा हो, रथ पर सवार हो जा  
हमारी सुख रखना ।

मद—( रोती हुई ) बाईजी मुझे क्या छोड़े देती हैं ? ( पैरों पर  
गिर पड़ती है ) ।

वसन्त—अब तो तुम्ही पेसी हो गई कि हम तुम्हारे पाँव छुपें  
जाके रथ पर सवार हो । हमें न भूलना ।

शर्वि—जय हो आपकी, मदनिका !

विदा होहु बधौ इन्हें चरनन माय नवाह ।

पुर्णकाम जेहि सन भई बधू सुपद तुम पाइ ॥

( मदनिका के साथ रथ पर सवार होकर बाहर जाता है )

( एक चेरी आती है )

चेरी—बाई जी ! बधाई है । चाणदत्त जी के पास से एक  
आम्हण आया है ।

वसन्त—आज का दिन भी कैसा अच्छा है ? जा बन्धुल के  
साथ उन्हें आदर से ले आ, मैं भी फुलवारी में जाकर बैठती हूँ ।

चेरी—बहुत अच्छा ।

( बाहर जाती है )

[ तीसरा स्थान सड़क ]

( रथ पर चढ़े हुए शर्विलक और मदनिका देख पड़ते हैं ? )

( परदे के पीछे )

सुनो जी सुनो ! केतवाल साहब की आज्ञा है कि जिस अहीर  
आर्यक को सिद्ध ने कहा था कि राजा होगा उसे राजा  
ने डर कर घोसियों के गाँव से लाकर, अंधेरे बन्दीघर में  
फिया है, तुम लोग भी अपने काम पर चौकस रहना !

रहा है। इधर आखाड़े से निकले पहलवान की नाईं मेढ़े की गरदन मली जा रही है, इधर घोड़े के बाल नवारे जा रहे हैं, इधर देतो घुड़साल में एक ओर चार पेसा घन्दर बँधा है। (दूसरी ओर देख कर) और इधर महावत आटा सान सान पिंड बना बना कर हागियो को खिला रहे हैं। चलो, आगे चलो।

चेरी—आइये, तीसरे चौक में आइये।

मैत्रे—(चल कर) अरे, अरे, तीसरे चौक में तो भलेमानुषों के बैठने के लिये आसन रचे हुए हैं; तिपाईं पर खुली हुई पोथी रखी है; यह देखिये रत्नों की गोठें समेत चौसर बिक्री है, यह देखो पातुरें और धूदे बिट रग रग के चित्र हाथ में लिये हुए इधर उधर टहल रहे हैं। चलो, आगे चलो।

चेरी—आइये, चौथे चौक में आइए।

मैत्रे—(चल कर देख कर) अरे चौथे चौक में तो जवान जवान स्त्रियाँ मृदङ्ग बजा रही हैं जिन से वादल गरजता सा जान पड़ता है, मजीरा बजने में पेसा चमक रहा है मानो पुन्य घट जाने से आकाश के तारे धरती पर झिटक रहे हैं, वांसुरी कैसे मीठे सुर से बज रही है और इधर गोद में रखी हुई धीना नरम शार्थों से बजती हुई मानघती नायिका की नाईं झनझना रही है, और फूल के रस से माती भारियो सी पातुरों की लडकियाँ गा गा कर नाच रही हैं, कोई नाटक पढ़ रही है और कोई भाव सीख रही है।

चेरी—आइये, पाँचवें चौक में आइए।

मैत्रे—(चल कर और देख कर) अरे, अरे, पाँचवें चौक में तो कगाजों के जी ललचाने वाली होंग और तेल की गध आ रही है, रसोई के घर से सुगन्ध और धुआँ पेसा निकल रहा है जैसे कोई जी जला हुआ साँस ले। भाँति भाँति के भोजनो के गध से मेरे पेट की आग भड़क उठी है और देखिये कसाई का लडका मैले कपड़े की नाईं

चेरी—देखिए हमारे घर की ड्याढ़ी देखिए ।

मैत्रे—( देख कर अन्नरज से ) बाह, घसन्तसेना के घर की ड्याढ़ी कैसी सुन्दर है, दरिद्र श्रेख हाथ मारे । भोतर हरे से रगी है, नीचे भाहू देकर सब झक कर दिया गया है, ऊपर पानी छिडका हुआ है, ठाँव ठाँव पर रग रग के फूल रफये हुये फाटक इतना ऊँचा है मानो आकाश देखने को सिर उठाये हुये फाटक के दोनों आँर बड़े बड़े हाथी अपने सूँढ़े से बेले के हाथ हिला रहे हैं और मेहराब हाथीदाँत का घना हुआ है, पताकाओं की पात सजी हुई है कुसुम रग के अचल वयार में ऐसे हिल रहे मानो मुझे घुला रहे हैं, इनके खमें की टोड़ियों के पास हरे आम के पदलघ पड़े हुए बिलोर के कलश रफले हुए हैं । हिरण्य कशिपु की छाती की नाई वज्र ऐसे मोटे मोटे नहरे किवाड़ लगे हैं, इनको देखने से जो लोग ससार से अपना जी हठा कर बैठे वह भी एक धार टकटकी बांध कर देखने लगेंगे ।

चेरी—आइये यह पहिला चौक है ।

मैत्रे—( आगे चल कर देख कर ) अरे, अरे, यहाँ तो चौक में चाँद, सख और कमल के रग की चुकनी से रगे हुए जिनकी सुनहरी सीढ़ियों पर रग रग के रत्न जड़े हैं ऊँचे महल खड़े हैं जो अपने मोती की झालरो से सजे हुए मुँह ऐसे झरोखों से मानो उज्जैनों को देख रहे हैं, ड्याढ़ी पर दरवान ऊँघता हुआ ऐसा बैठा है जैसे कोई पंडित मंत्र जपे, दही चाँवल की घण्टी रफसी है पर घूना समझ के उसे कौवे नहीं छूते ।

चेरी—चलिये, दूसरे चौक में चलिये ।

मैत्रे—( घुस के देख कर ) अरे, अरे, दूसरे चौक महली के बेल घास भूसा खाकर कैसे मोटे मोटे बँधे सींगों में तेल चुपड़ा हुआ है, इनके घोच में निराद हुए भलेमानुस की नाई एक भैंसा लबी लबी साँस

बड़े रडो के पीछे अपनी सपति गँवाये हुये रडियाँ मद् पी कर चुकड़े में छेड़ देती हैं उसे बड़े चाव से पी रहे हैं, चलो आगे चलो ।

चेरी—आइये, सातवें चौक में आइये ।

मैत्रे—( चल कर घोर देख कर ) अरे, सातवें चौक में तो अदर पीजरो और ढाघलियो में बैठे हुए कबूतरों के जोड़े एक-दूसरे को चूम रहे हैं । सुआ दूध भात खाकर बागहन की नाई द पढ़ रहा है । इधर स्वामी से आदर पाकर फूली हुई लौंडी भी मैना चिहना रही है और रग रग के फल खाकर कोयल क रही है, इधर बटेर लड़ रहे हैं, इधर तीतर धोल रहे हैं, कहीं कहीं कोई पिंजडे में कबूतर लिये जा रहा है और कहीं राज की किरना से जले हुए महलों के मोर अपने-अपने ल जड़े पखों से परा कर रहा है । ( दूसरी ओर देख कर ) और इधर देखिये पातुरो के पीछे राजहस का जोड़ा अपनी चाल सेखाता हुआ चला जा रहा है, बत्तल और सारस घर के बूढ़े भी नाई इधर उधर टहल रहे हैं । इस पातुर ने अपने घर में रग रग की त्रिटियाँ पाल कर नदनचन बना लिया है । चलिये, चलिये, आगे चलिये ।

चेरी—आइये, आठवें चौक में आइये ।

मैत्रे—( चलकर देख कर ) अरे यह कौन है जो रेशमी कपड़े पहने श्रंग श्रंग पर दोहरे तेहरे गहने जड़े इधर उधर टहल रहा है ?

चेरी—यह याई जी के भाई हैं ।

मैत्रे—अरे, कितनी तपस्या करने से याई जी का भाई होता है । नहीं नहीं यह तो मसान में चम्पा के पेड़ ऐसा है । सब कुछ अज्ञ पर किसी के काम का नहीं । ( दूसरी ओर देख कर ) अरी यह कौन फूलों से सजी जूता पहिने ऊँचे पर बैठी है ?

रहा है, रसोइये भाँति भाँति के भोजन पना रहे हैं—कोई लड़क  
बाँध रहा है, कोई मालपुआ तल रहा है । (आपही आप)  
अरे, यहाँ ऐसा कोई कहने वाला नहीं कि आइये पाँव धोकर  
बैठ जाइये । (दूमरी ओर देख कर) अरे, इधर भाँति  
के गहने पहने पातुरे और बधुल अप्सरा और गन्धर्व ऐसे रहत  
रहे हैं । सचमुच यह घर स्वर्ग हो गया है । क्यों जी, तुम लोग  
बधुल हो ?

बधुल—जी हाँ,

पिता और माता कोउ औरहि ।

रहे जन्मदाता कोउ औरहि ॥

पालि पोषि औरही बढाए ।

पर सपति भोगत मन भाये ॥

पहिरत खात दद नित पेजत ।

हाथिन के पाँडे सम खेजत ॥ देव

मंत्रे—चलिये, आगे चलिये ।

चेरी—आइये, आइये छठे चौक में आइये ।

मंत्रे—(चल कर देख कर) अरे, अरे, अरे, छठे चौक में तो

सोने और रत्ना के फाटक बीच बीच में नीलम जडने से इन्द्र  
धनुष ऐसे देख पडते हैं । लहसुनिया, मोती, मूँगा, पुखराज,  
नीलम, पना, चुन्नी, रत्नपारखी परख रहे हैं मानिक कुन्दन  
से जडा जा रहा है, लाल रेशम में सोने के गहने गूँधे जा  
रहे हैं, कोई मोती पिरो रहा है कोई बिलजौर घिस रहा है,  
कोई शयम छेद कर रहा है, कोई मूँगा खराद रहा है । इधर कोई  
केसर सुगना रहा है, कोई कस्तूरी झल रहा है, कोई चन्दन घिस  
रहा है, कोई और सुगन्ध मिला रहा है, कोई पातुरे के गाहकों  
में खिला रहा है, कोई तिरछी वीठि में ताक रही है, कहीं  
हो रही है और कहीं सी सी करते हुए लोग मद पी  
। इधर उधर और बहुत से लोग अपने लड़कैवालों को

चेरी—सुक के देखो, यह क्या है ।

मैत्रे—( देखकर आगे बढ़ कर ) जय हो आप की ।

वसन्त—धरे मैत्रेय जी आगये ! ( उठ कर ) आइये, इस आसन पर बिराजिये ।

मैत्रे—आप बैठ जाइये । ( दोनों बैठ जाते हैं )

वसन्त—कहिये, चौधरी जी अच्छे हैं ?

मैत्रे—जी बहुत अच्छे हैं ।

वसन्त—मैत्रेय जी भला कहिये तो अब भी

मान फूल, विश्वास जर, शील-डार, गुन-पात ।

साधुतरहि सो, हितबिहंग सुख सन सेवत जात ॥

मैत्रे—( आपही आप ) इस दुष्ट ग्डी ने अच्छी बात बनाई ॥

वसन्त—कहिये किधर चले ?

मैत्रे—जी, चाफदत्त जी ने हाथ जोड़ के आपसे विनती की है ।

वसन्त—( हाथ जोड़ कर ) क्या आज्ञा देते हैं ?

मैत्रे—हम आप के गहने अपने समझ से जुए में हार गये हैं और जिसके हाथ हारे वह सभिक या न जानें राजकाज से कहां चला गया ।

चेरी—बाई जी, घधाई है, चौधरी साहब जुआरी हो गये ।

वसन्त—( आपही आप ) क्या गहने दिखला दें ? ( सोचकर ) अभी ठहर जायँ ।

मैत्रे—रुचा आप यह हार न लेंगी ?

वसन्त—( हँस कर चेरी का मुँह देख कर ) क्यों न लुँगी । ( हार लेकर अपने पास रख लेती है ) बौरकरे आम से रस कैसे टपकता है ! ( प्रकाश ) मैत्रेय जी ! मेरी ओर से अपने जुआरीजी से विनती कीजियेगा कि रात को उनसे आऊँगी ।

चेरी—यह हमारी घाई जी की भ्रम्मा हैं।

मैत्रे—इस डाइन का पेट तो बडा भारी है। क्या इसे देव ऐसा वैठा के यह घर बनघाया था या घर के भीतर घनाया था।

चेरी—अरे हँस न, आज कल तो वेचारी को चौथिया आती है।

मैत्रे—हे चौथिया देवता। ऐसा आसन मिले तो हम पर कृपा करो, हम बाग्हन हैं।

चेरी—अरे मर जायगा।

मैत्रे—( हँसकर ) अरी, इतने फूले पेट से तो मरा अच्छा।

पी पी के मदिरा मतधारि।

भ्रम्मा ऐसी भई तुम्हारि ॥

जो तुम्हारि भ्रम्मा मरि जाय।

सौ मियार तो खायँ अघाय ॥

मैने वसतसेना की बडाई सुनी थी, आज उनका आठ शोक का घर देख कर समझता हूँ कि स्वर्ग यहीं उतरा है। मैं इसका बडाई नहीं कर सकता, यह कुवेर का घर है कि रडी का। तुम्हारी वाई जी कहाँ हैं ?

चेरी—चले चलिये, यह देखिये, फुलवारी में वैठी हैं।

मैत्रे—( चल कर देख कर ) अहा हा कैसी सुन्दर फुलवारी है ! कैसे सुन्दर सुन्दर फूल लगे हैं। बीच बीच हिंडोले गड़े हैं, जूही, नेघाडी, धेला, चमेली, मोतिया, मोगरा, सेवती सभी लगे हैं, सचमुच नदनघन हो रहा है। ( दूसरी ओर देखकर ) और यह लाल कमलों पर सूरज की किरनो के पडने से पोखरी का साँझ का सा रंग हो रहा है !

सो है जखौ अशोक धरि नये फूल औ पात ।

लगे रक्त के धूँद जनु समर सुमट के गात ॥

। हैं घाई जी ?

गिरें धरनि के ऊपर कैसे ।

गगनवस्त्र की झालर जैसे ॥

मलि चलत चक चकई मनहुँ कहूँ हस जनु उड़ि जात हैं ।  
कहुँ लसत मछरी मगर जनु कहूँ महल उठे जल्लात हैं ॥  
धनि जात रूप अनेक धन के जलहु चाल घतास की ।  
ललि परैं खाँवे विश्र मानहु छत्त माँहि अकास की ॥  
मेघ से औ तम से धरि कै धृतराष्ट्र के राज सो मोहै अकाम्पा ।  
कूकत हैं एक और शिखी दुरयोधन से करि गर्भ प्रकासा ।  
जूप में हारियुधिष्ठिर के सम काकिल बेठी है मौन उदासा ।  
पाडघ से बनझाँड़ि के हस कहूँ छिपि कै अय तीन निधासा ॥

( सोचकर ) मैत्रेय को वसतसेना के पास गये घड़ी घेर हुई,  
अभी तक नहीं आये, क्या करते हैं ।

( मैत्रेय आता है )

मैत्रे—पातुर भी कैसी जालची और नसीबी होती है । देखो,  
वसतसेना बोली न चाला, पूढ़ा न गढ़ा और माला ले ली ।  
इतना तो धन मिला पर उसके मुँह से यह भी न निकला कि  
मैत्रेय जी बैठो, पानी तो पीलो तप जाना । मेरी चले तो मैं मुँह-  
जली का मुँह न देखूँ । ( दुःख में ) लोग ठोक कहते हैं कि कमल  
कहाँ जिसमें भँसीड नहीं, धनियाँ कहाँ जो घोषा न दे, मोनार  
कहाँ जो चोर न हो, गँवारों की भेंट कहाँ जिसमें लड़ाई दहना न  
हो और पतुरिया ऐसी कहाँ जो जालची न हो । तो अर चार  
दत्तजी को इस पतुरिया से छुड़ाने का उपाय करूँ । ( चल कर  
और देखकर ) चारदत्त जी तो घाग में घड़ बेठे हैं ( आगे घड़ कर )  
घड़ती हो ।

चार—अरे मैत्रेय जी आ गये ! आओ यहाँ बैठो ।

मैत्रे—बैठे ।

चार—कहो भाई काम सिद्ध कर आये ?

० धन का अर्थ ससृष्ट में सब भी है ।



मैत्रे—( आप ही आप ) अब वहाँ आके और क्या लोगी !  
( प्रकाश ) बहुत अन्धा कह दूँगा ( आपही आप ) कि री  
के फन्द में न पड़ें । ( बाहर जाता है )

वसन्त—अरी यह गहने ले ले, आज चारुदत्त जी के  
चलैगे ।

चेरी—वाई जी, आज बड़ा दुर्दिन हो रहा है,

वसन्त—शाय राति बदरा उठें घरसेँ मूसलधार,

पिया मिलन मे कौन प मेरे रोक्नहार ?

हार लेकर जल्दी आ ।

( दोनों बाहर जाता है )

### पाँचवाँ अंक

( स्थान—चारुदत्त का घर )

( चारुदत्त आसन पर बैठा देख पड़ता है )

चारु—( ऊपर देखकर ) अरे आज बड़ा दुर्दिन हो रहा है ।

देखत चरके मोर चाव सन पूँछ फुजाई ।

मानसरोवर चलत हस देखें घबराई ॥

बिना समय के मेघ जखी नम चहुँ दिसि छावत ।

बिरहिनि के मन माहि काम को पीर उठावत ॥

भीगे भैसे उदर सरिस भौरे से कारे ।

जसत बिज्जु चहुँ और मनहु पीताम्बर धारे ॥

जसत कड़ाकुलपाति गए मानहु निजकर धरि ।

जाघन चहुँत अकाश एकही पद फिरि जनु हरि ॥

श्याम वरन धरि जलसी कुटिल कड़ाकुलपाति ।

बिजरीपट ओढ़े जलें घन केशव की भाँति ॥

टपकत गले रूप अनुहार ॥

घन सन गिरत नीर की धारा ॥

चमकत बिज्जु कयहुँ दरसाहों ।

घन अंधेर महँ पुनि छिपि जाहों ॥

गिरें धरानि के ऊपर कैसे ।

गगनवस्त्र की भालर जैसे ॥

नलि चलत चक्र चकई मनहुँ कहुँ हस जनु उड़ि जात हैं ।

हुँ जसत मछरी मगर जनु कहुँ महल उठे जखात हैं ॥

नि जात रूप अनेक धन के जलहु चाल वतास की ।

तखि परें खींचि विप्र मानहु छत्त माँहि प्रकास की ॥

मेघ से औ तम से धरि कै धृतराष्ट्र के राज सो सोहै अकाम्पा ।

हकत है एक और शिखी दुरयोधन से करि गर्व प्रकासा ।

रूप में हारि युधिष्ठिर के सम कोकिल वैठी है मौन उदासा ।

पाडघ से वन-झाँड़ि के हस कहुँ छिपि कै अथ लीन निधासा ॥

( सोचकर ) मैत्रेय को वसतमेना के पास गये बड़ी बेर हुई,

अभी तक नहीं आये, क्या करते हैं ।

( मैत्रेय आता है )

मैत्रे—पातुर भी कैसी लालची और नसीबी होती है । देखो,

वसतसेना घोली न चाली, पूछा न गत्रा और माला ले ली ।

इतना तो धन मिला पर उसके मुँह से यह भी न निकला कि

मैत्रेय जी बैठो, पानी तो पोजो तप जाना । मेरी बलै तो मैं मुँह-

जली का मुँह न देखूँ । ( दुख से ) जोग ठोक कहते हैं कि कमल

कहाँ जिसमें भँसीड नहीं, धनियाँ कहाँ जो घोला न दे, सोनार

कहाँ जो चोर न हो, गंधारों की भेंट कहाँ जिसमें लड़ाई दङ्गा न

हो और पतुरिया ऐसी कहाँ जो लालची न हो । तो अथ चार

दत्तजी को इस पतुरिया में छुडाने का उपाय करूँ । ( चल कर

और देखकर ) चाम्दत्त जी तो धाग में बह बैठे हैं ( आगे बढ़ कर )

बढ़ती हो ।

चार—अरे मैत्रेय जी आ गये ! आओ यहाँ बैठो ।

मैत्रे—बैठे ।

चार—कहो माँहें काम सिद्ध कर आये ?

\* वन का अर्थ सस्य में जब भी है ।

मैत्रे—सब चौपट हो गया ?

चारु—क्या घसतसेना ने हार नहीं लिया ?

मैत्रे—अजी हम लोगों के भाग ऐसे कहाँ ? उसने तो ऐसे हाथों से उसे उठा लिया ।

चारु—तो फिर क्यों कहते हो कि चौपट हो गया ?

मैत्रे—चौपट न हुआ तो और क्या, किसी के खाने में आया न पीने में, बेर लेगया और उसके बदले ऐसे बड़े मोल के रत्नों की माला हाथ से जाती रही ।

चारु—भाई, ऐसी बात न कहे ।

निज भूपन सोंपे हमहि करि हमार विश्वास ।

यह दे ताके मोल की गुहता कीन्ह प्रकास ॥

मैत्रे—भाई एक बात और हुई जिससे और भी जी जल गया कि वह सखी की ओर देकर धाँवल से मुँह धिप कर हम पर हँसी थी । देखिए हम घामहन हैं तो भी आपके पाँव पड़ कर आप ने बिनती करते हैं कि पतुरियों की सगति बुरी होती है । इसमें आप इस पतुर से अलग हो जाइये । पतुरिया तो जूते के भीतर की ककड़ी होती है, घुसने को तो घुस जाती पर निकलती है बड़े दुःख से । और आपने सुना होगा कि जहाँ पतुरिया, हाथी, कायध, मिखमगे, धूर्त और गधे रहते हैं वहाँ बुरे लोग भी नहीं जाते ।

चारु—भाई तुम किसी की बुराई क्यों करते हो ? हमारा तो दशा ऐसी हो रही है कि अलग न होंगे तो न होंगे देखो—

घोड़े चाहत है भले पवनहु से बढ़िजायँ ।

बलही के अनुसार पेवेगि उठत है पायँ ॥

स्वभाव सन चपल है चाहत है सब बात ।

१२ मानि जब जात तो आपहि मरि सम जात ॥

को यह काम, जेहि के धन तेहि से मिलै ।

‘पही आप) न बसतसेना ऐसी नहीं—‘जाके गुन तेहि से मिलै’  
(काश) हमरे पास न दाम सो बूटी है आपही ॥

मैत्रे—( नीचे देखकर आपही आप ) यह तो ऊपर देखकर  
स ले रहे हैं, मेरे कहने से तो और भी उसके लिए घबरा  
, ठीक कहा है कि काम वाम होता है । ( प्रकाश ) अजी  
तसेना ने कहा था कि साँक को आऊँगी । हो न हो कुछ और  
ना चाहती है, दार का दाम कम होगा ।

चारु—आने दो, सुखी होकर जायगी ।

( घर के बाहर कुँभिलक आता है )

मि—अरे ।

जैसे जैसे घरसे तोय ।

पीठिचाम त्यो गलगल होय ॥

जैसे जैसे चले वयार ।

त्यो त्यों काँपै हिया हमार ॥

हँसकर ) भन भन भन भन घजत बजाओं सात तार की धीना ।

सात छेद की बसी फूँकों मेसो को परधीना ?

सीपों सीपों गद्दा पेसा गाँवों राग मलारा ।

मेरे आगे तुम्हरे कैसा नारद कौन वेवारा ॥

आज बाई जो चारुदत्त के घर आ रही हैं सो मुझे उन्हें चेताने  
तो पहले ही से भेजा है । ( कुछ चल कर देख कर ) चारुदत्त जी

तो यह घाग में बैठे हैं और वह बहधा भी है तो चलूँ । अरे, घाग

! किधाड़ बन्द हैं तो इस घागहन को चौका हूँ ।

( एक ककड़ी फेंकता है ) ।

मैत्रे—अरे यह कौन ककड़ी मारता है ?

चारु—घाग की भीत पर से कवूतरों ने गिरा दी होगी ।

मैत्रे—रह रे कवूतर रह, इसी लकड़ी से हम तुम्हें पकड़े  
आम की नाई झोरे ढालते हैं ( जाड़ी उठाता है )

चारु—( जनेऊ पकड़ कर ) बेटो, वेवारे को फेंक  
है, कवूतरी के साथ खेल रहा है ।

कुभि—अरे, मुझे नहीं देखता, कबूतर को देख रहा है।  
दूसरी कुकड़ी फेंकूँ ( फिर फेंकता है )

मैत्रे—( कुभिलक को देखकर ) अरे, कुभिलक है, तो क्या  
खोज दूँ । ( किवाड़ खोज कर ) अरे कुभिलक ! आओ, आओ

कुभि—मैत्रेय जी पालागै ।

मैत्रे—अरे आज क्या है जो ऐसे कुदिन में आये ?

कुभि—अजी वही वही ।

मैत्रे—अरे कौन कौन ?

कुभि—वही वही ।

मैत्रे—अब क्या जाड़े में बुढ़े कगाल की नाई उँ  
करता है ?

कुभि—और तुम क्या श्राद्ध में कौषों की नाई काँव का  
करते हो ।

मैत्रे—कह तो ।

कुभि—( आपही आप ) अच्छा तो ऐसे कहूँ । ( प्रकाश )  
एक प्रश्न दूँगे तुम्हें ।

मैत्रे—हम तेरे निर पर एक जात दूँगे ।

कुभि—अच्छा तो बताओ आम कब धौरते हैं ?

मैत्रे—गरमी में तो ।

कुभि—( हस कर ) नहीं नहीं ।

मैत्रे—( आपही आप ) तो क्या कहें ? ( प्रकाश ) चारु  
जी से पूँछ लें ( चारुत्त के पास जाकर ) क्या भाई  
कब धौरते हैं ?

चारु—उड़े मूर्ख हो, " वसत " में नहीं जानते ।

मैत्रे—( कुभिलक के पास जाकर ) अब वसत ।

कुभि—अच्छा अब दूसरी बात बताओ ; बड़े बड़े नगरे

। कौन करता है ?

मैत्रे—अबे रच्छा ।

कुमि—( हँस कर ) अजी नहीं ।

मैत्रे—हम कुछ भूल रहे हैं ( सोच कर ) चारदत्त जी से  
 लें ( चारदत्त के पास जाकर ) क्यों भाई बड़े बड़े नगरों की  
 का कौन करता है ?

चारु—सेना ।

मैत्रे—( कुमिलक के पास जाकर ) अबे सेना ।

कुमि—अच्छा दोना को इकट्ठा करके फुरती से कहो तो ।

मैत्रे—सेनावसत ।

कुमि—उलट के रुहो ।

मैत्रे—( यदन से उलटा होकर ) सेनावसत ।

कुमि—अधे गधे पद उलट के कह ।

मैत्रे—( पैर उलट कर ) सेनावसत ।

कुमि—उड़ा गधा है । अरे अक्षर उलटा ।

मैत्रे—( सोच कर ) वसतसेना ।

कु—पही, पही, आती हैं ।

मैत्रे—तो जाके चारदत्त जी से कहें । ( चारदत्त के पास  
 जाकर ) अजी चारदत्त जी आप का धनी आयागा ।

चारु—हमारे घर में कौन धनी है ?

मैत्रे—घर में नहीं हैं तो आने चाहता है । वसतसेना  
 की है ।

चारु—क्यों जी धोखा तो नहीं देते ?

मैत्रे—हमारी बात की परतीत न हो तो कुमिलक से पूँछ  
 । अबे कुमिलक चल तो ।

कुमि—( आगे बढ़ कर ) प्रणाम ।

चारु—आओ जी, कहो वसतसेना आ रही हैं ?

कुमि—जी हाँ पहुँचती ही हैं ।

चारु—( हर्ष से भाई ) हमें अच्छी खबर देना, कभी अकारण  
 हुआ, तो जो यह इनाम ( दुपट्टा उतार कर देता है )

कुमि—( दुपट्टा लेकर द्वर्ष से ) मैं जाके धाई जी से  
( बाहर जाता है )

मैत्रे—क्यो भाई, कुछ जानते हो क्यो आ रही है ?

चारु—हम तो कुछ नहीं समझते ।

मैत्रे—हम जानते हैं माला का दाम थोड़ा है, गहने  
ये इस से कुछ और मांगने आती है ।

चारु—( आपही आप ) उस का सतोष कर दोगे, ( प्रकार  
अच्छा, जाओ आगे बढ़ के बसतसेना को ले आओ ।

( मैत्रेय बाहर आता है )  
( घाग के बाहर चेरियो और धिट के साथ बसतसेना आती है )

धिट—( बसतसेना को दिखा कर )

कमल नहीं है लीन्हें श्रिय सों न घट तऊ,

चमकदमकधारी काम की कटारी है !

कुसुम कजांसी है मनोजतरु डार केरी,

लाज न तजे है जोपै पातुर की बारी है ।

लीजा करि चलती न पुरकुजबधू कोऊ,

याकी कृधि देखि जो सुहाग नाहिं हारी है ।

रगभूमि चलै कै संकेतगेह जात जब,

लेत प्रियजन नित सग सुकुमारी है ॥

बसतसेना जी, देखो देखो,

विरहिन के मन से मलिन लसैं सिखर चहुँ ओर ।

उनये लखौ पहार पै गर्जत हैं घन घोर ॥

नाचि उठे एक सगही मोर पूँछ फेजाय ।

मनिमय पखे ताड़ के रहे मनौ नभ छाया ॥

और, मूसज धार गिरै जल दादुर ताहि पियें मुख कीच लगाई ।

दोप समान कदव लसैं कहुँ कूकत मोर लखौ सुल पाई ।

खोटे मनुष्यन के सम योगिहि घेरत हैं घन चदहि धाई ।

बैठत है एक ठाँव नहीं बिजुरी कुलटा युवतीन को नाई ।

बस—आपने बहुत ठीक कहा ।

तेरो कौन अकाज कही चहुँदिशि घन घेरे ।

मेरो प्रानपियार रमै सँग में जो मेरे ॥

जो तू विगडी सौत सरिस मोहि गरजि डरावति ।

पद पद पापिन रैन राह मेरी तू धावति ॥

बिट—अच्छा तो हम इसे झिडकते हैं ।

घसत—अजी यह विचारी स्त्री है, भलमसी नहीं जानती  
को घुरा न कहना चाहिये ।

बिट—देखिये, देखिये,

धावा करत पधन सम आघत ।

मूसरधार नीर धरसाघत ॥

गरजत डका मनहु यजाघत ।

विजरी की सोइ घ्वजा उडागत ॥

हरत मेघ जगु कर हिमकर के ।

प्रथल भूप परि पुर जिमि पर के ॥

घसत—जी हाँ ठीक है,

पानी से पेट भरे गज की सी घटा घन की यह आघत है ।

धनु जलसे षगुनी बिलसे कहुँ शूल हिये से उठाघत है ।

गार मचाय के दादुर मूढ़ जरे पर जोन जगाघत है ।

पितम से बिहुडीं जो तिन्हें घघ की जनु डोल यजाघत हैं ॥

बिट—जी, इधर भी देखिए,

यगुजन की कलंगी धरे विजुरी चँवर हिलाय ।

होइ मत्त गज की करत आज अकाश जलाय ॥

घसत—देखिए,

भीगे तमाल के पातन से घन झये लखौ रवि तेज निधारी ।

दीमक के घुस बैठत है शरधार परे गज की छवि धारी ।

कचन दीपक सी विजरी जनु घूमत है पुर ऊँची अटारी ।

मेघन देखो जुन्हाई हरी जिमि नीवर की जघरें मिलि नारी

बिट—घसतसेना " " " " इधर,



विजुरीडोर कसे तन धारत ।  
 गज सम एक एकहि लजकारत ॥  
 इन्द्रवचन सन घन बरजोरी ।  
 खैचत धरनि रूप की डोरी ॥

और, भँसन के रग नील भरे सोइ प्रदल बतासा ।  
 विजुरीपर लगाय सिधु सम हिलत अकासा ॥  
 गध भरी अरु हरी घास की अँकुरवारी ।  
 छेदत है सोइ धरनि मेघ मनिमय शर मारी ॥  
 वसत—और इधर,

आउ आउ कहि बारबार तेहि मोर बुजावैं ।  
 उडि के बगुली पाति ताहि निज अँग लगावैं ॥  
 कमल ऊँडि अकुलाय लखै तेहि दुखित मराजा ।  
 करत नील आकाश उठत हैं घन यहि काला ॥

चिट—ठीक है, और

मूँदे सरोज सो निश्चल लोचन, राति औ घास को मेघ मिटाये ।  
 विज्जु लसे झलकैं सो दिसामुण, चादर सो मोइ मानेँ छिपाये ।  
 फैले आकाश के मट्टि में बहु, नीरद छत्र समान लगाये ।  
 मेघ फुहारनगेह में देखहु, सोधन है जगकाज बिहाये ॥  
 वसत—पेसाही है, देरिए

पाजिन सग उपकार भरिस घिनसे अघ तारा ।  
 दिशि मजोन कुततिया सरिस धिक्कुरत जब प्यारा ॥  
 तपत द्वेषपतिगह्वर बज्र की उधाल कराला ।  
 टपकत है आकाज मनहुँ गलि गलि यहि काला ॥  
 और, वरसेँ गरजेँ सुकि उठै मेघ करै अंधियार ।  
 नये धनी के सरिस यह लीला करै अपार ॥

चिट—हाँ, हाँ,

खिलात सम लगे चलत जवहीं बकपाती ।  
 विज्जु चहुँ ओर जंरति सी देह लखाती ॥

जगत जगै कर धनुष जिये शरधार गिरावत ।

प्रकट घञ्ज के शब्द होत जनु शोर मचावत ॥

चलत पौन चूमत जगत साँप सरिस वादर विषम ।

परत मनहु अकुजात यह जगत धूप के धूम सम ॥

वसत—पिय के घर में जाति हौं मेघ न आवति लाज ।

छुवत धारकर मन गरजि डरवावत बेकाज ॥

इन्द्र ! कवहुँ रही है प्रीति भजा मेरी औ तेरी ।

जो तू गरजत सिंह सरिस मोहि यहि कून हेरो ॥

पिया मिलन मैं जाति मोहि यहि विधि तू टोकत ।

जलधारा बरसाय राह मेरी तू रोकत ॥

र, सकुचे धोजत झूठ नहि तुम गौतमतिय काज ।

मो मन तेसेहि समुक्ति षव मेघ हटापहु षाज ॥

र हे इन्द्र ! बिजुरी फोटि गिराउ कै गरजो बरसौ मेह ।

रोकि सके को तियनके चलत पिया के गेह ॥

बरसै घन तो बरसि जे पुरुष होत बेपोर ।

अबजादुख समुक्त न क्यों तुह बिजुरी बीर ?

घिट—आप इसे क्यों बुरा कह रही है ? इसने आप के साथ

कार किया है ।

गिरि की चोथी लसत मनहुँ यह सेत घञ्जा सी ।

सुरपतिमदिर बीच केरि जनु तिमल दिया सी ॥

पेरावतउर हिलत हेमडोरी सी पहा ।

लाह देतावत लखौ तुमहि प्रियतम को गेहा ॥

वसत—क्यों जी ! क्या उनका घर यही है ?

घिट—जी हाँ यही है, और आप तो सब कला जानती हैं,

पके कौन मिला सकता है, पर, स्नेह नहीं मानता, यहाँ जाकर

त मान न कीजिएगा ।

रतिरस होत न किधे मान अति ।

विना मान लागे फीकी रति ॥

करिय मान अरु मान कराइय ।

मानिय अरु निज पियहि मनाइय ॥

अच्छा तो अब पुकारूँ । अजी कोई है ! चारुदत्त जी से कहूँ  
फूजे कदव की गंध समेत वयार बहै उनये घन कारे  
पेसे में धाई है प्रीतम के घर भीजत मैने के मानों सहारे  
गर्जत मेघ चकीसो लखै तोहि देखन चाह हिये महुँ धारे  
पांय प्रौ पायल कोच भरे तिन्हें धोवत ठाढी दुभार तुम्हारे  
चारु—( सुनकर ) मैत्रेय जी ! देखा तो कौन है ?

मैत्रे—( वसतसेना के पास जाकर ) जय हो आपकी ।

वसत—पालागें ! ( बिट से ) यह छतरीवाली आप के साथ  
लौट जाय ।

बिट—( आपही आप ) इसी चाल से हमें लौटाती हैं ।

( प्रकाश ) बहुत अच्छा धाई जी ।

मान गर्व कृज कपट मूठ माया चतुराई ।

जहँ उपजै रति रहै जहाँ प्रियजन सुखदाई ॥

नेह उदार स्वभाव खरिच सौदा सुखकेरा ।

वेश्यापन के हाट आज कीजिय बहुतेरा ॥

( बिट बाहर जाता है )

वसत—मैत्रेय जी तुम्हारे जुधारी कहाँ हैं ?

मैत्रे—(आपही आप) अरे जुधारी की तो अच्छी पदवी मिली  
( प्रकाश ) जी सुखे पेड़ों के बाग में हैं ?

वसत—आपका सुखे पेड़ों का बाग कहाँ है ?

मैत्रे—जहाँ न कोई खाय न पिये ।

( वसन्त सेना मुसकाती है )

मैत्रे—तो चलिप, भीतर चलिप ।

वसन्त—( अलग चेरी से ) वहाँ जाके क्या कहूँ ?

चेरी—जुधारी ! कहिये साँस कैसी धीत रही है ?

घनेगा मरु से ?

वसन्त—( आपही आप ) इसी मे तुम पर मरती हूँ ।

चारु—( अलग ) हाँ,

जाको धन नसि जाय, ताको मारिबो ही भजो ।

प्रेषस नित पङ्किताय, रोभत एोजत व्यर्थ सो ॥

तौर, ज्यो विनपख विहग, सर जल थिनु, तर पात विन ।

ज्यो विन दाँत भुजङ्ग, तैसहि हात दरिद्र नर ॥

तौर, विना पात को रूप ज्यो जैसे कूप कुरान ।

भये दरिद्र पुढप लगे सुने गेह समान ॥

हात प्रसन्न दरिद्र नर सकै देइ कहु नाहिं ।

पहिले रूँ हितु वधु सध तेहि नित प्रिसरत जाहिं ॥

मैत्रे—अजी क्यों इतना सोच करते हो । ( प्रकाश हँसकर )

जो चाई जी मेरी धोती ता दीजिये , ये गहने उसी में धँधे थे ।

वसन्त—चारुदत्त जी, आप को यह न चाहिये था कि हार

न कर हम लोगों का मन परखते ।

चारु—( मुमकरा कर ) वसन्तसेना छार्दे,  
( को करिहै परतीत, इयादि फिर पढ़ता है )

मैत्रे—अरी ! क्या चाई जी आज यहीं सोचेंगी ?

चेरी—( हँसकर ) मैत्रेय जी, बड़े भोले बने जा रहे हो ।

मैत्रे—हम यहाँ सुख से बैठे हैं , हमें यहाँ से भगाने को मेघ

सा था रहा है ।

चारु—ठीक कहते हो ।

कमलसुचि कीचहि ज्यों फोरत ।

त्यों जलधार नीरधर तोरत ॥

चन्द्रविपति लखि नभ दुख पावत ।

तासु आसु सम महि पर आवत ॥

तौर निर्मल सज्जनचित्त समाना ।

लगत कठिन ज्यों अर्जुनवाना ॥

नी— रग धन धार गिरावत ।

मुता। धरसावत ॥

मैत्रे—( अलग चारुदत्त से ) हमने तुमसे पहिले ही कहा था कि हार छोड़े दाम का था, गहने मँहगे थे, इस से और कुछ माँगने थाई है ।

चेरी—राईजी उसे अपना समझ के जुए में हार गई और जिसके हाथ हारों वह सभिक था, राजकाज में न जाने कहीं चला गया ।

मैत्रे—जी यह तो मैं पहिले ही कह चुका था ।

चेरी—तो जम तक वह ढँढ़ा जाय तब तक यह गहने लीनिये ।  
( गहने दिग्याती हैं, मैत्रेय बड़े ध्यान में देखता है )

चेरी—मैत्रेय जी ! आप इन्हें बड़े ध्यान से देख रहे हैं क्या आपने इन्हें कभी देखा है ।

मैत्रे—हम इन की कारीगरी को देख रहे हैं ।

चेरी—अजी, तुम्हारी आँख धोखा खा रही है यह वह गहने हैं ।

मैत्रे—( हर्ष से ) भाई, वही गहने हैं जो चोर ले गया था चारु—भाई, मिस तेही अवसर किन्हु यह घाती फेरन हेत ।

सोई खुजो यह झूठ रजि कै यह धोखा देत ?  
मैत्रे—नहीं सच है, हम सौह से कहते हैं ।

चारु—बहुत अच्छा हुआ ।

मैत्रे—( अलग चारुदत्त से ) पूँछे कैसे मिला ?

चारु—हाँ हाँ ।

मैत्रे—( चेरी के कान में कहता है )

चेरी—( मैत्रेय के कान में कहती है )

चारु—ऐसे क्यों कहते हो क्या हम लोग बाहरी हैं ।

मैत्रे—( चारुदत्त के कान में कहता है )

चारु—क्यों रो, वही गहने हैं ?

चेरी—जी हाँ ।

चारु—हमारे आगे अच्छी बात कहनेवाला कभी खाली गया । यह झँगूठी जो ( हाथ में झँगूठी न देखकर लजाता है )

रद—यह चौधरी का लडका रोहसेन है ।

वसन्त—( दोनों हाथ फैलाकर ) आओ वेटा ? यहाँ आओ ( गौद में वेटा लेती है ) अपने बाप ही को पड़े हैं ।

रद—स्वभाव भी उन्हीं का सा है । चाखदत्त जी इन्हीं से अपना जी बहलाते हैं ।

वसन्त—क्यों रोते हैं ?

रद—यह पड़ोस क एक भलेमानुस के लडके की सोने की गाड़ी से खेलते थे ; वह अपनी ले गया, यह फिर माँगने लगे, तब मैंने इन्ह मिट्टी की गाड़ी बनादी, अब यह कहते हैं कि हम मिट्टी की गाड़ी न लेंगे हमें घड़ी गाड़ी ला दो ।

वसन्त—हा ! इसे भी कगालपना राज रहा है ! भगवान तुम हम लोगो के भाग पुरइन के पत्ते पर यानी की नाई क्यों नचा रहे हो ( आँसू भर कर ) वेटा ! रोओ न, सोने की गाड़ी आ जायगी ।

लडका—रदनिका ; यह कौन हैं ?

वसन्त—तुम्हारे बाप की लौंडी ।

रद—भैया, यह भी तुम्हारी मा हैं

लडका—तू झूठी है । हमारी मा होती तो इतने गहने कहाँ पाती ?

वसन्त—( गहने उतार कर रोती हुई ) वेटा, अब मैं तुम्हारी मा हो गई । इन्हें ले जाओ सोने की गाड़ी बनवालो ।

लडका—जाओ हम तुम्हारे गहने नहीं लेते ।

वसन्त—( आँसू पोंछ कर ) न रोऊँगी , जाओ खेजो ( गाड़ी में गहने भर कर ) जाओ वेटा सोने की गाड़ी बनवा लेना ।

( लडके के साथ रदनिका घाहर जाती है )

( घर के घाहर एक घड़ली लिये यर्द्धमानक आता है )

वर्द्ध—रदनिका ! रदनिका ! वसन्तमेना जी से कह दो कि लडकी के आगे घड़ली खड़ी है । ( फिर रद—

घसन्त—अरी, चारुदत्त जी के घर मेरा रहना किसी के खला तो नहीं ?

चेरी—जी एलैगा ।

घसन्त—अरी कय ?

चेरी—जब आप चली जायगी ।

घसन्त—तब तो पहिले मुझी को एलैगा । अरी, माला ले और मेरी बहिन धूता जी के पास ले जा के कह में चारुदत्त जी की लौडी हूँ वैसी ही आपकी । यह माला आपके के गले में मोहै ।

चेरी—चारुदत्त जी जो उन पर रिस करें ?

घसन्त—जा, न रिस करेंगे ।

चेरी—( हार लेकर ), बहुत अच्छा ।

( बाहर जाकर फिर आती है )

चेरी—वाई जी ! धूता जी कहती हैं कि आर्यपुत्र ने आप को दी है, मैं कैसे ले सकती हूँ मेरे तो सब गहने के गहने वही हैं । मुझे और कुछ न चाहिये ।

( हाथ से मिट्टी की गाड़ी खींचता हुआ एक लड़का और उसके पीछे रदनिका आती है )

रद—आओ, तुम्हारी गाड़ी हम खींचें ।

लड़का—हम मिट्टी की गाड़ी न लेंगे, हमें वही सोने की गाड़ी दो ।

रद—( सांस लेकर ) भैया ! हम लोगों के घर में अब कहाँ ? जब फिर चौधरी साहब की बढती होगी तब फिर की गाड़ी खेलना । चलौ तुम्हें घसन्तसेना के पास ले चलें ।

( आगे बढ़ कर घसन्तसेना के हाथ जोड़ती है )

घसन्त—आओ जी रदनिका ! यह किसका लड़का है कुछ नहीं पहने है तो भी इसका चांद सा मुँह कैसा अच्छा है !

अरे तुम पूरव फाटक पर रहो, तुम पश्चिम के, तुम दक्षिण के, तुम उत्तर के, इस जगह फोट पर चढ़ के चदनक और हम देखेंगे ! आओ जी चदनक, इधर आओ !

( घबराया हुआ चदनक आता है )

चन्द—अरे ओ वीरक ! विशल्य, भाग, अगद, दडकाल, दडशूर ! राजभक्त आओ सबै करौ वेगि मेरा काज ।

जेहि सन जाय न और पै महाराज को राज ॥

और, धाग भीर मै राह में हेरो बीस बजार ।

जहँ जहँ शका होय तहँ हेरा जाय न पार ॥

का दिखराधत धीर तुम, कहे खोलि किन बात ।

तेरि जजीर अहीर को को लै भागे जात ?

पत्रपँ मगल गुरु छठे काके चौथे चन्द ?

सुरज जेहि के आठवें मरन चहै मतिमन्द ?

नधँ सनीचर गुरु भय छट्टे कौन के आज ?

हरत अहीर जियत मेरे ज्यों पट्टी को घाज ॥

वीर—चदनक जी !

तेरे सिर की साँह कोउ ताहि बचाये जात ।

सो अहीर भागे निसरि आजहि हात प्रभात ॥

बद्ध—बल रे बल चल !

चद—( देग कर ) अरे देखो, देखो !

बहली ढकी ओहार मे आवत परे लग्याय ।

देखो है यह कौन को चढ़ा कौन कहँ जाय ॥

वीर—अरे ओ वे बहलीवाल ! रोक बहली । बहली किस की है ? कौन सवार है ? कहाँ जायगी ?

बद्ध—सरकार ! चारुदत्त जी की बहली है, बसन्तसेना जी सवार हैं, पुष्पकरड धाग जा रही हैं ।

चदनक—तो जाने दो ।

वीर—बिना देखे ?

चद—हाँ हाँ ।



लिखी विधाता माथ जो तेहि को सकै बिगारि ।  
 चलिकै नृपहि मनाइये योग न तेहि सन राखि ॥  
 तो अब मे अभागा कहाँ जाऊँ ? किसी भलेमानुस की  
 खिड़की गुली है ।

दूटोघर बँडे घिना फाटे खुले किवार ।  
 यह गृहस्थ है है कोई देवा विपति के भार ॥  
 यहीं घुस के राडा हो जाऊँ ।

( परदे के पीछे बहली आने का शब्द होता है )  
 आर्यक—( सुन कर ) अरे, यह किसी की बहली आ रही है ।  
 जो बाहर फौड जात होय नहि चढ़े दुप नर ।  
 बधू लेन के काज भई ठाढ़ी यहि अवसर ॥  
 भले लोग हैं जात सैरको बाहर कोई ।  
 पठई मेरे काज देष, सूनी यह होई ॥  
 ( बहली लिए वर्द्धमानक आता है )

वर्द्ध—मैं गद्दी ले आया, रदनिका । घाई जी से कह दो कि  
 बहली खड़ी है, आप पुष्पकरड बाग चलें ।

आर्य—( सुनकर ) यह तो गद्दी की बहली है और बाहर  
 जायगी, इसी पर चढ़ लूँ । ( घीरे से चढ़ जाता है )

वर्द्ध—अरे घुँघुऊ वजना है तो घाई जी आ गई । घाई जी  
 बैल मरकहा है, पीछे से चढ़िए । ( आर्यक पीछे से चढ़  
 जाता है )

वर्द्ध—पैर उठाने से घुँघुऊ वजना बन्द हो गया, बहली भारी  
 हो गई, घाई जी चढ़ चुकीं, तो अब चलूँ । चल रे चल ।

( रथ चलाता है )

( वीरक आता है )

वीरक—अरे, ओ जय जयमान, चदनक, मगल, पुष्पमट्ट ।  
 का सुन्निन बीटे करो भागो जात अहीर ।  
 फारी छाती भूप की तोरी कड़ी जँजीर ।

घोर—सुनिये, सुनिये,

तामा भाई डोल है माय नगरा थाप ।

ऐनी अच्छी जाति के हैं मेनापति आप ॥

चन्द—( क्रोध से ) अच्छा हम चमार हैं देखो भाई ।

घोर—ओत्रे पहलीघाले, फेर वहली ।

( घट्टमानक वहली फेरता है )

घोरक पहली पर चढ़ना चाहता है, चन्दनक उसका पट्टा पकड कर गिरा देता है और जात मारता है )

घोर—( क्रोध से उठकर ) अच्छा, तुम ने राजकाज करते ये पट्टा पकड कर क्योंचा और जात मारी । रह तुम्हे हम कचहरी में चौरङ्ग न करावै तो जोरक नहीं ।

चन्द—अधे ! कचहरी जा चाहै दरवार जा, तू कुत्ता क्या कर सकता है ?

घोर—अच्छा ।

( बाहर जाता है )

चन्द—( चारो ओर देख कर ) जाधे वहलीघाले जा । जो कोई पूछे तो कह देना कि चन्दनक और घोरक ने देख लिया है । वसत-सेना याई । यह चिह्न भी लेती जाओ ( तलवार देता है )

आर्य—( तलवार लेकर हर्ष से )

जग्यो हाथ हथिआर, फरकति है दाहिनी भुजा ।

विधि अनुकूल हमार, अब हम वचे सदेह विन ॥

चन्द—बाई जी,

चन्दन को जनि भूलियो विनय करौ कर जोरि ।

कहाँ नहीं कहु जाम से प्रीति हिये महुँ तोरि ॥

आर्य—धनि गये हित सयोग धम चन्दन चन्द समान ।

सुधि करि हैं सच कीन्ह जो सिद्ध यचन भगधान ॥

चन्द—अमय करें त्रिपुरारि, ब्रह्मा रवि हरि चन्द तोहि ।

राजिय निज रिपु मारि, शुभ निशमहि देवि जिमि ॥

( घट्टमानक वहली लेकर बाहर जाता है )

वीर—अच्छा तो हम भी देख लें , राजा की आज्ञा है और राजा ने हमारे भरोसे छोड़ा है ।

चन्द—तुम्हारा भरोसा है, हमारा भरोसा नहीं ?

वीर—भरोसा सब कुछ है पर राजा की आज्ञा भी तो है ।

चन्द—( आपही प्राप ) अहीर का लडका चारुदत्त जी की वहली पर चढ़ कर मागा जाता है । यह जो कहीं कहेगा तो चारुदत्त जी को दण्ड होगा, तो अब क्या उपाय है । ( सोचकर ) तो अब कर्नाटका की सीं लडाईं करें । ( प्रकाश ) क्यों वीरक, चन्दनक तो देख चुका अब तुम कौन है देखने वाले ?

वीर—तुम कौन है ?

चन्द—तुम अपनी ऊँची जात भूल गये ?

वीर—( क्रोध से ) क्या है हमारी जात ?

चन्द—कौन कहै ?

वीर—नहीं, नहीं कह डालो ।

चन्द—न कहेंगे ।

जानों कहिहैं नाहि, तेरी जात सकाव बस ।

रहे मेरे मन माहि' कैया तोड़े क्या मिलै ?

वीर—कहो कहो ।

चन्द—( इशारे से बतलाता है )

वीर—मुँह से कहो ।

चन्द— धरे शिला पै हाथ, बैठाये जो जोड़ नित ।

जोन्हें रांपी साथ, तुम हूँ सेनापति भये ॥

वीर—तुम अपनी ऊँची जात भूल गए ?

चन्द—अरे मेरी जात को क्या हुआ है ?

वीर—कौन कहै ?

चन्द—कहो कहो ।

वीर—( इशारे से बतलाता है कि चन्दनक चमार है )

चन्द—कहो, पुलके क्यों नहीं कहते ?

- चारु—मेरी ह सुधि रातियो  
 आर्य— भूल निजहु कोउ जात ?
- चारु—चलत वचार्थे सुर तुम्हें,  
 आर्य— तुम मोहिं जोन वचाय ।
- चारु—अपनी भागन से वचे  
 आर्य— तुमहीं रहे सहाय ॥
- चारु—तो जब तक राजा बहुत मे सिपाहो न दौडावें आप  
 कल जाइए ।
- आर्य—बहुत अन्धा , ईश्वर चाहेगा तो फिर मिलेंगे ।  
 ( यहली पर बाहर जाता है )
- चारु—पट्टे कोन अपराध मै बागी निज रय माहि ।  
 उबिन हमै ठहरन इहां अब एकहु द्विन नाहि ॥  
 वेगि पुराने कूप में चेडी देहु बहाय ।  
 भेदिन सो चहुँओर की खवरि लेत नित राय ॥  
 ( शत्रु का फड़कना जना कर ) मैत्रेय ! वसन्तसेना के मिलने  
 जो बहुत घबड़ा रहा है ।  
 प्रानप्रिया देखे बिना यहि छन दियो सकात ।  
 फरकति वाईं शत्रिह असगुन बुरो जखात ॥
- चलो चलै ( चल कर ) अरे ! सामने ही सन्यासी का अस-  
 देख पडा । ( सोच कर ) अन्धा, यह इधर से आता है, हम  
 से चलें ।  
 ( दोनों बाहर जाते हैं )

### आठवाँ अंक

( स्थान—पुष्पकर ढ बाग में दूसरी जगह )

( हाथ में भीगा कपड़ा लिए एक बौद्धसन्यासी आता है )

बौद्धसन्यासी—( गाता है )

मूढ़ धर्म सचय महँ जागो ॥

जासु रूप अनुभाव परे लखि अद्भुत ऐसे ।  
वेडी तारु एक पायँ डारी किन कैसे !

आप कौन हैं ?

आर्य—मैं आर्यक अहीर हूँ आपकी शरण आया हूँ ।

चारु—जी वही जिन्हें राजा पालक ने घोसीपुरे से पण्डित  
के घोघ रक्खा था ?

आर्य—जी हाँ ।

चारु—आये सौँह संयोग वस तुम चढ़ि मेरे यान ।  
शरणागत तजिहौं नहीं जायँ मेरे घर प्रात ॥

( आर्यक हर्ष जनाता है )

चारु—वर्द्धमानक ! वेडी उतार तो ।

वर्द्ध—बहुत अच्छा । ( वेडी उतार कर ) जी, वेडी  
उतार दी ।

आर्य—आपने स्नेह की कडा वेडी पहना दी ।

मैत्रेय—यह तो कूटे । अब हर्म भागै ।

चारु—चुप ।

आर्य—वरदत्त जी मैं आपकी भलमसी सुन कर बहली  
चढ़ा था ।

चारु—आपने बडी कृपा की ।

आर्य—अब आज्ञा दीजिये तो जाऊँ ।

चारु—जाइये ।

आर्य—तो उतरता हूँ ।

चारु—जी उतरिये न, आप की वेडी अभी कटी है इससे आप  
से भागा न जायगा श्वर से बहुत लोग आते जाते हैं बहली  
किसी को खटका न होगा बहली ही पर जाइये ।

आर्य—जो आप की इच्छा ।

चारु—मिजिये सुख सौँ हितन सौँ,

आर्य—

तुम सम हित को ताह

रग रग के फूल सजी सोहै यह धरती ।  
 फूल भार सों डार गिरीमी मानहुँ परती ॥  
 तरुफुनगी सों बैल जखौ नीचे को जटके ।  
 कटहल के फल सरिस तरुन पै धनार मटके ॥

घिट—आइये इस परधर की चौकी पर बैठें ।

सस्था—बैठिये । ( घिट के माथ बैठ जाता है ) अजी, हम  
 आज भी घसतनेना को सोच रहे हैं । बुरे की वान पेसी हमारे  
 मन से निकलती नहीं ।

घिट—( आपही आप ) इतना झिड़का गया और अब भी नहीं  
 भूलता ।

पाय अनादर तियन सों नीच-काम बढ़ि जात ।

रुजन मन नहि होय कै होय थोरही जात ॥

सस्था—अजी, हमने स्थावरक से कभी कहा था कि बहली  
 ले कर आ, अभी तक नहीं आया । हम बड़ी भूख लगी है, दुपहर  
 हो गई, पैदल भी नहीं चला जायगा, देखिये, देखिये,

विगड़े धानर सरिस रधि नभ मै लखो न जाय ।

जरी जानि महि सुत मरे ज्यों दुरयोधनमाय ॥

घिट—ठीक है ।

मुख मे गिरावत घास बैठे झाँह पसु अँघ्रात है ।

धनहरिन प्यासे नीर तातो पियत नहीं अघात है ॥

पुरराह में काँऊ चलत नहिं भइ धूप अब पेमी कड़ी ।

नजि जरत धरती झाँह में कहुँ है अवनि बहली खडी ॥

संस्था—सूरज की किरनें पड़ीं, मेरे सिर यह आय ।

पड़ी चिड़ियां पेड़ की डारन रहीं लुकाय ॥

घुस बैठे घर माँहि सब देनि कठिन यह घाम ।

व्याकुल हाँफत हैं सकल कोउ विधि पितवत याम ॥

अजी, अभी तक लौंडा नहीं आया । अच्छा तो जी बहलाने  
 के लिए कुछ गाऊँ ( गाता है ) सुना आपने, जो मैंने गाया ।

घिट—क्या कहना है, आप गधर्व हैं !

विट—किस से ?

सस्था—अपने मन से ।

विट—अच्छा खडा है ।

सस्था—बेटे मन । राजा मन । यह सन्यासी जाय कि ठहरै ।  
( आपही आप ) न ठहरै न सांस ले । ( प्रकाश ) अजी हमने  
अपने मन से पूँछ लिया, हमारा मन यह कहता है—

विट—क्या कहता है ?

सस्था—न जाइ न ठहरै ; न ऊपर की सांस ले न नीचे का  
यहीं पड़के मरे ।

सन्या—जय बुद्ध जी की ! तुम्हारी सरन ।

विट—जाने दीजिये ।

सस्था—अच्छा एक काम करके ।

विट—कौन काम ?

सस्था—पुखरी का कीचड़ फेंक दे, पानी मैला न होने पावे ।  
पानी बटोर के कीचड़ फेंक दे ।

विट—पैसे भी मूर्ख ससार में होते हैं ।

उलटे ही समझें सदा पाथरखड्गकार ।

मूढत्व तरु से मांस के बढ़घत घरतीभार ॥

सन्या—( हाथ से शाप देता है )

सस्था—क्या कहता है ?

विट—आपके गुन बखानता है ।

सस्था—सुन वे सुन ।

( सन्यासी बाहर जाता है )

विट—देखिये घाग की शोभा देखिये,

मोहीं तरधर घाग में धरि फलफूल अघोर ।

जपदानी गाढ़ी जता जिनके चारहुँ ओर ॥

जागत आपति से बचे अन्धे नृप के राज ।

सुग भोगत नारिनसहित मानहुँ पौर समाज ॥ सु

संस्था—आप ठीक कहते हैं,

स्था—सरकार वेज मर जायेंगे, वहली टूट जायगी, में भी मर जाऊँगा ।

सस्था—अवे, हम राजा के साले हैं, वैज मरेंगे और लजेंगे । हलो टूटेगी और बनधालेंगे, तू मरेगा और रथवान रख लेंगे ।

स्था—सब हो जायगा में ही न रहूँगा ।

सस्था—अवे सब नस जाय । जिधर दीवार गिरी है उधर ही ले आ ।

स्था—टूट री वहली, मेरो रे वैजो, गोसइया भी तुम्हारा री । और वहली आजायगी । अच्छा तो कइ हूँ ( घुम कर ) धरे ही टूटी । सरकार वहली आ गई ।

सस्था—अवे, न वेज टूटे न रस्ती मरो न तू मरा ?

स्था—नहीं सरकार ।

सस्था—आइए वहली खेले, नहीं आप ही देखै आप बड़े गुरु आप का धादर है, आप आगे चतिये, आप पहिले सवार जेप ।

विट—बहुत अच्छा ( चढ़ना चाहता है ) ।

सस्था—ठहरो, ठहरो तुम्हारे आप की वहली है जो आगे जाये । वहली हमारी है, हम पहले चढ़ेंगे ।

विट—आप ही ने तो कहा था ।

सस्था—जो हम कहें भी तो तुम्हें यह कहना चाहिये कि सर-  
र आप सवार हों ।

विट—आप सवार हों ।

सस्था—अच्छा हम सवार होते हैं । घेटे स्थावरक ! वहली आओ ।

स्था—( घुमा कर ) सरकार सवार हो जायें ।

सस्था—( वहली पर सवार होना चाहता है,  
देख डरता हुआ उतर कर विट के गले लग



संस्था—गधर्ष न हूँ तो फिर क्या हूँ ?

घब औं हींग समेत, मोथा जीरा सोंठ गुड़ ।

सेयों तौ केहि हेत, होत सुरीले हम नहीं ॥

अजी लौंडा अब भी नहीं आया ?

षिट—घबराइये न, आता होगा ।

( वहली लिये स्थावरक आता है )

स्था—मैं बहुत डरता हूँ, दुपहर हो गई, राजा के साले बहुत खफा होंगे । जल्दी चल ! जल्दी !

वसत—हाय, हाय, यह तो बर्द्धमानक की बोली नहीं है । य क्या बात है ? क्या चाणदत्त जी ने वहली के बैलों की रपट बचाने की किसी और की वहली भेज दी है ? मेरी दाहिनी आँख फड़क रही है, कुछ अच्छा नहीं लगता ।

संस्था—( रथ की घडघड़ाहट सुन कर ) अजी वहली आ गई ।

षिट—आपने कैसे जाना ?

संस्था—आप देखते नहीं बूढ़े सुअर को नाई घुरघुरा रही है ।

षिट—( देख कर ) जो हाँ वह आई ।

संस्था—घेटा स्थावरक आ गए ।

स्था—जी हाँ ।

संस्था—वहली भी आई ?

स्था—जी हाँ ।

संस्था—बैल भी आये ?

स्था—जी हाँ ।

संस्था—तुम भी आये ?

स्था—हाँ सरकार हम भी आये ।

संस्था—अच्छा वहली भीतर ले आ ।

स्था—किधर से ?

संस्था—जिधर दीवार गिरी है ।

( अलग वसन्तमेना से ) वसन्तमेना ! यह तुमने क्या किया ?

पहिले मान जनाय फिर लालच कै माय उस ?

वसन्त—न । ( सिर हिल्लाती है )

षिट—मिली आपही आय, यही नीच पातुरपना ॥

हमने तुमसे पहले ही कहा था ।

नीका लगे कि ना लगे मिल्लु गनि सउहि समान ॥

वसन्त—बहली के घोरो मे यहाँ आ गई, आप की सरन हूँ ।

षिट—डरो नहीं हम देखो इसे घोरा देते हैं ( सस्थानक के

पास जाता है ) अजी, इसमें सचमुच राक्षसी है ।

सस्था—राक्षसी है तो तुम्हें क्या नहीं मूला और चोर है तो

तुम्हें क्या नहीं प्या गया ।

षिट—क्या कीजियेगा जान के ? यहाँ से नगर तक बागही

है पैदलही चले चलें तो क्या बुरा ।

सस्था—तो क्या हागा ?

षिट—योड़ा सा व्यायाम हो जायगा, बैलों की मेहनत बच

जायगी ।

सस्था—अच्छा स्थावरक ! बहली लेजा । नहीं, नहीं हम

देगताओं बान्हेना के आगे पाँव पाँव चलेंगे । नहीं, नहीं बहली

पर जायगे जिसमें जाग दूर ही से देख कर कहें कि राजा के साले

जा रहे हैं ।

षिट—( आपही आप ) इस घिप की औपधि बड़ी कठिन

है, अच्छा तो यो कहें ( प्रकाश ) अजी वसन्तसेना आप से मिलने

आरं है ।

वसन्त—( कान पर हाथ धर के ) राम, राम, यह आप क्या

कहते हैं ।

सस्था—( हर्ष मे ) अजी हम से, ऐसे बली पुरुष

वासुदेव से ?

षिट—जी हाँ ।



इषा—अबे न करैगा ? ( स्थावरक को पीटता है ) ।

॥—सरकार मारिये चाहै पीटिये, अकाज न करूँगा ।

कर्मन जो फल पाय भयो जन्म को दास मैं ।

अब सोइ पाप बढ़ाय भोज न लेहौ गति बुरी ॥

सन्त—विट, जी तुम्हारी सरन हूँ ।

ट—अजी क्षमा कीजिये, घाह स्थावरक घाह !

यद्यपि दरिद्र दास यह अर्द्ध ।

पुण्य पाप यह मोचत रहई ॥

धनी कुलीन यही कर स्वामी ।

गनै न कलुक कुमारगामी ॥

ऐसे कर्म आगि किन लागत ।

बढ़ै अयोग योग जो त्यागत ॥

और का यह विषम दैव मन भाषा ।

तुमहि स्वामि यदि दास बनाषा ॥

यह न खात जो धान तुम्हारा ।

तुम पर करै न यह अधिकारा ॥

सस्था—( आपही आप ) यह बुड्ढा तो अधरम से डरता है

लौंडा परलोक से, हम ठहरे राजा के साले, हमे किस का

है ? ( प्रकाश ) अबे लौंडे जा तू फर्हीं अलग आइ में बैठ ।

षिट—पागल तो नहीं हो गये हो ?

सस्था—यह बुद्धा तो अधरम को डरता है, अच्छा स्थावरक से कहूँ। वेटे स्थावरक ! हम तुम्हें सोने के कड़े बनवा देंगे।

स्था—मैं पहन लूँगा।

सस्था—हम तुम्हें सोने की चौकी बनवा देंगे।

स्था—मैं उस पर बैठूँगा।

सस्था—जो भोजन खाने में बचैगा सब तुम्हो को देंगे।

स्था—मैं सब खा जाऊँगा।

सस्था—सब चेलों का चौधरी कर देंगे।

स्था—मैं भी हो जाऊँगा।

सस्था—अच्छा तो हमारी बात मानो।

स्था—सरकार सब कुछ करूँगा, अकाज न करूँगा।

सस्था—अकाज की गध भी नहीं है।

स्था—तो कहिये।

सस्था—यमन्तमेना को मार डाल।

स्था—सरकार छमा करो, मेरेही गधेपन से यह बेवारी यहाँ आई है।

सस्था—धरे लौंटे ! तू भी हमारे कहने में नहीं है।

स्था—सरकार मेरे हाथ पैर के मालिक हैं, पाप पुण्य के नहीं।  
क्षमा कीजिये, मैं बहुत डरता हूँ।

सस्था—अबे, हमारा नौकर होकर किस को डरता है।

स्था—सरकार परलोक को।

सस्था—कौन है परलोक।

स्था—सरकार भले बुरे कामों का फल।

सस्था—भले कामों का फल कैसा होता है ?

स्था—जैसे आप हैं सोने से लसे।

सस्था—और बुरे काम का कैसा होता है ?

स्था—जैसे मैं और का दिया खाता हूँ। मैं अकाज न करूँगा।

धोषा देने के लिए अब यह करूँ (फूल चुन कर प्रसन्तसेना से)  
 भाषो धम तमेना !

बिट—अरे, अब तो इस का मन कुछ और हो गया। अब  
 उहरे का कुछ काम नहीं। (बाहर जाता है)

सस्या—उन देहों करिहों तोहि प्यार।

हुइ हो सिर से चरन तुम्हार ॥

तऊ मोहि तुम जात बिहाई।

सेवक सन इतनी निदुराई ?

बसन्त—(आपही आप) इसमें क्या कहना है (सिर नीचा  
 कर के)

नीच दुष्ट में जानति ताही।

फ्यों धन लोभ दिखावत माही ॥

शुद्धचरित सुन्दर सय अज्ञा।

कमल तजै नहिँ कबहुँक भृङ्गा ॥

निर्धन हूँ कुलशीलयुत सेइय जतन समेत।

जन सुयोग सँग नेह करि पातुर जग जस लेत ॥

आर आम के पास रह कर अब ढाँल के पास कैसे रहूँ ?

सस्या—हरामजादी ! दरिद्र चारुदत्त को आम बतानी है और  
 न ढाँल कहती है ! टैसू भी नहीं ! तू हम को गाली देने में भी  
 चरुदत्त का नाम नहीं भूलती।

बसन्त—जो मन में बसा है वह कैसे भूलेगा ?

सस्या—आज तुम्हें और तेरे मन में रहनेवाले दोनों का  
 पता है। दरिद्र चौधरी की चाहनेवाली, खड़ी रह।

बसन्त—कह फिर कह, मैं इस में अपनी बडाई समझती हूँ।

सस्या—अब जोड़ी का बच्चा चारुदत्त तुम्हें बचाये।

बसन्त—लेखते तो बचाते।

सस्या—  
 कै वह द्रोपदपूत जटाऊ।

रभासत राज ॥

( मोच कर ) अञ्जा, अब मैं दूमरा उपाय करूँ । इस बुद्धि ने सिर हिला कर वसन्तसेना से कुत्र कहा है अब इस को हरा कर वसन्तसेना को मारूँ । ( प्रकाश ) अजी आप क्या कहते हैं ! हम इतने बड़े कुज के जन्मे ऐसा अकाज करेंगे । यह तो हमने इस लिये कहा था जिस में यह मान जाय ।

विट— ऊँचे कुज से होय क्या गील बड़ाई देत ।  
बाढ़ें उपजत हैं घने काटे अच्छे खेत ॥

सस्था—अजी, यह तुम्हारे सामने लजाती है, तुम चले जाओ । इस लौंढे को हमने अभी कहा था कि अलग जा, ऐसा न हो भाग जाय, उसे पकड़ लाइये ।

विट—( आपही आप )

नहि पातुर मूरत पह जाती ।  
मो कह सौह देखि सकुचाती ॥  
करौ एकत दूर में जाई ।  
रतिरस बढ़त अकेलहि पाई ॥

( प्रकाश ) अब जाता हूँ ।

वसन्त—( उसको आँचल पकड़ कर ) मैं तो आपही की सरन

विट—वसन्तसेना ! डरिये नहीं । संस्थानक जी !  
हम आपको चले जाते हैं ।

सस्था— हमारे हाथ में धाती है ।

( चल कर ) अजी, ऐसा न  
। इसे मार डाले, जाओ भाड़  
( भाड़ में पड़ा हो जाता है )  
इसे मारूँ । ऐसा तो न हो  
में होकर स्यार ऐसा

धोखा देने के लिए अब यह करूँ ( फूल चुन कर वसन्तसेना से )  
आओ वसन्तसेना !

विट—अरे, अब तो इस का मन कुछ और हो गया । अब  
उहरने का कुछ काम नहीं । ( घाघर जाता है )

सस्था—धन देहीं करिहो तोहि प्यार ।

छुइ हौं सिर मेचरन तुम्हार ॥

तऊ मोहि तुम जात विहाई ।

सेवक सन इतनी निदुराई ?

वसन्त—( आपही आप ) इममे क्या कहना है ( सिर नीचा  
कर के )

नीच दुष्ट मे जानति ताही ।

क्यों धन लोभ दिखावत माही ॥

शुद्धचरित सुन्दर सब अज्ञा ।

कमल तजे नहीं कबहुँक भृङ्गा ॥

निर्धन हूँ कुलशीलयुत सेइय जतन समेत ।

जन सुयोग सँग नेह करि पानुर जग अस लेत ॥

और आम के पाम रह कर अब ढाँख के पास कैसे रहूँ ?

सस्था—हरामजादी ! दरिद्र चारदत्त को आम बताती है और  
तुम्हें ढाँख कहती है ! देखू भी नहीं ! तू हम को गाली देने में भी  
चारदत्त का नाम नहा भूलती ।

वसन्त—जो मन मे बसा है वह कैसे भूलेगा ?

सस्था—आज तुम्हें और तेरे मन मे रहनेवाले दोनों का  
मारता हूँ । दरिद्र चाँधरी को चाहनेवाली, खड़ी रह ।

वसन्त—कह फिर कह, मैं इस में अपनी बड़ाई समझती हूँ ।

सस्था—अब लोहो का बच्चा चारदत्त तुम्हें बचाये ।

वसन्त—देखते तो बचाते ।

सस्था— कै वह द्रोपदपूत जटाऊ ।

चानक कै रभासुत राऊ ॥



बुधमार त्रिशकु घह होई ।  
इन्द्र बालिसुत कै है सोई ॥

और यह भी क्या देखेंगे ?

भारत में सीता हनी जैसे चानकराज ।  
द्रुपदी हनी जशोड ज्यों मारौं तोकहँ आज ॥

( मारता है )

वसन्त—हाय ! अम्मा कहीं हो ! हाय चारुदत्त जी ! मेरा मन की आस मनही में रही । अब मैं मारी जा रही हूँ । अब जोर से चिल्लाऊँ । नहीं, नहीं वसन्तसेना को चिल्लाना बड़े लाज की बात है । चारुदत्त जी को प्रणाम !

सस्था—अब भी हरामजादी उसी पाजी का नाम लेती है ( गला घोट कर ) मर हरामजादी ।

वसन्त—जै चारुदत्त जी की !

सस्था—मर हरामजादी ( उसका गला घोट कर मार डालता है, वसन्तसेना गिर पड़ती है ) ( फिर हर्ष से )

यह दोष को मटकी सरिस अरु नीचपन की कोठरी ।  
तेहि रमन के हित काल के वस इहाँ आई यहि घरी ॥  
कैसे बखानो सूरता यह निज प्रचंड भुजान की ।  
यह मरिगई बिन सांस भारत माहिँ जैसे जानकी ॥  
मैं चहत, यह मोहि चहति नहिँ, यहि हेत यह मारी गई ।  
गर घोटि सूने वाग में डरघाय फटकारी गई ॥  
जीषन अकारथ माय मोरी द्रोपदी को, वापको ।  
जो लख्यो नार्हा पुत्र के निज प्रबल तेज प्रताप को ॥  
वह डोकरा आता होगा ( अलग हटकर खड़ा हो जाता है )

( स्थावरक के साथ घिट आता है )

घिट—स्थावरक को तो बुला लाया, अब सस्थानक हूँ । अरे, राह में पैरों के चिन्ह से जान पड़ता है कि खत्री को मार डाला । अरे पापी ! तूने पेसा अकाज

किया ? तुम पापी के देखने से हम लोगो को भी पाप लगेगा ।  
कदाचित् जिस बात की मुझे शङ्का हो रही है वह भूठी निकले ।  
मगवान सब कुशल करें । ( सस्थानक के पास जाकर ) हम  
स्थावरक को बुला लाये ।

सस्था—विट्जी आप भले आये । घटे स्थावरक, तुमभी  
भले आए ।

स्था—जी हाँ ।

विट्—हमारी थाती दो ।

सस्था—कैसी थाती ?

विट्—वसन्तसेना ।

सस्था—गई ।

विट्—कहाँ गई ।

सस्था—आप के पीछे ही तो ।

विट्—( शका से ) उधर तो नहीं गई ।

सस्था—तुम किधर गये थे ।

विट्—पूरव ।

सस्था—वह ता दम्बिन गई ।

विट्—हम भी तो दम्बिन गये थे ।

सस्था—अजी वह उत्तर गई ।

विट्—तुम ठोक ठोक नहीं घतलाते, हमारे मन में बड़ी

शका होती है ।

सस्था—तुम्हारे सिर अपने पैर की सौंह हमने उसे मार डाला ।

विट्—( दुख से ) क्या सचमुच तुमने उसे मारही डाला ?

सस्था—हमारी बात का विश्वास न हो तो राजा के साले

सस्थानक को उहादुरी देख लो ।

विट्—हाय, हाय ! बड़ा अनर्थ हुआ ( वेसुध होकर गिर

पड़ता है ) ।

सस्था—अरे ! विट् जी वेसुध गये ! उठिये उठिये ।

स्था—हाय मैंने पिना दूखे सुने यहली में जाके उन्हें पहले ही मार डाला था ।

विट—( सांस लेकर करुणा से )

शील सनेह की नीर भरी सरि सौ रति आनही देस सिधारी  
 छा ! अति सुन्दरि भूपनहँ को दई जिन गोभा स्वदेह में धारी ॥  
 शील स्वभाव की मानो नदी, हमसे जनकी तुम पालनहारी ।  
 रूप को सौदा भरी उजरी यह हाय ! मनोज की आज वजारी ।  
 ( आँखों में आंसू भर ) के हाय !

हे पापी तैं काह विचारा ।

तैं पुरश्चियहि दोष विन मारा ॥

( आपही आप ) अरे ऐसा न हो यह पाजी यह पाप मेरे  
 सिर ठोंके तो अब यहाँ से चल दूँ । ( चलना चाहता है, सस्थानक  
 उसे पकड़ लेता है )

विट—दूर हा, हमें मत छुओ हम जाते हैं ।

सस्था—अरे, वसन्तसेना को मारके कहीं भागे जाते हो  
 हम पेमे अनाथ हो गये ।

विट—सिड़ी हुआ है ?

सस्था—सौ रूपये तोहि देइहौ अन्न वस्त्र के साथ ।  
 ठोंका यह अपराध तुम और कोऊ के माथ ॥

विट—दूर हो, तू अपने ही पास रख ।

स्था—राम राम !

सस्था—( हँसता है )

विट—हँसु जनि, छूटै आज से सग हमार तुम्हार ।

धिक है पेसी प्रीति को जेहि थूकै ससार ॥

होय न फिरि यहि जनम में कबहुँ तुम्हारो सग ।

त्यागत दुटी कमान सम तुमहि होत गुनभग ॥

सस्था—अरे आओ आओ इस पुखरी में हम तुम खेलें ।

विट—रहे पतित जौलौ नहीं, तौलों सेवत तोहि ।

जान्यो पुरजन पतित सम नीच सरिस नित मोहि ॥

तैं मारी तिय मैं रहौ कैसे तेरे सग ।

आधे दृग तोहि तिय जरौ डर घस कांपत अग ॥

करणा मे ) वसन्तसेना ।

पातुरकुल जनि होय फिरि सुन्दरि जन्म तुम्हार ।

जमौ ऊँचे घश में जाके चरित उदार ॥

सम्या—हमारे बाग में वसतसेना को मार के कहाँ भागा जाता है ? चल हमारे घटनोई के सामने अपनी जघाव-देही कर ।

विट—दूर हो पाजो ( तलवार खींच लेता है ) ।

सम्या—( डरता हुआ पिड्ड कर ) अरे डरता है तो जा ।

विट—( आपही आप ) यहाँ रहना ठीक नहीं, जहाँ धार्यक शक्ति हैं वहाँ में भी चलूँ ।

( बाहर जाता है )

सम्या—जा भाड में जा । अवे लोडे हमने कैसा काम किया ?

स्या—सरकार बहुत ही बुरा किया ।

सम्या—अवे फ्या कहता है बुग किया कि अच्छा ( अपने घने उतार कर ) यह ले और इन्हें पहिन, जब हम इन्हें पहनते तभी तुम भी पहनना ।

स्या—सरकार, यह गहने आपही के अच्छे लगते हैं, मे इन्हें के क्या करूँ ?

सम्या—अच्छा तो जा बहली ले के महल के आगे ठहर, हम भी आते हैं ।

( बाहर जाता है )

स्या—बहुत अच्छा ।

सम्या—विटराम तो अपना ही जो बचाने को भाग गये तोहि को कोठे पर बंद करूँ नहीं तो चाल खुल जायगी । अब चलूँ । नहीं देख लूँ मर गई कि फिर मारूँ । नहीं इस में सिस नहीं । अन्व तु डुपट्टे से ढाँक दूँ । अरे नहीं नहीं

इस पर मेरा नाम छपा है कोई पहचान लेगा। अजी सूखी पत्तियों के ढेर में छिपा दूँ। ( छिपा कर सोच कर ) अमी कचहरी जाके मुकदमा कायम करूँ कि गहनों के लिए चौधरी चारुदत्त ने हमारे पुष्पकरड बाग में जाके वसन्तसेना को मार डाला।

करौ कपट सोइ नास अब चारुदत्त कर होय।  
पेसे अच्छे नगर में पशुहु न मारे कोय ॥

तो अब चलो ( कुछ चलकर देखकर ) अरे! जिधर जाते हैं उधर हो यह पाजी योगी गेरुआ घस्र लिये आता है। मैंने इसे बाहर निकाल दिया था, पेसा न हो मुझे देख के यह सब से कह दे कि इसी ने वसन्तसेना को मारा, तब कैसे भागूँ ( डेरकर ) जिधर दीवार गिरी है उधर ही फाँ जाऊँ।

लका नगरी को चलत फाँदि हनूमतशैल।  
जैसे गयो महेन्द्र कपि भूपताल की गैल ॥

( बाहर जाता है )

( जल्दी से योगी आता है )

योगी—मैं ने अँचला तो फाँच लिया अब इसे सुखाऊँ कहा पेड़ की डाल पर डाल दूँ, ऊँ हैं इस पर बन्दर हैं, फाड़ डालगे भुई में पसार दूँ, ऊँ हैं गर्द बहुत है मैला हो जायगा। कहा सुखाऊँ? ( देखकर ) सूखी पत्तियों का ढेर लगा है इसी प पसार दूँ ( अँचला पसार देता है ) जय बुद्धकी! ( बैठ जाता है ) अच्छा तो अब भजन गाऊँ ( गाता है ) सच तो यह है कि जब तक उस उपासिका से उरिन न हो जाऊँ जिसने जुआ क हाथ से दस मोहर देकर मुझे छुड़ाया था तब तक मे धर्म कर्म सब व्यर्थ है, मैं तो उस के हाथ विका सा ( देख कर ) अरे! यह पत्तियों के नीचे कौन साँस रहा है?

भीजे अँचलानीर से लू के सूखे पात ।

पत्नी से पानी परे फूलि फूलि उठि जात ॥

( वसतसेना होश में आकर अपना हाथ निकाल देती है )

योगी—अरे, यह तो सोने के गहने पहने स्त्री का हाथ निकला । अरे, दूसरा भी है । हमने तो यह हाथ कहीं देखा है, वही तो है जिसने हमें अभय किया था, अच्छा अब देखें । ( पत्ते हटाकर देखता है ) वही उपासिका तो है ।

( वसतसेना पानी मांगती है )

योगी—अरे पानी मांगती है, बाघली बड़ी दूर है, क्या करूँ, तो यही अँचला इस के मुँह में निचोड़ दूँ ।

( वसतसेना उठ बैठती है, योगी अपने कपड़े से हवा करता है )

वसन्त—आप कौन हैं ।

योगी—उपासिका, भूल गई ? तुमने मुझे वस मोहर देकर माल जिया था ?

वसन्त—आप को मैंने देखा तो है पर जो आप कहते हैं उस का मुझि नहीं, मेरा चित्त ठिकाने नहीं ।

योगी—उपासिका, यह क्या हुआ ?

वसन्त—पातुर की गति ।

योगी—उपासिका, उठो इस डाल के पकड़ लो ।

( डाल झुका देता है वसन्तसेना उठ खड़ी होती है )

योगी—इसी मठ में मेरी गुह्यदिन रहती है, चलो धीरे चल कर बैठो; जब जो अच्छा हो जाय तो घर चलना, चलो धीरे धीरे चलो ( चलता है ) अरे हटो भाई हटो, यह जघा स्त्री है और मैं योगी, इसके साथ हूँ तो भी मेरा धर्म शुद्ध है ।

सजम सों निज धम किये कर मुए इन्द्रिय जोए ।

दाकिम ताके क्या करै किये स्वर्ग सिधि मोए ॥

( दोनों बाहर जाते हैं )

## नवाँ अंक

[ स्थान—कचहरी ]

( जोधनक आता है )

जोधन—सरकार का हुकुम है कि कचहरी में जल्दी से इजलास ठीक करो, तो कचहरी चलूँ। (चल कर) यही तो है कचहरी, सब ठीक कर दूँ। सब साफ हो गया तो अब जाकर इत्तिला कर दूँ (घूम कर देख कर) अरे यह पाजी राजा का साला यहीं आ रहा है इसके आगे से हट जाऊँ। (अलग खड़ा हो जाता है)

( उजले कपड़े पहने सस्थानक आता है )

सस्था—

पानी जल औ सलिल नहाय ।

बाग वगीचा मे विरमाय ॥

बैठा नारि तियन के सग ।

गवर्वन से सोहत अग ॥

गाँठि कवहुँ जूरा कवहुँ कवहुँक कूटे केस ।

हम राजा के सार का रग रग का भेस ॥

बहुत दिनों पर मुझे कमल के उठे के कीड़े की नाई राह मिली तो अब किस को अपनी चाल से गिराऊँ (सोच कर) हाँ, हाँ, दरिद्री चारुदत्त को गिराना चाहिये। वह ऐसा कगाल है कि उसको जो कलक लगाऊँ सब लग जायगा। अच्छा तो कचहरी चल कर लिपाऊँ कि चारुदत्त ने वसन्तसेना को मारा डाला। (चल कर देख कर) यही तो है कचहरी (फिर देख कर) इजलास तो सजा है जब तक हाकिम न आ जायें तब तब इसी दूष पर बैठा रहूँ (बैठ जाता है)

जोधन—(आगे देख कर) सरकार आ रहे हैं मैं भी उनको पाम चलूँ। (आगे बढ़ता है)

( मेठ और कायथ के बीच में हाकिम आता है )

हाकिम—मेठ जी, लाजा जी !

से० का०—जी ।

हाकिम—इसाफ विलकुल औरो के बस है और उनके भग  
का हाल समझना बहुत कठिन है ।

तजि न्याय झूठे दोष औरन नीच लोग लगावर्हा ।

पुनि क्रोध बस निज दोष हाकिम साह नहीं बतावर्हा ॥

दोऊ पक्षसन हूँ पुष्ट दोष नरेश का लागि जात है ।

यहि कठिन नीतिविचार, निन्दा सुलभ सदा लगत है ॥

तजि न्याय झूठे दोष जन करि कोप कबहुँ बतावर्हा ।

हूँ नष्ट सल्लन दोष निज व्यवहार में न जनावर्हा ॥

दोऊ पक्षदोष समेत तिन कहँ पाप नित लागि जात है ।

यहि कठिन न्याय विचार निन्दा सुलभ सदा लगत है ॥

स्योकि, हाकिम का

समुक्ति जाय छल कपट शास्त्र में राखै बोधा ।

हित अनहित सम गने करे कयहँ नहिँ क्रोधा ॥

वात चीत में चतुर धर्म में धरे लाभ अति ।

देखतही जनचरित देख उत्तर सोइ दृढ़ मति ॥

दुस देइ सठन, पालै निबल निपुन रहे व्यवहार में ।

नृपकोप नसारै जतन सन लखि सोइ न्यायविचार में ॥

से० का०—आप के गुनो में भी जो दोष बताये ता चाँदनी का

अपेरा कहता है ।

हाकि०—शोबनक, चलो अदालत के कमरे की राह बताओ ।

शो—यही है, आप लोग विराजें ( सब जाकर बैठ जाते हैं )

हा—बाहर जाके पुकारो जिस का बुद्ध दाया हो तो हाजिर हो ।

शो—बहुत अच्छा ( बाहर जाके ) जिस जिस का नालिश

फिरियाद करनी हों हाजिर हो ।

सस्या—( हर्ष से ) हाकिम आ गया ( अकड के चल कर )

अपनी हम यहादुर घासुदेव राजा के साले हैं हमारा मुकदमा है



गो—( घबराहट से ) अरे वापरे ! पहले इसी का मुकदमा होगा ! अन्धा आप ठहरिये, हम जाके इत्तिला कर दें ( हाकिम के पास जाकर ) सरकार ! राजा के साले एक मुकदमा लाये हैं ।

हा—अरे, पहले राजा के सालेही का मुकदमा है ? सवैरे जो सूर्यग्रहन लगे तो समझा जाता है कि किसी बड़े भारी भलेमानुस का नास होगा । शोधनक ! यह मुकदमा ही घुरा होगा । जाओ बाहर कह दो कि आज तुम्हारा मुकदमान होगा ।

शो—बहुत अच्छा ( सस्थानक के पास जाकर ) सरकार कहते हैं कि आज मुकदमा न सुना जायगा ।

सस्था—( क्रोध से ) हमारा मुकदमा क्यों न सुना जायगा ? न सुना जायगा तो हम अपने बहनोई राजा पालव से कहेंगे, अपनी बहिन से कहेंगे, अपनी माँ से कहेंगे और इस हाकिम का छुडवा देंगे ! दूसरा हाकिम आयेगा । ( बाहर जाना चाहता है )

शो—ठहर जाइये, मैं हाकिम से कह दूँ ( हाकिम के पास जाकर ) सरकार, राजा के साले यह कहते हैं कि " न सुना जायगा " इत्यादि ।

हा—यह गधा सब कुछ कर सकता है, जाओ कह दो कि आप का मुकदमा सुना जायगा ।

गो—( सस्थानक के पास जाकर ) आइये आप को घुला रहे हैं ।

सस्था—पहले कहा कि न सुना जायगा, अब कहता है कि सुना जायगा, हाकिम भी हम से डरता है, जो हम कहेंगे वह उसे मानना पड़ेगा । अच्छा तो चलें ( आगे बढ़ता है ) हम लोग अच्छे हैं, आप चाहें अच्छे रहें चाहें न रहें !

हा—( आप ही आप ) घाह, नालिश तो करने आये कैसी करते हैं । ( प्रकाश ) आइये बैठिये ।

मस्था—अजी, हमारा तो घर है जहाँ हमारा जी चाहिए  
 वहीं बैठेंगे । ( सेठ से ) यहाँ बैठेंगे ( शोधनक से ) नहीं यहाँ  
 बैठेंगे ( क्षत्रिम के सिर पर हाथ रटा कर ) नहीं हम यहाँ बैठेंगे ।  
 ( आसन पर बैठ जाता है ) ।

हा—आप का मुकदमा है ?

मस्था—हैं ।

हा—कहिये ।

मस्था—कान में कहेंगे ; हम ताड़ के बराबर बड़े कुल के हैं ।

पितु हैं राजा के मसुर हम राजा के सार ।

पितु के गज दमाद हैं नृप बहतोड़ हमार ॥

हा—हम जानते हैं

ऊँचे कुल से होय क्या शील बढ़ाई देत ।

घाटें फैलत हैं घने कांटे प्राड़े खेत ॥

आप मुकदमा कहिये ।

मस्था—कहते तो हैं हमारा कुछ कसूर नहीं हमारे बह-  
 नों ने प्युश होकर हवा खाने का सत्र वागो का वाग पुष्पकरड  
 वाग हम की दिया था, वहाँ हम नित सेर करने सुखाने सघारने  
 बढ़वाने कटवाने जाते हैं, वहाँ हमने सयोग से देया कि एक  
 सुगाई मरी पड़ी है ।

हा—आप ने जाना कौन थी ?

मस्था—हाँ हम सोने के गहनों से लसी नगर की शोभा  
 को कैसे न जानें ? किसी पाजी ने सूने वाग में जाकर धन के  
 धारन गजा घोट कर वसन्तसेना को मार डाला, मैंने नहीं  
 जानना कह कर फुरती से मुँह बन्द कर लेता है )

हा—वाह ! पहरेवालों की बड़ी भूल हुई । ( सेठ और कायथ  
 ) यह भी लिख लीजिये " मैंने नहीं " इस पर भी विचार  
 किया जायगा ।

कायथ—बहुत अच्छा ( लिख कर ) लिख लिया ।

सस्था—( आप ही आप ) अरे वाप रे, अरे जल्दी मे मैंने खीर के लड्डू पेसा अपने को बिगाड दिया ! अच्छा यह कहीं ( प्रकाश ) अजो हाकिम ! हम ने कहा कि हमने देखा, क्या गडबड करते हो ? ( लिखा हुआ पैर के अगूठे से पोंछ देता है )

हा—आप ने कैसे जाना कि धन के लिए मारी गई ?

सस्था—अजो, हम ने देखा कि गले मे कुछ नहीं था और जहाँ जहाँ गहने पहिने जाते हैं वह सब जगहें खाली थी ।

से० का०—ठीक है ।

सस्था—( आप ही आप ) बड़ी बात, मेरे जो मे जो अ गया ।

हा—दो बातों का विचार होना चाहिये ।

से० का०—क्या क्या ?

हा—एक धान्य के विचार से दूसरा अर्थ के विचार से धान्य का विचार मुद्दई मुद्दाले से करना चाहिए, अर्थ हम आप विचार लेंगे ।

से० का०—अच्छा तो पहिले वसन्तसेना की माँ के बुलाना चाहिये ।

हा—ठीक है, गाधनक, जाओ वसन्तसेना की माँ के बुलाना जाओ, उससे कह देना कि कुछ घबराने की बात नहीं ।

गो—बहुत अच्छा ( बाहर जाके पातुर को माँ के साथ आता है ) आइये वाई जी ।

सुदिया—मेरी लडकी अपने यार के घर अपनी जधानी का सुख भोगने गई और यह कहता है चलो तुम्हें हाकिम बुला रहा है, मेरे हाथ पाँव फूले जाते हैं और दिया थरथराता है । चलो मैया हाकिम कहाँ है ।

गोध—आइये ( दोनों चलते हैं ) इजलास यही है, आइये

बुद्धि—( आगे बढ़ कर ) आप लोग सुती रहें ।

हा—आइये, बैठिये । ( बुद्धिया बैठ जाती है )

सस्था—( आक्षेप से ) आई री कुटनी आई ।

हा—आप बसन्तसेना की माँ है ?

बुद्धिया—जी हाँ ।

हा—बसन्तसेना इस घर कहां गई ?

बुद्धि—यार के घर गई ।

हा—उसके यार का क्या नाम है ?

बुद्धि—( आपही आप ) हाय हाय, केली बातें पूछ रहे हैं ?

( प्रकाश ) ऐसी बातें और फोई पूछे तो पूँछ ले, हाकिम के पूँछने की नहीं है ।

हा—लाज का काम नहीं है मुकदमे में पूँछी जा रही है ।

से० का—मुकदमे में पूँछी जा रही है, कुछ दोष नहीं, कहिये ।

बुद्धि—अरे मुकदमा है तो सुनिये, वह जो सार्थघाह धिनय-दत्त के पोते, सागर दत्त के लड़के चारुदत्त नाम सेठो के चौक में रहते हैं उन्हीं के घर मेरी गैठी गई है ।

सस्था—सुना आपने, जिरिये, चारुदत्त के ऊपर मुकदमा है ।

से० का०—चारुदत्त अगर उस के यार हुये तो कौन दोष है ?

हा—ता भी चारुदत्त से पूँचना चाहिये ।

से० का०—ठीक है ।

हा—धनदत्त ! जिरिये बसन्तसेना चारुदत्तजी के घर गई थी । क्या चारुदत्तजी को भी बुलाना पड़ेगा ? इसमें हम क्या करें मुकदमा जुला रहा है । शोधनक ! जाओ चारुदत्तजी को बड़े आदर से जुला जाओ । घरराने न पायें, पढ़ना कि एक काम ऐसा आ पड़ा है कि हाकिम आपसे कुछ पूँछा चाहते हैं ।

शो—बहुत अच्छा ।

( घाहर जाकर चारुदत्त के साथ फिर आता है )

चार—( सोचकर )—

मेरे कुल अरु शील को जानत हैं नरनाह ।

दशा सोचि शका तऊ उपजत है मन मांह ।

( फिर तक से आपही आप )

गुतो भेद जो ताहि बचाषा ।

जां मेरी बहली चढ़ि आषा ॥

भेदिन भेद भूप सब पाषत ।

जो यहि बिधि मोहि पकरि घुलाषत ॥

फिर विचारने का कौन काम है कचहरी में चलूँ । शोधनक ।  
कहा हैं हाकिम तुम्हारे ?

गो—आइये ।

चार—( गड्ढा से ) यह क्या बात है ?

कौआ रोअत है एक ओरा ।

टेरत राजपुरुष करि सोरा ॥

फरकति बाईं आंखि हमारी ।

हिय डरपत लखि असगुन भारी ॥

गो—आइये, कुछ घबराने की बात नहीं है ।

चार—( चल कर आगे देख कर )

सूखे तरु पर काग यह वेठो रवि की ओर ।

मौ दिशि डारत वामदूग है कछु अनरथ घोर ॥

( फिर आगे देख कर ) अरे, यह साँप कहाँ से निकल आया ?

छिटके काजल रङ्ग मेरी दिसि नैन उठाषत ।

उजरे चारहु दांत खोलि निज जीभ लपाषत ॥

किये रोप वस कुटिल अग निज पेट फुलाषत ।

परो गैल में साँप हाय क्यो मो दिसि धाषत ॥

भोगी हैं धरती नहीं पद क्यों फिसलत जात ।

फरकति बाईं आंखिहू कांपत बाएँ गात ॥

यह पढ़ी एक ओर से रोषत चारहि धार ।

घोर मृत्यु के सगुन ए यहि मे नहीं विचार ॥

भगवान कुशल करे ।'

शो—आइये इजलास यही है, चले आइये ।

चारु—( चारा धोर देख कर ) कचहरी की शोभा भी निराली है ।

व्याकुल चलत दूत शख औ लहर सम,

चिन्ता में मगन मन्त्रि देखो नौर थीग से ।

वकवक करें घक सरिस चतुर लोग,

कायथ निहारैं बैठे भुजग वेपीर से ।

एक धोर भेदो खड़े नाक औ मगर सम,

हाथी घोड़े द्वार डोलैं हिमक शर्धार से ।

देहे मेहे नीति से विगारे तट रुग सौहैं,

राजा के विचारभौन नीरधि गभीर से ॥

( चल कर सिर में चोट लगने का भाष बताता हुआ ) यह दूसरा असगुन हुआ ।

सौहैं रोषत काग फरकति बाईं आंखि है ।

परो गैल में नाग कुशल करैं भगवान सब ॥

अज्ञ भीतर चलूँ ।

हा—यही चारुदत्त जी हैं,

उठी नाक मुख दृग विशाल सुन्दर द्विपेसे ।

चारुदत्त सेा करैं पाप कारन त्रिन कैसे ?

हाथी घोड़े गाय बैल नरकी यह रीती ।

अच्छे रूपहि सन स्वभाष की होय प्रतीती ॥

चारु—हाकिम साहब, प्रणाम !

हा—( घबराहट जनाते हुये ) आइये, आइये, जोधनक !

आपका आसन हो ।

शो—( आसन लाकर ) आइये विराजिये ।

( चारुदत्त बैठ जाता है )

सस्था—( क्रोध से ) आगया ये हत्यारे आगया ! क्यों जी यहाँ न्याय और धर्म होता है ? इस स्त्री मारने वाले हत्यारे को

आसन देते हो ? दे दो ! ( गर्व से ) अच्छा कुछ बात नहीं !

हा—चारुदत्त जी ! इस बुढ़िया की लडकी से कुछ मेल ब्योहार, यारी है ?

चारु—किस को ?

हाकि—इसकी । ( बुढ़िया को देखाता है )

चारु—( उठ कर ) बाई जो प्रणाम !

बुढ़िया—भैया जीते रहो ( आपही आप ) यही चारुदत्त जी हैं तो बेटी की जवानी सुफल हो गई ।

हा—चारुदत्त जी ! कहिये पातुर से आप की दोस्ती है ?

चारु—( लाज का भाव बताता है )

सस्था—लाज जनाये डर किये सकै नहीं छिपि पाप ।

मारी धन के हेत तिय ताहि छिपावत आप ॥

से० का०—चारुदत्त जी लाज छोड़ दीजिये, मुकदमा हो रहा है ।

चारु—( लाज से ) हम आप लोगो से क्या कहें, रडो से हम से मेल है, इसमें जवानी का दोष है ।

हाकि—बड़ा कठिन व्यवहार है छोड़ि दीजिये लाज ।

सच मे वार न लाइये छल को नाहीं काज ॥

लाज छोड़ दो तुमसे व्यवहार पूँछा जा रहा है ।

चारु—किस के साथ मुकदमा है ?

सस्था—( अकड़ कर ) मेरे साथ ।

चारु—तेरे साथ है तो बुरा है ।

सस्था—अरे हत्यारे ! तूने इतने गहनो से लसी बसतसेनिया को मारा अब छल कपट करके छिपा रहा है ।

चारु—क्या घेठिकाने को बातें कह रहा है ।

हा—सच कहिये, पातुर आप की आशना है ?

चारु—जी हाँ ।

हाकि—यसन्तसेना कहाँ है ?

चारु—घर गई ।

से० का०—कैसे गई, कय गई, अकेली गई, या किसी के साथ गई ?

चारु—( आपही आप ) क्या कहें कि चुपके से चली गई ।

से० का०—रुहिये, धोलिये ।

चारु—घर गई अत्र और हम क्या कहें ।

सस्या—हमारे पुष्पकरड वाग मं ले जाके उसे गला घोटके मार टाला और अब कहते हो कि घर गई ।

चारु—अरे क्या बकता है ।

ऊँचे उडत अकाश ज्यो चहापटा की छोर ।

भोगों नीरदनीर सों जोपे मुख नहीं तोर ॥

दोष लगावत भूठही उडी जाति है जोति ।

कमल सरिस हेमत के लगु मुखकी गति होति ॥

हाकि—( अलग )

तरै सिंधु गंविय हवा द्विमगिरि लेइ उठाय ।

चारदत्तमें दोष कोउ कैसे सकै लगाय !

प्रकाश ) चारदत्त भी कहाँ ऐसा अनर्थ कर सकते हैं ?

सस्या—आप को मुकदमे में किसी का पच्छन करना चाहिये ।

हाकि—अरे मूर्ख !

तू नीच हूँ श्रुति पढ़त तेरी जीभ क्यों नहि कटि गिरे ।

तू सूर दुपहर को लखत नहीं आखि तेरी क्यों फिरे ॥

तू हाथ डारत आगि में क्यों आँच लागि जरे नहीं ।

तू चारदत्तहि दोष देत है भूमि तोहि हरे नहीं ॥

चारदत्त जो ऐसा अकान कैसे कर सकते हैं ?

जिन मांग्यों जो दिन विचार सोइ तुरतहि दीहा ।

सिंधुहि रतनधिहीन निरा जलनिधि जिन कीन्हा ॥

गुनमगल की खानि परम सज्जन सो ऐसे ।

वैरिहु जोग न काज करे सो धन हित कैसे ?

सस्या—अरे क्या न्याय में भी पक्षपात होगा ?

मृ०—६



बुद्धिया—अरे पापी ! जब रात को धाती के गहने चोरी गये तब तो उन्होंने चारों समुद्रों का सार मोतियों का हार भेज दिया अत्र वह उन्हीं गहनों के लिये ऐसा अकाज करेंगे ? शय्य बेटी ! ( रोती है )

हाकि—चारदत्त जी ! वसन्तसेना पाँध पाँध गई कि वहली पर गई ।

चारु—हमारे सामने नहीं गई, हम नहीं कह सकते कि पाँध पाँध गई कि वहली पर गई ।

( मुँह चिगाड़े हुए वीरक आता है )

वीर—जात मारि अपमान कीन्ह मोरजो चदनक ।

सोचत भयो विहान कठिन बेर बाढ़ो हिये ॥

अथ कचहरी चलूँ ( धुस कर ) प्रणाम ।

हाकि—अरे, नगररत्ना का अधिकारी वीरक है ! वीरक क्यों आये ?

वीर—जब आर्यक वधन तोड़ कर भागा और मैं उसे हड़ते लगा तो मैंने देखा कि एक बद् वहली सड़क पर जाती थी । मैंने चदनक से कहा कि तुम तो देख चुके जाओ मैं भी देख लूँ इस पर उसने मुझे जात मारी सो मैं नालिश करने आया हूँ ।

हाकि—तुम जानते हो किसकी वहली थी ?

वीर—जो वहली हाँकता था उसने कहा था कि चारदत्त जी की वहली है और वसन्तसेना इस पर पुष्पकरड बाग को जाती है ।

सस्था—सुना आप लोगो ने ।

हाकि—यह ससि निर्मलज्योति असन चहत तेहि राहु अब ।

घारा मैली होति निकट करारा कटि गिरत ॥

वीरक ! अच्छा तुम्हारा न्याय पीछे होगा, बाहर सवार का घोड़ा है उस पर चढ़ कर अभी पुष्पकरड बाग चले जाओ और देखो वहाँ कोई स्त्री मरी पड़ी है ?

वीर—बहुत अच्छा ( बाहर जाकर फिर लौट आता है ) मैं  
 वहाँ गया था, मने वहाँ देखा कि एक स्त्री की लोथ स्यार और  
 गिद्ध खा रहे हैं ।

से० का०—तुमने कैसे जाना कि स्त्री की लोथ है ?

वीर—मे ने देखा कि उसके बाल और हाथ पाँव पड़े थे ।

हाकि—सत्कार के व्यवहार बड़े बड़े बड़े होते हैं ।

द्वान्नीन ज्यों करे विचारा ।

त्यो त्यो अरुक्तन यद् व्यवहारा ॥

न्यायविचार अहै टेंढे अति ।

कीच गाय सम होति बुद्धिगति ॥

चारु—(आपही आप )

रूपरत है जैसे मधुप खिला फून को देति ।

परति विपति चतुर्धर मे अनरथ होत निमेलि ॥

हाकि—चारुदत्तजी मच मच कह दो क्या बात है ।

चारु—जरी जो परगुन देखि वैरयस आंधर पाजो ।

परनिनास धिन लखे होय कयई नहिं राजी ॥

लहि ऊंचो पद भूँठ साँच जो कतु कहि उरै ।

है सोइ माननजाग, नहीं कोउ ताहि विचारै ?

इतनी ह नहिं कयई फीनि जो हम निठुराई ।

पूज नुनन के हेत खेचि फेँ लता नपाई ॥

भैंवरपैखरग दीर्घ केश नो पकरि पशारी ।

मारी धा के लाभ रोपती तरुनी नारी ?

मध्या—इसों जी हाकिम, तुम न्याय करनेमें भी पक्षपात करने

जो इस पापी चारुदत्त को आसन पर बैठाते हो ?

हाकि—जोधनक, उठा दो ।

( जोधनक चारुदत्त को आसन से उठा देता है )

चारु—विचार लीजिये जो बुद्ध आप दो कणा हो विचार

मिये ।

संस्था—( आप ही आप हर्ष से ) मैंने अपना पाप और के माथे ठोका, जहाँ चारुदत्त बैठा था वहाँ मैं भी बैठूँ ) चारुदत्त के आसन पर बैठ जाता है ) चारुदत्त ! देखो, देखो, हमारी और देखो, कह दो कि मेने मारा ।

चारु—हाकिम जी, ( “ जरै जो ” इत्यादि फिर पढ़ता है )

हाय मित्र मैत्रेय ! जात मैं व्यर्थहि मारा ।

हाय ब्राम्हणी ! विमल विप्रकुल जन्म तुम्हारा ॥

रोहसेन ! तुम हाय लग्यो नहि सकट मेरा ।

खेलखेलोनन माहि वृथा उपजै सुख तेरा ॥

हमने वसन्तसेना के पास उस की खबर लेने को और गाड़ के लिये जो उसने गहने दिये थे उन्हें फेरने के लिये मैत्रेय के भेजा था न जानै क्या कर रहा है ?

( फँट में गहने लिये मैत्रेय आता है )

मैत्रे—चारुदत्त जी ने मुझे वसन्तसेना के पास गहने फेर के भेजा था और कहा था कि वसन्तसेना ने रोहसेन को अपने गहने ठेके उसकी माँ के पास भेज दिया था सो उसके गहने फेर आओ, हम नहीं ले सकते, तो अब चलो वसन्तसेना के पास चलो । ( घूमके आकाश में ) अजी रेमिल जी आप क्यों घबराये हुये हैं ? ( सुन कर ) क्या कहते हैं चारुदत्त जी आज कचहर में बुलाये गये हैं । कोई होगा ऐसा वैसा काम तो पहले कचहर चलो । वसन्तसेना के घर पीछे जाऊँगा ( चल कर देरा कर यही तो है कचहरी ( भीतर जाकर ) भला हो आप लोगों का चारुदत्त जी कहाँ हैं ।

हाकि—यह क्या सड़े हैं ।

मैत्रे—क्यों भाई सत्र कुशल है ?

चारु—हो जायगी ।

मैत्रे—क्यों भाई तुम घबराये से क्यों हो, तुम यहाँ क्यों बुलाये गये हो ?

चारु—भाई, मैं पापी हत्यार नासि लोक परलोक सब ।  
नारी रतिअघतार वाकी यह कहि डारि है ॥

मैत्रे—क्या क्या ?

चारु—( कान में कहता है )

मैत्रे—यह कौन कहता ?

चारु—( सस्यानक को टेरा कर ) यही विचारे हमारे लिये  
काल उन कर हम से कहला रहे हैं ।

मैत्रे—(अलग चारुदत्त से) तो क्यों नहीं कह देते कि घर गई ।

चारु—भाई सब कुछ कहा, कौन सुने ?

मैत्रे—जिन्होंने बाग मन्दिर विहार बाजार तालाब कुओं मन्दिरों  
से उज्जैनी को सज दिया वह अत्र कगाल हो गये तो धन के  
लिये ऐसा अकाज करेंगे ? अरे राजा के साले, काण्णजी के  
पूत, पापों की गठरी, सोने से लसा सजा बन्दर ! कह मेरे सामने  
कह । जिन्होंने फुली लता को भी उल से खींच कर फूल नहीं  
तोड़े कि कहीं ऐसा न हो कि पल्लव टूट जाय, सो वह लोक  
परलोक दानों के विरुद्ध ऐसा काम करेंगे ! रह वे हरामजादे !  
ऐसे तेरा मन कुटिल है वैसी मेरी जाठी भी है, इसी से तेरी  
सोपड़ी अभी तोड़ता ह ।

मस्था—( क्रोध से ) देखिये, देखिये, हमारा दाया चारुदत्त  
पर है, हमारी सोपड़ी तोड़नेवाला यह कौन है ? चुप रह वे पाजी  
वर्ष चुप ।

मैत्रे—( लाठी उठाकर 'कह कह' फिर पढ़ता है )

मस्था—( क्रोध से उठ कर मैत्रेय को मारता है, मैत्रेय भी उसे  
मारता है, मैत्रेय की फोट ने गहने गिर पड़ते हैं )

मस्था—( गहने उठाकर फुरती से ) देखिये, देखिये, उसी  
बेचारी के गहने हैं ( चान्दत्त से ) क्यों, इन्हीं गहनों के लिये  
उसे मारा था ?

( हाकिम, सेठ और कायथ सिर नीचा कर लेते हैं )

चार—( अलग मैत्रेय से )

गठरी गहनन को खुली बड़े कुअपमर आय ।

गिरी त्रिधातावाम चस देहै हमे गिराय ॥

मैत्रे—अजी जो सच हाल है उसे क्यो नहीं कह देते ?

चार—भाई, छोटी है बुधि नृपति की मरम सके नहि जानि ।

सोई मारो जात, है कहत दीन जो वानि ॥

हाकि—हाय ! हाय !!

एीन बृहस्पति से कियो भौम विरोध प्रकास ।

धूमकेतु एक और यह प्रगट्या ताके पास ॥

से० का०—( देख कर बसन्तसेना की मा से ) बुड्ढी वाई यह तो हैं, यह गहनो को देखै घडी हैं कि दूसरे ।

बुद्धि—( देख कर ) घडी हैं । वह नहीं है ।

सस्था—अरी बूढी कुटनी ! आँख से पहचान लिया मुँह से कहती है नहीं है ।

बुद्धिया—दूर हो भूटे ।

से० का०—ठीक ठीक कहो, घडी गहने हैं कि नहीं ।

बुद्धि—गहने बहुत अन्धे बने हैं इसी से आँख नहीं हट्ये वह गहने नहीं हैं ।

हाकि—बूढी, इन गहनो को पहचानतो हो ?

बुद्धि—मैने कहा तो, पहचानती हूँ, सोनार ने कदाचित्त ही और बना दिये हो ।

हाकि—देखिये सेठ जी !

भूपन, लखि कछु सिद्धि न होई ।

वैसे और बनाये कोई ॥

जो भूपन नर चतुर बनावत ।

ताहि एक मे एक मिलावत ॥

से० का०—यह गहने चास्टत जी के होंगे ।

मे० का०—फिर किस के हैं ?

चार—इसी धुड़िया की लडकी के हैं ।

से० का०— उनसे कैसे अलग हुये ।

चार—कैसे ही हो गये होंगे !

से० का०—चारदत्त जी सच कहिए । देखिये —

सच से चुपही होय सचि पाप न जागई ।

सच के अचर दाइ सच न त्रिपाडय मूठ से ॥

चार—हम यह नहीं जानते कि गहने वही हैं कि दूसरे, हाँ इतना कह सकते हैं कि हमारे घर से आये हैं ।

सस्था—याग में जाके उमे मार डाला अब वार्ते बना के छिपाते हो ?

हाकि—चारदत्त जी सच कहिये ।

हम सत्र चाहत हैं नहा हौं हैं अनरथ घोर ।

परि है तुम्हरी पीठ पर कोड़े परम कठोर ॥

चार—धार्मिक कुल में ऊपजे हम सन होय न पाप ।

जो समुक्तो पापी हमै भरत न रोकिय आप ॥

( आपही आप ) अब बसतसेना नहीं है तो हमीं जी के क्या करै (प्रकाश ) अजी बात यह है—

मै पापी हत्यार नासि लोक परलोक निज ।

नारी रतिअघतार, बाकी यह कहि डारि हैं ॥

सस्था—मारी, तुम भी अपने मुँह से कहो कि मारी ।

चार—तुम तो कह चुके ।

सस्था—सुनिये साहब सुनिये, इस ने मारा है, अब तो मशय न रह गया, अब इस दरिद्री चारदत्त को देहद देना चाहिये ।

हाकि—शोधनक ! राजा के साले ठीक कहते हैं । सिपाहियो ! पकडो इसे ।

( सिपाही चारदत्तको पकड लेता है ) । ।

बुढ़िया—साहब मेरी भी सुनिये, 'जब चोर ले गया' इत्यादि फिर पढ़ती है, और मरी तो मेरी लड़की मरी, मेरा लड़का क्यों मारा जाय ? अब मुकदमा तो मुद्दई मुद्दाले में होता है, मैं मुद्दई हूँ मेरा दावा नहीं है, इन्हें छोड़ दीजिये ।

सस्था—दूर हो कुटनी तू कौन है ?

हाकि—बुड्डी तुम जाओ, सिपाहियो इसे निकालदो ।

बुढ़ि—('हाय वेटा हाय वेटा' कहती हुई और रोती हुई बाहर जाती है ।)

सस्था—मेने तो अपना काम कर लिया अब जाता हूँ ।

( बाहर जाता है )

हाकि—चारदत्त जो ! निर्णय करना हमारा काम है आगे महाराज मालिक हैं । तो भी शोधनक ! महाराज से विनती करो, मनुजी का वचन है—

अपराधी वाम्हन नहीं कबहुँ वचन के जोग ।

दीजे देशनिकारि तेहि भये सिद्ध अभियोग ॥

शोध—बहुत अन्धा ( बाहर जाकर फिर आकर आँखों में आँसू भर कर ) सरकार ! मैं महाराज के पास गया था, महाराज यह कहते हैं कि जिन गहनों के कारण बसतलेना मारी गई वेही गले में बांध सारे नगर में फिराकर ढँढोरा बजाते हुए दक्षिण के भस्मान में लेजाकर चारदत्त को सूली चढ़ा दो । जो कोई ऐसा काम करेगा उसे ऐसा ही दंड दिया जायगा ।

चार—राजा पालक ने कैसा बेसमझे वृत्ते हुकुम दिया है ।

परत आगि अन्याय के मत्रिन के बस भूप ।

नहि अचरज जो परत है घोर नरक के कूप ॥

ए कुसगुन है राजके उजरे काग समान ।

सहस्रन त्रिन अपराध के हरे जात जब प्रान ॥

भार्य मैत्रेय ! जाओ हमारी ओर से मा को प्रणाम कहना,  
—के रोहसेन को तुम्हों को सौंपता हूँ ।

मैत्रे—जड़ ही कट गई तो पेड़ कैसे रह सकता है ?

चारु—अजी ऐसा न कहो ।

गये लोक परलोक जो पुत्रहि तिनकी देह ।

मेरे पीछे कीजिये रोहसेन से नेह ॥

मैत्रे—भाई, हम तुम्हारे होके तुम्हारे बिना कैसे जियेंगे ?

चारु—अब हम झोडो जो कुछ तुम्हें करना हो रोहसेन के साथ करो ।

मैत्रे—अच्छा ।

हाकि—गोधनक इस घामहन को हटा दो ।

( गोधनक मैत्रेय को बाहर निकाल देता है )

हाकि—काई है चांडालों को हुजुम दो ।

( चारुदत्त और गोबनक को झोंड और सब बाहर जाते हैं )

गोध—आइये चारुदत्त जी !

चारु—( करुणा से ) मैत्रेय ? ( ' क्या आज ' इत्यादि फिर पढ़ता है ) ( आकाश में )

नीर तराजू आगि त्रिपटु से करो विचारा ।

छाय सिद्ध अभियोग हरहु तो जीष हमारा ॥

घामहन को तू यत्रत घात सुनि जो रिपुकेरी ।

पुत्र पौत्र के सग हुगति ते है तो तेरी ॥

चलो हम चलते हैं

( सब बाहर जाते हैं )

## दसवाँ अंक

[ स्थान—उज्जैन में बड़ी सड़क ]

( दो चांडालों के साथ चारुदत्त आता है )

दोनों चांडाल—तुम का करी विचार, बहुभा एकरन में चतुर ।

काटें मिर एग धार, शूल चड़ायेँ तुरत हम ॥

अरे हटो भाई ! यह चारुदत्त जी हैं,



हम जल्लाद दोऊ दिसि धारे ।  
 कनयर की माला गल डारे ॥  
 दिन दिन होत छीन यह कैसे ।'  
 घटत तेल के दीपक जेमे ॥

चारु—( दुख से ) परी धूरि सब देह पुनि भीगी दूग के नीर ।  
 पहिरे फूल मसान के चारिहु ओर शरीर ॥  
 बलि समान मोहि जानि कै रक्तगध तन लाग ।  
 कांघ कांघ करि चलत हैं मोहि भयन को काग ॥

दोनों चाँडा—हटो जी हटो ! क्या देखते हो,  
 सज्जनतरु यह कटत है कालकठोर कुठार ।  
 सुजनपट्टि सेवत रहे जाकी सुन्दर डार ॥

चल रे चारुदत्त, चल !

चारु—भाग्य में क्या क्या वदा है कोन कह सकता है ? देखो  
 मेरी क्या दशा हो रही है ।

देवीचदन को दिये अंग अंग थाप लगाय ।

आटा डारो देह पर पशु माहि दीन बनाय ॥

( आगे देख कर ) देरा लागो का चित्त भी कैसा बदलता है ?  
 ( कथना से )—

जे जन मेरी दशा निहारत । ते निज मनुज जाति विकारत ॥  
 मोहि न सकै कोऊ जतन बचाई । कहें स्वर्गसुख भोगहु जाई ॥

दोनों चाँडा—हटो जी हटो ! क्या देखते हो ?

तारासक्रम, सुजनवध गैया जबै वियाय ।

इन्द्र विसर्जन जनिलखौ भागौ आंगि बचाय ॥

पहिला चाँडा—अरे अहित, देख, देग,

लिए जात हम बचन हित नगरी को सिरताज ।

रोय उट्यो आकाश, कै परत मेघ विन गाज ॥

दूसरा चाँडा—अरे !

रोषत नहिं आकाश यह विन घन विज्जु न होइ ।  
 पुरतिय चढ़ी अटान पै देरि उठीं ये रोइ ॥  
 लिये जात हम बधन द्वि यहिसन लोग निहारि ।  
 घूरि दगावत राह की नेनन से जल डारि ॥

चारु—( देरा कर करुणा से )

वैठीं हाट अटन पुरनारी ।  
 खिरकिन सन भुराकमल निसारी ॥  
 चारुदत्त हा ! हाय ! पुकारत ।  
 आसुधार नयनन से डारत ॥

दोनो चाँडा—चल वे चारुदत्त चल ! ढढोरा पीटने की जगह यही है । वजा वे ढोल, सुनो जी सुनो " यह सार्यवाह विनयदत्त का नाती सागरदत्त का लड़का चारुदत्त है । इस पापी ने थोड़े से धन के कारण पुष्पकरउवाग में ले जाके वसतसेना पातुर को गला घोट कर मार डाला, यह धन के साथ पकड़ा गया अपने मुँह से भी कहला है, इस पर महाराज ने हमें इसके मारने का हुकुम दिया है ; और जो कोई ऐसा लोक परलोक के विरुद्ध काम करेगा उसे भी राजा पाजक पेसा ही दंड देंगे "

चारु—( उदास होकर आपही आप )

कीह यज्ञ अनेक धाग मन्दिर बनवाये ।  
 जिन पुरखन बैठाय विप्र श्रुति पाठ कराये ॥  
 मेरे मारन हित लगाय अपजस को टीका ।  
 नाम लेत चडाल हाय यहि छन तिनहीं का ॥

( सोच कर दोनो कानों पर हाथ रखकर ) हाय प्यारी वसतसेना !

ध्रोंठ प्राल समान चद किरा मे दांत जह ।  
 सो मुम्बरस करि पान अपजस त्रिप कैसे पिया ॥

दोनो चाँडा—हटो जी हटो,

सज्जाआरतिहरन जो गुनगनि को भडार ।  
 आज निसारी जात सो किये अशुभ सिंगार ॥

और, सुख सपति मे करत है सोच फिकिर सब कोय ।  
विपति परे पै हित करत जन जग दुर्लभ होय ॥

चारु—( चारो ओर देख कर )

आंचल सन ढाँके मुख फेरे ।

जात दूर साथी अब मेरे ॥

सुख के दिन औरतु हित होई ।

विपत परे पै हित नहि कोई ॥

दोनो चाँडा—मैने सब को हटा दिया अब इसे ले चलो ।

चारु—( ' मैत्रेय ज्या ' इत्यादि फिर पढ़ता है )

( परदे के पीछे हाय चाचा ! हाय चारुदत्त जी !

चारु—( सुन कर कटणा से ) अरे चौधरी ! हम तुमसे एक

मागन माँगते हैं ।

चाँडा—अरे हमसे माँगन माँगते हो ?

चारु—राम ! राम ! घेसमभे वूभे काम करनेवाला पालक

चाँडाल है, तुम तो उससे अच्छे हा । हम चाहते हैं मरने से पहिले  
वेटे का मुँह देख लें ।

दोनो चाँडा—बहुत अच्छा ।

( परदे के पीछे ) हाय चाचा, हाय बाबू ।

चारु—( सुन कर कटणा से ) चौधरी, हम अपने वेटे का

मुँह देखना चाहते हैं, वह आ रहा है ।

चाँडा—हटो जाँ हटो, चारुदत्त अपने वेटे का मुँह देख लें ।

( नेपथ्य की ओर देख कर ) इधर आइये, इधर आ वे लडके,

इधर ।

( बाहर जाते हैं )

[ दूसरा स्थान—सड़क पर दूसरी जगह ]

( रोहनेन के साथ मैत्रेय आता है )

मैत्रे—चजो भैया चजो, तुम्हारे बाप को मारने के लिये जा-  
- रहे हैं ।

रोह—हाय ! चाचाजी हाय !!

मैत्रे—हाय ! माई तुम्हें कहीं ढूँढ़ें ।

( चडालों के साथ चरुदत्त आता है )

चारु—(पेटे प्योर मैत्रेय को देत कर) हाय बेटे, मैत्रेय,  
( करुणा से ) हाय ! यह जडका

रहि हो नित परलाक में पानी काज अधीर ।

देइ न सकिहें पेट भरि नान्हों अँजुरिन नीर ॥

अब मेरे पास क्या है जो बेटे को दूँ (जनेऊ देत कर) यही है ।

मोती को नहिं सोन के सोहैं धामहनगात ।

देषपितर के भाग नित जेहि सन दी दो जात ॥

( जनेऊ उतारता है )

पहिला चांडा—अरे चारुदत्त, इधर आ ।

दूसरा चांडा—क्यों रे, चारुदत्त जी को तुकार के पुकारता है ? देत—

सपनि में कै त्रिपति में त्रिना रोक दिन राति ।

हयिनी मतधारी मरिमि नि होत न्यता जाति ॥

अोर, मिटो नाम पदधी, मिटी कै नहिं पूजनजोग ।

राहु प्रमे जो चद्र को कै नहिं पूजत लोग ॥

रोह—अरे चांडालो ! चाचा को कहीं लिये जाते हो ?

चारु— भैया, गर सोहत कनयर की माला ।

कध शूल हिय शोक विशाला ॥

मर मँह द्वाग सरिस बलि काजू ।

जाहुँ मसान मरन हित धाजू ॥

चांडा—अरे !

जन्मे से चडालकुल फोड चडाऊ न होय ।

सज्जन नासन चहत जो चांडाल नर सोय ॥

रोह—अरे तुम चाचा को क्यों मारते हो ?

और, सुल सपति में करत है सोच फिकिर सब कोय ।  
विपति परे पै हित करत जन जग दुर्लभ होय ॥

चाट—( चारो ओर देख कर )

आँचल सन ढाँके मुख फेरे ।

जात दूर साथी अब मेरे ॥

सुप्त के दिन ओरहु हिन होई ।

विपत परे पै हित नहि कोई ॥

दोनो चाँडा—मेने सब को हटा दिया अब इसे ले चलो ।

चारु—( ' मैत्रेय क्या ' इत्यादि फिर पढ़ता है )

( परदे के पीछे हाय चाचा ! हाय चारुदत्त जी !

चारु—( सुन कर करुणा से ) अरे चौधरी ! हम तुमसे एक  
माँगन माँगते हैं ।

चाँडा—अरे हमसे माँगन माँगते हो ?

चारु—राम ! राम ! बेसमझे बूझे काम करनेवाला पालक  
चाँडाल है, तुम तो उससे अच्छे हो । हम चाहते हैं मरने से पहिले  
बेटे का मुँह देख लें ।

दोनो चाँडा—तहुत अन्धा ।

( परदे के पीछे ) हाय चाचा, हाय बाबू ।

चारु—( सुन कर करुणा से ) चौधरी, हम अपने बेटे का  
मुँह देखना चाहते हैं, यह आ रहा है ।

चाँडा—हटो जा हटो, चारुदत्त अपने बेटे का मुँह देख लें ।

( नेपथ्य की ओर देख कर ) इधर आइये, इधर आ वे लडके,  
इधर । ( बाहर जाते हैं )

[ दूसरा स्थान—सड़क पर दूसरी जगह ]

( रोहसेन के साथ मैत्रेय आता है )

मैत्रे—चलो भैया चलो, तुम्हारे बाप को मारने के लिये जा  
रहे हैं ।

( तीसरा स्थान—सरकारी सड़क पर तीसरी जगह )

( कोठे के ऊपर स्थावरक बँधा खड़ा है )

स्था—( ढढोरा सुन कर घनराहट से ) हाय ! हाय ! चारु-दत्त बैकसूर मारे जाते हैं । मुझे मेरे मालिक ने यहाँ बांध रक्खा है तो यहाँ से चिल्लाऊँ । सुनो भाई सुनो ! मुझ पापी ने वहली के हेर फेर से वसन्तसेना का पुष्पकरण्ड वाग में पहुँचाया, वहाँ मेरे मालिक ने उससे कहा मेरे पास रह । जब उसने न माना तो गला घोट कर मार डाला । इस भलेमानुस ने नहीं । धरे में दूर हूँ इस से मेरी बात कोई नहीं सुनता । अब क्या करूँ, कूद पडूँ । ( सोच कर ) मेरे कूदने से चारुदत्त जी बच जायेंगे । धरत्रा तो इसी दूटी खिडकी की राह से कूद पडूँ, मेरे मरने से न्या मिगड़ेगा—यह विचारे न रहेंगे तो भले मानुसों को सरन कौन देगा ? मर भी जाऊँगा तो मुझे स्वर्ग धरा है ( कूद कर ) धरे, मे तो बच गया ! बेडी दूट गई ! चलूँ जहाँ चाँडाल ढढोरा पीट रहे हैं, वहाँ चलूँ ( देख कर ) धरे ओ चाँडालो ! हटो भाई हटो ।

( दोनो चाँडालों के साथ चारुदत्त आता है )

दोनों चाँडाल—धरे को हटो हटो करना है ?

स्था—( “ सुनो भाई सुनो ” इत्यादि फिर पढ़ता है )

चारु—धरे, फँसा काल के फद में सूरों में क्यों धान ।

मोहि बचावन काज का आवत मेव समान ॥

आप लोगों ने सुना है ।

‘केवल डरत कलक का मरत डरत नहीं कोई ।

अजस मिटे का मरनहँ पुत्रजम सम होइ ॥

और, नीच मूढ़ अति बेरजस दृषनभरो शरीर ।

मारो मेरे सुजसपै विष दुक्ताय यह खोर-॥

दोनों चाँडा—स्थावरक ! सच कहते

चाँडा—भैया हम क्या करें, राजा का हुकुम ऐसा ही है ।

रोह—तो मुझे मार डालो, चाचा को छोड़ दो ।

चाँडा—भैया तुम लाख चरस जियो, तुम बहुत अच्छे लड़के हो ।

चारु—( आँसू भरकर लड़के को गले लगाकर )

धनी दरिद्र सम दुहुन के एकै नेह अधार ।

हियो करै शीतल सदा चदन की अनुहार ॥

( ' गर सोहत कनइर ' इत्यादि फिर पढ़ता है, देखकर आपही आप ' आँचल सन ' इत्यादि फिर पढ़ता है ) ।

मैत्रे—भाई चाँडालो ! चारुदत्त जी को छोड़ दो, हमें मार डालो ।

चारु—राम ! राम ! यह क्या कहते हो ( देख कर आपही आप )  
" मुख यह " इत्यादि फिर पढ़ता है । ( प्रकाश " वैठो " इत्यादि फिर पढ़ता है )

पहिला चाँडा—हटो ! त्या देखते हैं ।

लाग्यो अपजस घोर छोडो आसा जियन की ।

बूडत दूडत डोर सोने के कलसे सरिस ॥

चारु—( करुणा से " ओठ प्रयाल समान " इत्यादि फिर पढ़ता है )

दूसरा चाँडा—अरे फिर पुकार दे, ढढोरा पीट दे ।

पहिला चाँडा—फिर ढढोरा पीट कर " सुनो जी " इत्यादि पढ़ता है ।

चारु— भई हाय मेरी पेसी गति ।

प्राणदडह में नहि कछु छति ॥

यहै होत सुनि दु ख अपारा ।

कहै जो नीच ताहि मैं मारा ॥

( सब बाहर जाते हैं )

स्था—अरे नीच ! वसन्तसेना को मारके तेरा पेट नहीं भरा, अब याचकों के कल्पवृक्ष चाखदत्त को भी मारना चाहता है ?

सस्था—अथे हीरा मोती के डित्ते लिये पेसी लुगाई हम मारेंगे ?

सब—तुम्हींने तो मारा, चाखदत्तजी ने नहीं मारा ।

सस्था—कौन कहता है ।

सब—यही भलामानुस ।

सस्था—( अलग डरता हुआ ) अरे चापरं चाप ! मैंने क्या किया ? लौंडे को अन्त्री तरह न बांधा था । मेरे पाप का साखी यही है । ( सोचकर ) अन्धा तो अब यह करूँ ( प्रकाश ) अजी यह लौंडा झूठ बोलता है, इसने हमारा सोना चुराया था सो हमने इसे मारा पीटा था, यह तो हमारा वैरी है, इसका कहना कैसे सच हो सका है ? ( आड़ करके स्थाघरक को साने का कड़ा देता है ) बेटे स्थाघरक ! यह लो और कह दो कि चाखदत्त ने मारा है ।

स्था—( कड़ा लेकर ) देखो लोगो, यह हमें कड़े का बालच दे रहा है ।

सस्था—( स्थाघरक के हाथ से कड़ा छीन कर ) देखिये, यही कड़ा है जिसके कारन हमने इसे बाँटा था । अजी चाँडालो ! हमने इसे गहनों के घर में रक्ता था, हमने सोना चुराया, हमने इसे मारा पीटा था, तुम्हें परतीत न हो तो इसकी पीठ देख लो ।

दोनों चाँडाल—हाँ जी, आप सच कहते हैं, रिगडा हुआ नौकर क्या क्या नहीं कहता ।

स्था—हा ! दासपना कैसा बुरा होता है कि सच बोलो तो भी कोई परतीत नहीं करता । ( करुणा से ) चाखदत्त जी ! मेरा क्या घस है ? ( पाँव पडता है ) ।

चारु—उठहु तात कारन बिना भे तुम घधु हमार ।

करी दया तुम सुजन पै वृडत दु ख अपार ॥



स्था—सच नहीं तो क्या ? इमी डर से तो मुझे कोठे ऊपर  
वेडी पहना के बग किया कि किसी से कह न दूँ ।  
( तस्थानक आता है )

सस्था—( हर्ष से ) ।

मझरी साग पात तरकारी ।  
खट्टी कडुई मांस बघारिँ ॥  
चीनी के सग भात बनाया ।  
हम खुल सन अपने घर खाया ॥

( सुन कर ) फूटे काँसे के बरतन की नाई चाँडालो की घोली  
सुन पड़ती है और ढढोरा पिट रहा है, इससे जान पड़ता है कि  
चारुदत्त को सूली देने के लिये जा रहे है, तो मैं भी चल  
कर देखूँ । वैरी के मरने से मन जो बड़ी खुशी होती है । हम ने  
सुना है कि जो लोग वैरी का मारा जाना देखते हैं उन्हें दूसरे  
जन्म मे आँख का रोग नहीं होता । हम बहुत दिन से ताक में  
रहे, विषम गाँठ मे जैसे कोडा घुस जाता वैसे ही अचसर पाकर  
चारुदत्त के नास का उपाय किया, अत्र अपनी अटारी पर चढ़ कर  
अपना करतब देखें । ( चढ़ कर देख कर, अरे ) दरिद्र चारुदत्त को  
मारने के लिये जाते हैं तो इतनी भीड इकट्ठी हो रही है, जब कहीं  
हम ऐसे बहादुर को मारने ले जायेंगे तो कैसा होगा ? ( देरा कर )  
अरे, नये बैल की नाई रँग के इसे दखिखान ले जा रहे हैं, हमारे  
महल के नीचे ज्यों ढढोरा बन्द किया गया । ( देरा कर ) अरे  
स्थावरक लौडा कहाँ गया ? ऐसा न हो कहीं जाके भाँडा फोड  
दे । देरें कहाँ गया ( उतर कर चाँडालो के पास जाता है ) ।

स्था—देखिये यह आगये ।

दोनों चाँडाल—देहु किवाडे चुप रहौ भागो छाँड़ो गेल ।

दुष्टपने की सींग को आघत है यह बैल ॥

सस्था—हटो जी हटो । ( आगे बढ़ कर ) बेटे स्थावरक आओ  
खलो ।

( रोहसेा मैत्रेय के साथ जाता है )

दोनों चांडा—यह तीसरी जगह है, यहाँ ढँढोरा पीटो ( फिर ढँढोरा पीट कर सुनो जो इत्यादि कहते हैं )

सस्था—लोगों को विश्वास नहीं होता ( प्रकाश ) अवे चारुदत्त ! लोगों को परतीत नहीं होती, वृ अपने मुँह से कह कि मैंने वसन्तसेना को मारा ।

चारु—( चुप रहता है )

सस्था—अजी चारुदत्त नहीं बोलता तो तुम लाठी से मार के इससे कहलाओ ।

चांडा—( लाठी उठा के ) चारुदत्त, कहो ।

चारु—( करुणा से ) इयो महा पिपति के सागर ।

नहिं मोहि दु ख नहीं मोहि कछु डर ॥

कहन परत प्यारिहि में मारा ।

यहै जराघत हृदय हमारा ॥

सस्था—अरे चारुदत्त ! “ लोगों को परतीत नहीं ” ( इत्यादि फिर पढ़ता है )

चारु—अरे, नगर के लोगो “ मे पापी हत्यार ” ( इत्यादि फिर पढ़ता है )

सस्था—मारी ।

चारु—हाँ ।

पहिला चांडा—अजी आज तुम्हारी वारी है ।

दूसरा चांडा—न, तुम्हारी है ।

पहिला चांडा—अच्छा लिरा के देखो ( बैठकर लिखते हैं )

पहिला चांडा—अच्छा, जो मेरी वारी है तो ठहर जाओ ।

दूसरा चांडा—क्यों ?

पहिला चांडा—बाप जय मरते थे तो कहने लगे ‘ घेटा वीरक जब तुम्हारी वारी मारने की हो तो उतावली न करना ’ ।

दूसरा चांडा—क्यों ?

मोहि वधाघन हेत तुम कीन्हें बहुत उपाय ।

सब कुछ कीन्हो तात तुम दैव न मानत, हाय !

दोनो चांडा—सरकार ! इस लौडे को मार कर निकाल दीजिये ।

सस्था—निकल वे ( बाहर निकाल देता है ) अरे चांडालो ! क्यों डेर कर रहे हो, मारो इसे ।

चांडा—तुम्है बड़ी उतावली है तो, तुम्हीं मारो ।

रोह—अरे चांडालो ! चाचा को छोड दो, मुझे मारो ।

सस्था—अजो इस को भी मारो, इस के लडके को भी मारो ।

चारु—यह गधा सब कुछ कर सकता है, वेटा तुम अपनी माँ के पास चले जाओ ।

रोह—मैं जाके क्या करूँ ?

चारु—चले जाव तीरथ अवे लै माता निज साथ ।

नहि अचरज पितुदोष जो बीते तुम्हरे माथ ॥

भाई मैत्रेय, इसे ले जाओ ।

मैत्रे—भाई, मैं तुम्हारे बिना जी सकता हूँ ?

चारु—भाई, तुम को क्या हुआ, तुम क्यों मरना चाहते हो ?

मैत्रे—( आपही आप ) यह ठीक नहीं । विना चारुदत्त के मैं जी नहीं सकता । लडका ब्राह्मणी को सोप कर मैं भी इनके साथ चरूँ । ( प्रकाश ) भाई, इन्हें पहुँचा आऊँ ( चारुदत्त के पाँव पडता है, लडका भी रोता हुआ चारुदत्त के पाँव पड़ता है )

संस्था—अजो, हम तुमसे कहते हैं कि इसको भी मारो, इसके लडके को भी मारो ।

( चारुदत्त डर का भाव घताता है )

दोनो चांडा—राजा का यह हुकुम नहीं है कि धेरे को भी जा वे लडके भाग जा ।

चाँडा—चाखुत्त जी, आकाश में सूर्य चन्द्रमा रहते हैं उग पर भी बिपत पड़ती है, हम लोगो को कौन गिनता है, काँठ के गिरता है कोई गिर के उठता है।

गिरत उठत फिरि फिरि जियत फिरि फिरि मिलत शरीर ।

यह विचारि घबराहु जनि धरो सनुक्ति मन धी ॥

दूसरा चाँडाल—यह ढढोरा पीटने का चौथा जगह है पीट दो (ढढोरा पीट कर "सुनो जा सुनो" इत्यादि फिर पढ़ता है।)

चारु—हाय प्यारी वसन्तसेना, "घाँठ प्रवाल समान" (इत्यादि फिर कहता है) (चाँडालों के साथ बाहर जाता है)

[ चौथा स्थान—सड़क पर एक दूसरी जगह ]

[ वसन्तसेना के साथ सघाहक योगी आता है ]

योगी—मेरे इस जोगी के भेस ने भी बड़ा उपकार किया जो हारी भाँदी वसन्तसेना को चगी करके फिर घर पहुँचाता है। उपासिका ! तुम को कहाँ पहुँचा दूँ।

वसन्त—मुझे चाखुत्त जी के घर ले चलिये, जैसे कोंकावेली को चन्द्रमा के देखने से सुख होता है वैसे ही उन्हें देख कर मैं भी सुखी हो जाऊँगी।

योगी—(आपही आप) किस राह चलूँ ? (सोच कर) वही सड़क से चलूँ। (प्रकाश) उपासिका आइये, वही सड़क चलें, और आज यहाँ इतनी भीड़ भाड़ हला गुल्ला क्यों हो रहा है ?

वसन्त—(आगे देख कर) अरे, आज यहाँ इतनी भीड़ क्यों ? जोगी जी पूँछिये तो आज क्या है जो सारी उज्जैनी उमड़ीसी होती है ?

पहिला चाँडा—कदाचित कोई भलामानुस रुपया दे के छुडा ले, राजा के लडका हो जाय और सब बंधुए छोड दिये जाय, हाथी विगडे और उसके गड़बड़ मे बंधुआ छूट जाय, राज पलट जाय और बंधुए छोड दिये जाय ।

दूसरा चाँडा—अरे, क्या कहता है राज पलट जाय !

पहिला चाँडा—अच्छा लाआ, फिर जिस के देखें आज किसकी बारी है ।

सस्था—अजी, चारदत्त को जल्दी मारो । ( इतना कह कर स्थावरक के साथ पकान्त में खडा हो जाता है ) !

दोनो चाँडा—चारदत्त जी, मालिक का हुकुम है हमारा दोष नहीं है, तुम्हें जिसकी सुध करना हो उसकी सुध करलो ।

नारु—अपने खोटे भाग बली रिपु की कुटिलाई ।

लाग्यो तदपि कलङ्क होय जो धर्म सहाई ॥

तो सुरपति के धाम औरहैं कहूँ जहँ होई ।

मेटै शीलस्वभाष दोष मेरे सब सोई ॥

अब हम कहाँ जायें ?

पहिला चाँडा—( आगे दिखला कर ) वह देखो आगे दन्तिन का मसान है जिसको देखकर बंधुओं के प्राण निकल जाते हैं । देखो, देखो,

खीचें आधी देह स्यार नीचे से ठाढे ।

आधी सूती रहै टंगी खीसैं सब काढे ॥

चार—हाय मैं अभागा क्या करूँ ? ( पेसा कह कर बैठ जाता है )

सस्था—अभी न जाऊँ, चारदत्त को मरता देख लूँ तब जाऊँ । ( घूम के देख कर ) अरे यह तो बैठ गया ।

पहिला चाँडा—चारदत्त डर गये ।

चार—( उठ कर ) रे मूर्ख ! “ केषल डरत कलङ्क से ”  
“दे फिर पढ़ता है । )

( दोनों चारुदत्त को घृती पर चढ़ावा चाहते हैं )

योगी और वसत—अरे अरे क्या करते हो ? क्या करते हो ?

वसत—अरे मेही अभागिनी हैं जिसके कतरा नह नारे व  
रहे हैं ।

चांडा—( देख कर )

भूपट्टी आयनि कौन रह पांड के डिक्कन ।

हां हां हां हां करतै ई हुनी हाय जय ॥

वसत—चारुदत्त जी यह क्या है ? ( दौड़ कर गिर पड़नी

है )

योगी—चारुदत्त जी यह क्या हुआ ? फरों पर गिर पटना है ।

दिल्ली चांडा—( डरता हुआ हट कर ) वसतमेना । बहुत

दया कि हमने बैकसूर को नहीं मारा ।

( उठ कर ) चारुदत्त जीते हैं ?

चांडा—अजी, चारुदत्त जी मौ घरस जिय !

( घड़े हार से ) मैं जी गई ।

महाराज यज्ञशंकर में श्रेष्ठ हैं, जनमं गद्द हाता

( चारुदत्त दो चाण्डालो के साथ धाता है )

दोनो चाँडा—यह सब से पिछली जगह है, यहाँ पर ढढोरा पीट दो ( ढढोरा पीट कर ) चारुदत्त जो सम्भल जाइये, डरिये नहीं अभी एक छिन में आप का काम निपटा जाता है ।

चारु—हे भगवान !

योगी—( सुन कर घबराहट से ) उपासिका ! चारुदत्त जी को मारने को लिये जा रहे हैं और कहते हैं कि इसने वसन्तसेना को मार डाला है ।

वसन्त—हाय ! हाय ! मुझ अभागिनी के कारन चारुदत्त जी मारे जा रहे हैं, योगी जी जल्दी चलिये ।

योगी—आइये, आइये चारुदत्त जी मरने न पायें, हम लोग उनके पास पहुँच जायँ । अरे हटो भाई !

वसन्त—हटो जी हटो !

दोनो चाँडा—चारुदत्त जी ! मालिक का हुकुम है जिसकी सुध करना हो उसकी सुध कर लीजिए ।

चारु—“ हम न्या कहें ” ( इत्यादि फिर पढ़ता है )

पहिला चाँडा—( तलवार खींच कर ) चारुदत्त जी ! सीधे खड़े हो जाइये, एक ही वार मे हम आपको स्वर्ग पहुँचाते हैं । ( चारुदत्त मीधा खाडा हो जाता है, चाँडाल उसे मारना चाहता है पर उसके हाथ से तलवार गिर पड़ती है )

चाँडा—अरे, बल करि मूठी से पकरि लैची गद्दी सम्हारि ।

बिलुरीसी क्यों गिरिपरी वरती पर तरवारि ॥

मुझे तो अब जान पड़ता है कि चारुदत्त जी बच गये । भगवती सहवासिनी देवी, चारुदत्त जी छूट जायँ तो चाँडाल कुल पर बड़ी कृपा हो ।

दूसरा चाँडा—हम लोगो को जो कुछ हुकुम है सो करो ।

पहिजा चाँडा—अच्छा ।

वसत—( कान पर हाथ धर कर ) राम, राम ! उसी राजा के साले ने मुझे मारा था ।

चारु—( योगी को देखकर ) यह कौन है ?

वसत—उस पापी ने तो अपनी जान मुझे मार ही डाला था इस साधू ने फिर जिला लिया ।

चारु—भाई, तुम कौन हो जो बिना कारन हमारे सहाय हुये ?

योगी—आप मुझे नहीं पहचानते ? मे आपके हाथ पाँव दाने वाला सवाहक हूँ । मुझे जुआरियो ने पकड़ा था, सो आपका सेधक जानके बाई जी ने अपना गहना देकर मुझे छुड़ाया ! जुप से पेसा जी घबराया कि मे बुद्धमत का जोगी हो गया । यह बाई जी बहली के हेर फेर से पुष्पकरडवाग पहुँची, वहाँ उस पापी ने इनसे कहा कि तू मुझे नहीं चाहती और इनको गला घोट कर मार डाला । मेने देखा—

( परदे के पीछे टुल्लड होता है )

जय जय श्रीवृषकेतु दत्तमल जिन सहारा ।

जय पटवदन कुमार कौंच जिन जैल विदारा ॥

जय आर्यक नृप जीति जिन निज शत्रुहि मारी ।

ध्वजा सरिस कैलास लसत धरती जिन सारी ॥

( घबराया हुआ शर्षिलक आता है )

शर्षि—पालक नृपहि नरक पहुँचाई ।

आर्यक कहँ नरनाह धनाई ॥

सिर धरि तासु घचन अय आषों ।

चाहदत्त की विपति छुडावों ॥

बिना मत्रि बल नृप मेा नासी ।

समाधान मन करि पुरपासी ॥

जीन्ह राज निज प्रबल प्रभाऊ ।

बलको राज मनहुँ सुरराऊ ॥



घबराहट में देख परी है ।

यही ग्रहै कै नहीं मरी है ॥

मोहि जिआवन सोइ, कै उतरी यह स्वर्ग से ?

कै दूसरि यह कोइ, रूप यही का है धरे ?

वसत—( उठ कर पैरों पर पड़ कर ) चारुदत्त जी ! मैं यही

पापिनी हूँ जिसके कारण तुम्हारी यह दशा हुई ।

( परदे के पीछे )

बड़ा अचरज है कि वसन्तसेना जीती है !

चारु—( सुनकर उठकर आँखें बन्द किये हुये हर्ष से ) प्यारी,  
तुम वसन्तसेना हो ?

वसन्त—मैं ही अभागिनी हूँ ।

चारु—( देखाकर हर्ष से ) यह वसन्तसेना है ? ( आनन्द से )

आँसुन नहवावत उरज मोहि मृत्युवस देखि ।

आई प्यावन मोहि जनु विद्या कोउ विसेखि ॥

प्यारी वसन्तसेना,

तघ हित चलन चहन मम प्राना ।

तुमही आय कोन्ह मम प्राना ॥

प्रियसगमकर यही प्रभावा ।

मरि कै कौन जीव फिर आघा ॥

प्यारी, देखो—

लाल वस्त्र बधचोन्ह ए फूलन की यह माला ।

जागै बरसिंगार से दुलहिन आवन काल ॥

चलत बजावत ढोल जो मोहि मारन के हेत ।

तिनकी व्याहृमृदग ज्यों बोल सुनाई देत ॥

वसन्त—यह आपने क्या किया ?

चारु—प्यारी, मैंने तुमको मारा ।

पहिले को बैरी बली यहि छन औसर पाय ।

आप नरक में जाय किय मेरे नासउपाय ॥

की पहिली घात तो माननी ही चाहिये ( घूम कर ) अरे, उस पाजी राजा के साले को पकड तो लाओ ।

( परदे के पीछे )—बहुत अच्छा, सरकार ।

शर्षि—राजा आर्यक ने कहा है कि हम को यह राज आप ही की कृपा से मिला है, इसे आपही सभालें ।

चारु—हमारी कृपा इसमें क्या थी ?

( परदे के पीछे )

अरे राजा के साले ! चल अपने दुष्टपने का फल ले ।

( सस्थानक का हाथ पीछे बधा हुआ है और उसे दो सिपाही लाते हैं )

सस्था—अरे दैया रे दैया !

दूर हेराना गदहा जैसे ।

कृकुर सम लाये मोहि तैमे ॥

( चारों ओर देरा कर ) मैं तो चारों ओर से घेरा गया अब मेरा बचानेवाला कोई नहीं है—कहाँ जाऊँ क्या करूँ ? ( सोच कर ) त्रिपति में पड़े को सरन देनेवाला घड़ी है ( आगे बढ़ कर ) चारुदत्त जी दुहाई है ! मुझे बचाइये !

( परदे के पीछे )

चारुदत्त जी, इसे हमारे हवाले कीजिये हम इसको मारें ।

सस्था—( चारुदत्त से ) दुहाई है ! तुम्हारी सरन हूँ !

चारु—( दया से ) शरणागत को अभय ।

शर्षि—( घबडा कर ) अजी, इसको चारुदत्त के आगे से ले जाओ । कहिये इस पाजी को क्या किया जाय ?

भले बाधि अँग अँग लिचवाइय ? ।

कै यहि कुत्तन से नुचवाइय ?

कै यहि की घोटी कटवाइय ?

कै यहि सूली पर चढ़वाइय ?

( आगे यह देख कर ) जहाँ यह भीड़ लगी है वही होंगे । राजा आर्यक का पहिला काम चारुदत्त जी को बचाना है, उसे भगवान सुफल करें । अच्छा ( जल्दी चल कर ) हटो रे हटो ( देखकर ) चारुदत्त जी जीते हैं ? बसन्तसेना भी यहीं है ! हमारे स्वामी के मनोरथ पूरे हो गये ।

बूडन चाहत महा दुःख के सिधु अपारा ।

प्रिया शील की खानि ताहि निज गुनन उवारा ॥

धन्य भाग हम सबन केर देखे यहि अवसर ।

महापुरुष, यह ग्रहन छुटे चाँदनि सँग हिमकर ॥

मैंने तो बड़ा पाप किया है, इनके सामने कैसे जाऊँ ? अजी सिधार्ई सब जगह अच्छी लगती है । ( आगे बढ़ कर हाथ जोड़ कर ) चारुदत्त जी !

चारु—आप कौन हैं ?

शर्षि—तुम्हारे घर जिन सँध करि थाती लई चुराय ।

दोपी सो मांगत अभय सरन तुम्हारी आय ॥

चारु—आप ऐसा न कहिए, आपने तो बड़ी कृपा की थी ।  
( गले लगाता है )

शर्षि—आर्यचरित आर्यक नृपति राखत कुज औ मान ।

मारयो पालक भूप को मरु महुँ पशु समान ॥

चारु—क्या ?

शर्षि—गयो तुम्हारी सरन जो तुम्हारे रथ चढ़ि जोइ ।

मारो पालक भूप को मरु महुँ पशु सम सोइ ॥

चारु—शर्षिलक, वही जिन्हें राजा पालक ने घोसीपुरे से बुलाकर प्रिना कारन कैद किया था और तुमने छुड़ाया था ?

शर्षि—जी हाँ ।

चारु—बहुत अच्छा हुआ ।

शर्षि—आपके मित्र राजा आर्यक ने राज पाते ही वैशा के किनारे कुशावती का राज आपको दिया । आपको मित्र

। चावदत्त जी की यह धूतावाई आंचल पकड़े हुए लडके  
क कर जलती आग में कूदना चाहती हैं, लोग उन्हें रो रो  
ना चाहते हैं पर नहीं मानती ।

वि—( सुन कर नेपथ्य की ओर देख कर ) अरे क्या है  
क ?

( चदनक आता है )

वि—देखिये, महाराज के महल के दक्षिण कैसी भीड़  
हो रही है । चावदत्त जी की यह धूतावाई ( इत्यादि  
कहता है ) मने तो उनसे कहा कि साहस न कीजिये,  
दत्त जी अभी जीते हैं, पर दुख से व्याकुल कौन सुने,  
माने ?

वाह—( घबरा कर ) हाय प्रिया, तुम ने मेरे जीते जी क्या  
लिया ( ऊपर देख कर साँस लेकर )

चरित तुम्हारे जोग रहे न जो यहि लोक के ।  
करन स्वर्गसुखभोग पति बिन सती उचित नहीं ॥

( वेसुध हो जाता है )

गर्धि—ओह ! सब विगडा जाता है !

जल्दी को तो काज, आप यहाँ वेसुध परे ।  
सब विगरत है आज, कियो जतन जेहि हेत यह ॥

वसत—उठिये, चल कर यईजी को जिलाइये, आप के  
ने से अनर्थ हा जायगा ।

वाह—( जाग कर जल्दी से उठ कर ) हा प्रिया ! कहाँ हों  
गे ?

चड—इधर आइये, इधर ।

गर्धि—यईजी आग के पास पहुँच गई हैं, जल्दी चलिये ।

चाव—( जल्दी जल्दी चलता है )

( सब बाहर -

चारु—जो हम कहेंगे वह कीजियेगा ?

शर्वि—इसमें भी कुछ सदेह है ?

सस्था—चारदत्त जी दुहाई है ! तुम्हारी सरन हैं ! तुम अपनी ओर देखो । मैं ऐसा काम फिर न करूँगा ।

( परदे के पीछे ) मारो इम पापी को, फ्यो छोड़ते हो ?

( वसन्तसेना चारदत्त के गले से माला उतार कर सस्थानक को पहिना देती है )

सस्था—अरी ! अब हम तुम्हें न मारेंगे, हमें बचा ले ।

शर्वि—अजी हटाओ इस को । चारदत्त जी, कहिये इस पापी का क्या किया जाय ?

चारु—जो हम कहेंगे वही कीजियेगा ।

शर्वि—इस में भी कुछ सदेह है ?

चारु—सच ?

शर्वि—सच ।

चारु—तो इसे जल्दी—

शर्वि—मार डालें ?

चारु—नहीं छोड़ दीजिये ।

शर्वि—न्यों ?

चारु—वैरी जब अपराध करे और पैरों पर पड़ कर सरन मांगे तो उस पर हथियार नहीं उठाना चाहिये ।

शर्वि—तो इसे कुत्तों से नुचवा डालें ?

चारु—नहीं, उपकार से मारना चाहिये ।

शर्वि—कहिये क्या करें ?

चारु—छोड़ दीजिये ।

शर्वि—छोड़ दो ।

सस्था—अरे बच गये ! बच गये !

( सिपाहियों के साथ बाहर जाता है )

( परदे के पीछे हल्ला होता है )

गोद । खटकृती है = कसकृती है । [१४१] नए = झुके । उनते = उनसे  
 बढ़कर या बढ़ा । [१४२] बकसियो = क्षमा करना । बौर = मजरी ।  
 [१४३] तन = ओर । धो = तो । परमारथ = परमार्थ रूपी औषध ।  
 राजदोष = प्रबल रोग । [१४४] अनुदिन = प्रतिदिन । [१४६] दें गए =  
 दिए हुए गए । [१४७] बापुरे = रेचारे । छार = धूल । [१४८] आयसु =  
 आदेश, आज्ञा । वारि० = निठावर करके । नव० = नौ टुकड़े करके,  
 टुकड़े टुकड़े करके । [१४९] तर = नीचे । मचु = सुख । [१५१] सुखेत =  
 रणक्षेत्र । गारि = पानी, चमक । [१५२] बाय = चात विकार । पय-  
 निधि = समुद्र । [१५३] अरे = अह गए हैं । राचे = अनुरक्त । वक्र० =  
 अत्यंत टेढ़े । सीतल = जिनके संचार ( ध्यान ) से हृदय ठंडे हो गए हैं ।  
 अमिय० = अत्र ये अमृत से विप में जा पड़े । [१५४] बबचत० =  
 उसकी ओर काळा सर्प क्यों बढ़ाते हा । हारे = विवश होने पर । अछत =  
 रहते । [१५५] फूलेल = सुगंधित तेल । ग्र वै = गाँठें । आघोरी =  
 भारी । ताटक = कान का गहना । जोति = शोभा । सार = घनसार, कपूर,  
 असवास = ( आश्वास ) सुगंधित साँस । आरु = ( अरु ) मदार ।  
 [१५६] अधिकारे = अधिक । सारे = तत्व । खारे = कड़ुए ।  
 [१५७] बायस = कौआ । अँचयो = पिया । बजी० = एक ही ढग के  
 बाजे बजे, सब एक ही रगत के हैं । ताँति = तनी, बाजा ।  
 [१५९] कनियो = गोद । [१६०] कलेवर = शरीर । लौरी = लेप ।  
 पिठौरी = दुपट्टा । [१६१] ज्यो भुवग० = जैसे उस सर्प की पूँक जितकी  
 मणि छीन ली गई हो । दवा = भीषण ज्वाला । [१६२] अवर = अच्छे  
 वस्त्र । गुठ० = जो योग के हमारे गुठ हैं वे कुन्ता के हाथ की माला हैं ।  
 उसके इगारे पर नाचनेवाले हैं । [१६३] दाम = रस्सी । पानि =  
 हाथ । चोरी० = चोरी न लोहूँगी । आनि = आकर । हडिदौ = न-देने  
 का हठ न करूँगी । जाबक = महावर । बट-तर = नरगद  
 सँकेत = संकेतस्थल । चढ़ाय = बैठाकर । [१६७] निरालि० =  
 अध, की अलङ्घ्य धारा बहने लगी । प्रेम० = प्रेम की व्यथा

बुझी । अतर-गति = हृदय के भीतर । सुचित = स्वस्थ होकर । कमल =  
 योगियों के शूत्रचक्र जो कमल के रूप में माने जाते हैं । [१६९] लाइ =  
 मन लगाकर । सुमति मति = अच्छी बुद्धि । पै = निश्चय । [१७०] गात =  
 गाते हुए । सुनात = सुनाते थे । परसात = छाई है । [१७१] सिमी =  
 सींग का राजा । [१७२] लहनौ = प्राप्य । बग = दूल्हा, पति, प्रिय ।  
 सँघाती = साथी, सखा । [१७३] सरै = ( सूर्य के रथ की ओर ) जाता है,  
 उसे प्राप्त करता है । [१७४] उल्लभी = प्रेमिका । मधुर = जो मीठी  
 बोली बोलनेवाले हैं । बृक = भेड़िया । बच्छ = बत्स, बछड़े । असन =  
 भोजन । बसन = बत्स । सत = शत, सैकड़ों । [१७५] उरस = बर्पा  
 करता है । कर० = हाथ में कड़ा और दर्पण लेकर ( कड़ा ढीला पड़  
 गया है । दर्पण में मुख विवर्ण दिखाई पड़ता है ) । एतो मान =  
 इतना अधिक कष्ट सहने पर भी । [१७६] सहियो = सहना । मकरध्वज =  
 काम । बहियो = अश्रु-प्रवाह के कारण । [१७७] पय = जल । पय नों =  
 पानी से भी आग लग रही है । हा हरि० = 'हा हरि, हा हरि' जो कहती  
 हैं उसी मात्र के पढ़ने के कारण इस आग में जलकर भस्म नहीं  
 होतीं । [१७८] गहरु = देर, विलम्ब । [१७९] कहा वनैहै = क्या बात  
 गढ़ लेंगे । अब हम० = हम चुपचाप वहा पत्र लिए देंगी कि ये तो  
 गोकुल के अहीर हैं, वह पत्र उन्हें मिलेगा भी नहीं । [१८०] रूपहरी =  
 हरि का रूप, सारूप्य मुक्ति । मुक = शुकदेव । त्यामा = युवती स्त्री ।  
 [१८१] भनै = कहे । कह० = क्या उन कानों में ककड़ी की चोट करते  
 हो । रग चुनै = प्रल करने पर भी । [१८२] बकी = पूतना । दोपन =  
 दोष अर्थात् विषमय हो जाने से । तृनाव्रत = तृणावर्त । केसी = केशी  
 नाम का दैत्य । [१८३] घाए = घात, चोट । कहि० = कहना पड़ा ।  
 [१८४] रमाल = रसमय, कर्णसुजद । तरनि० = सिर का तिलक सूर्य की  
 भाति दाहक है । भुवाल = भूपाल, राजा । [१८५] बहिषी = निर्वाह  
 करना । [१८६] दासनिदासि = दासानुदासी, दासों की दासी ।  
 [१८७] चेत० = बेसुध अवस्था । रेती = बालू का मैदान । [१८८] अव-

गाई० = दु ल में हूवती है । [ १६४ ] स्वाम्भ० = श्रीकृष्ण की पीढा में पगा हुआ । ऋषि = शुद्ध 'ऋषु, सीधा । [ १६६ ] पुलिन = नट । [ १६७ ] विरह बीज = विरहमय । सलिल० = अंधर-माधुरी के नल में मिलाकर । बल न० = भौषध का कोई बल नहीं लगता, भौषध काम नहीं करती । परै = हो । [ १६८ ] हे = ये । दाम = रस्ता मे । पति = प्रतिष्ठा । रसनिधि = आनन्द के सागर । [ १६९ ] नद नग = प्रेमरूरी रत्न । बुझानी = समझ में आई । [ २०० ] हमरे० = हमारे गुण गाँठ में क्यों नहीं बाँधे, हमारे गुणों का विचार क्यों नहीं किया । [ २०१ ] देह० = शरीर दु म्व की सीमा नहीं पाता, दुखों का भन्त नहीं मिलता । [ २०२ ] आन = शपथ । आमिप = मास । हित = प्रिय । विंगरा = छोटी सारंगी, चिकारा । सुर = ध्वनि । लग = तक । व्रजभान = व्रज-मानु, श्रीकृष्ण । [ २०४ ] चाली = छेडी । साली = धँसी । व्रजवाली = व्रज की बालाएँ । [ २०५ ] इतने = इतने पक्षा । प्रतिपारे = पाला-पोसा । बिहारे = नष्ट कर दिए । कीर = नामिका । कपोत = गर्दन । कोकिला = वाणी । सजन = भाँखें । [ २०६ ] सत्वर = शीघ्र । मधुरिपु = श्रीकृष्ण । जगी = जागरण । काथ = काटा । मूरि = जडी । सुबल = अनुकूल, लाभदायक । [ २०८ ] नियति = पूजा करके । [ २१० ] अराध = आराधना करे । बरीम = बप । पुरवा = पूर्ण कर दो । [ २११ ] रीते = रिफ, खाली । कारन = कालों की । फेरनि = लपेट, पहनावा । घेरनि = एकत्र करना, घराना । करर = कडा । [ २१३ ] घोप = बालों का गाँव । सपुट = बंद । दिनमनि = सूर्य । [ २१४ ] रथ पलान्यो = रथ पर चढ़ कर गए । [ २१७ ] पाहन = ( पापाण ) पत्थर, कठिन । [ २२८ ] जावदेक = यावन्मात्र, सबको । [ २१९ ] धित० = मन । [ २२० ] विधि० = ब्रह्मारूरी कुम्हार । घट = घडा, शरार । दरसन० = दरने का आशा ही घडों का फेरा जाना है । कर० = श्रीकृष्ण के काम आए, उनके लिए शकुन-सूचक हुए । [ २२१ ] काती = कत्ता, छुरा । मवाती =



स्वाती [२२२] निमि लौं = रात भरें। सीति = शीत, ठंडा। पुरवा = पूर्व से आनेवाली वायु, पुरवैया। गर्ण० = उसने हमारे शरीर सरलता से जीत लिए हैं। [२२३] चौरामी = अनेक प्रकार की। हरि = हरकर। [२२४] लोकडार० = हमारा प्रेम प्रकट करने से श्रीकृष्ण को लोकापवाद का भय है ( लोग कहेंगे कि ये गँवारों के साथ रहते थे )। [२२५] मो कुल = वह वंश ( यादवों का ), जिससे जन्म लेने पर बिछुड़ गए थे। गर्ग० = गर्ग ने कहा था कि श्रीकृष्ण मथुरा और फिर द्वारका में जा बसेंगे। जो कुल = वह सत्र। जाति = जाति। [२२६] अनहद = अनाहत नाद। कुमाड = कुम्हड़ा। अजा = बकरी। अधाना = वृष होना। [२२७] न परानी = नहीं डटा। चलमति = चल बुद्धिवालों। घेरि० = छेकते फिरते हैं। [२२८] पति = प्रतिष्ठा। दुरहु = हटो। प्रसीठ = द्रुत। मति फेरी = बुद्धि का फेर। कै सँग = मिलकर, जुड़कर। श्री निकेत० = शोभा के घर। पानि = हाथ में। त्रिवाण = सींग। [२३०] नवतन = ( नूतन ) नए ढंग से। राचे = अनुरक्त हुए। रन-ठोर = श्रीकृष्ण [२३१] वारे = काले; मालिन, कपटी [२३४] ऐन = पर। [२३५] कोय० = कौन स्त्री थी। राजपथ = राजमार्ग ( भक्ति का चौड़ा मार्ग )। उरभ = उलझानेवाला। कुशील = ऊबड़ खाउड़, ऊँचा-नीचा। अज = अकरा। बदन = सुख। [२३६] कुमोदिनि = कुई। जलजात = कमल। घनमार = कपूर। जीरन = जीर्ण, पुराना [२३७] विदमान = विद्यमान, उपस्थित। [२३८] स्वदन = रथ। घाय० = वात व्याधि से पगली सी होकर। [२३९] कुम्भ = घड़ा। जलचरी० = बेचारी मछली। [२४१] धूरि = मिट्टी, व्यर्थ [२४३] कुप्रता० = कूपरी के प्रेम में मतभाले। लेम = घोड़ा भी। हरिलखट = मोरपक्ष। म्यामा = षोडशर्षोपा युवती स्त्री, राधिका। कछु० = सुध-उध च्यो गई। प्रवाल = नए निकले कोमल पत्तों की भाँति, ततठन = तरक्षण, सुरन्त। सुदेष = मंगल। [सुरेंत = इन्द्र। रस = आनन्द से

अमित गतिवाले होकर, आनन्द में मग्न होकर । सेस = शेषनाग ।  
 [ २४४ ] अङ्गराज = सुगन्धित लेप । मेदिनी = भूमि । [ २४६ ]  
 यरन = वर्ण, रंग । वाने = ढग के । मीढ़ि = मलकर । [ २४७ ] समतून्हु =  
 समान । [ २४८ ] घास० = वामस्थान । मन्दे = मन्दे याजार में ।  
 [ २४९ ] कहु० = उसे भस्म लगाने से कैसे सुख मिलेगा । [ २५० ]  
 चाँड = अभिलाष । विसासि = विश्वासघाती । तीजो पय = तीमरा  
 पन्थ ( मुरारेःतृतीय पन्था ) । यह = ऊधो । साधु = सज्जन, सीधा ।  
 [ २५२ ] कटु = कड़वी । अङ्गनिधि० = श्रीकृष्ण के मगुणरूप के ममुद  
 से । अनमिल = वेमेल ( निगुण ) । अमोलत = अमूल्य या बहुमूल्य  
 उदरा रहे हो ( मगुण से निर्गुण को बटकर बतला रहे हो ) [ २५३ ]  
 अतीत = परे । [ २५५ ] स्वाम-सन० = श्रीकृष्ण की ओर देकर, वका  
 विचार करके । [ २५६ ] वारे = बालपन से ही । [ २५७ ] अगाज =  
 भागे अगे । [ २५८ ] कचोरा = फटोरा । ताटक, खुभी, खुट्टिला =  
 कान के गहने । फुली = फूल, लौंग ( गहना ) । सारी० = कमल और  
 चन्द्र स अंकित साही । सारस = कमल । गूदर = फटी । [ २५९ ]  
 भेद० = पता न चला । बदन को = कहने के लिए निश्चित करने ।  
 वायु० = प्राणायाम । ताए = तपाए । [ २६० ] सँचि० = एकत्र कर  
 रखी थीं । छार = धूल । सरवरि० = कूबरी के योग्य । घटी० = बुरा  
 किया । हम जोही = हमें देखते रहे, हमें ब्राह्मक समझते रहे । [ २६१ ]  
 राहत = रहते हैं । कोट = बाँस की कोठी । [ २६२ ] परेलो = पत्र-  
 तावा । वारे = छोटे । भीर = सफ़ट, कष्ट, कठिनाई । सरपो = पूरा  
 हुआ । घायस० = कौए का भाई, कौआ । [ २६३ ] पत्यानो = विश्वास  
 किया । [ २६४ ] करसायल = मृग । अविधि सों = अन्याय से । [ २६५ ]  
 सूर = शूर, वीर, सूरदास । [ २६७ ] वारक = एक वार । [ २६८ ]  
 सोधियो० = धनसे पूछना । घात = हत्या । [ २६९ ] ज्यो० = जैसे  
 माता अपने जने बच्चे का पालन करती है । [ २७० ] गुस० = गुड

दिशाकर महलाभो । कोऊ० = किसी प्रकार । [ २७१ ] अन्तरमुष् =  
 भीतर । पाँदु० = बामना रोग जिनमें दारो र पीला पद जाता है ।  
 वजरो = वज्रा हुआ । उपद = भ्रमर । [ २७२ ] मद्रा० = शराब  
 पीकर । पराग० = शराब की पीक की रेखा । कुम० 'विपकुम पयोमुसम्',  
 त्रिप वा भरा घड़ा, जिनमें ऊपर दूध हा । श्मारे = खाने । कृत कर्म से ।  
 [ २७४ ] पुष्टप = पुष्ट । नेरे = निकट । [ २७५ ] पित्रौ है = पीछे ही भा ।  
 वर० = जब छाती छेदकर पीछे जा निकरने । पाछे० = पीछे दृष्टे हुए भागे  
 नहीं । कषध = पद । समुत्प० = सामना करने, मित्रों के लिए । [ २७६ ]  
 चिहुर = चिहुर, केश । यद० = हम प्रकार से । नपन० = नेत्रों का इपज  
 पूर्ण करते हुए । यटमारे = डाकू, चोर । [ २७७ ] कागर = कागज,  
 पत्र । [ २७८ ] पठ० = कीचट ही मैली माटी है । क्याज = बदने  
 से । अनुहारी = समता । [ २७९ ] भीति = दीवार । [ २८० ] दृष्टि-  
 द्वि = दृष्टपूर्वक । प्रवेमनि = जल की धारा के प्रवेश म । त्रिसेपनि =  
 विशेष रूप से । [ २८१ ] धाधन = दूत । कदा० = कदा-वश है । बल =  
 बलदाक । [ २८२ ] दादुर० = माना जाता है कि सर्पा के प्रथम जल से  
 मरे हुए मेढक जी उठते हैं । निविष = घना । [ २८३ ] मारंग =  
 चातक । सुरमा = पीर । [ २८४ ] खरे = तीव्र । [ २८५ ] इते मान =  
 इतना अधिक । अन्त = मार मत डालो । [ २८६ ] मिधुतीर = द्वारका में ।  
 [ २८७ ] यपन = घबन, योली । भीषम = भीष्म पितामह की भीति ।  
 दारि = विहाकर । दृष्टिउत० = भीष्म पितामह जब युद्ध में घायल हुए  
 तब सूय दक्षिणायण थे, उत्तरायण होने पर उन्होंने प्राण त्यागे । उन्हें  
 इच्छामरण का परदान था । [ २८८ ] त्रिसेप० = पलकरूपी तट ।  
 गोलक = पुतली । तट = श्रोठ और कपोल ही तट का मैदान है ।  
 [ २८९ ] पोष = बुरा ( सोच का विशेषण ) । [ २९० ] एक भङ्ग =  
 ( एकान्त ) केवल, निरन्तर । ज्यो मुन्ब० = जब वह पूर्ण मुखचन्द्र  
 सामने था । रई = रैंगी, दूधी । सकति = शक्तिभर । [ २९१ ] सारि =

निकालकर, पूरा करके । [ २६३ ] कुहू = अमात्रस्या । तमेचुर = पात्र-  
 बूढ, सुर्गा । [ २६६ ] चारि = घट, मुदा । वसन = वस । दसन =  
 दाँत । [ २९७ ] वह्नि = आग धारण करना है । छपा = राजि । [ २६८ ]  
 मापै = मुकसे । मख = काट न ले । [ २६६ ] हुंग० = घुँओं का गिरना  
 ही दुष है । मिव = स्तन । [ ३०० ] तादगधे = शरीर का जला ।  
 [ ३०१ ] सन = से । [ ३०३ ] सोध = पता । गहरु = बिलष ।  
 अम्बर = आकाश । [ ३०७ ] सीरे = षडे । सूरमा = वीर । [ ३१० ]  
 राम कृष्ण० = बलराम और श्रीकृष्ण के कारण किमी को कुछ नहीं सम-  
 भता थी । [ ३११ ] चिलक = शुद्ध 'तिलक', एक वृक्ष जो वसत में  
 फूलता है । गृगपशु = पशुजाति । वलित = युक्त । [ ३१३ ] दागर =  
 नाशक । [ ३१५ ] साधौ = बत्कंठा । [ ३१७ ] पच्छ = पैर, पलक ।  
 अम्बु = जल; आसू । अमृत = अघरामृत । कीर = सुग्गा, नासिका ।  
 कमठ = शुद्ध 'कमल', मुख या नेत्र । कोकिलो = वाणी । [ ३१८ ]  
 मूल मसूत श्लोक यह है—जटा नेय वेणी कृतकचक्रापो न गरल, गले  
 कातुरीयं शिरसि शशिलेखा न कुममम्, इय भूतिर्नामि प्रियविरहजन्मा  
 धवलिमा, पुरारातिर्भ्रान्त्या कुसुमशर । किं मां व्यथयसि । [ ३२४ ]  
 छपाकर = चन्द्र, सुम्ब । सारस = कमल । [ ३२६ ] परेलो = सोच ।  
 पौरि = द्वार । [ ३२८ ] वमापति = शिव । सोध० = पता पा गया ।  
 दसन० = दाँत से काटने का । नैनन० = सारा होने से । [ ३३० ]  
 मवभूनि की रचना यों है—घत्ते चक्षुर्मुकुलिन रणत्कोकिले यालपूते,  
 मार्गे गात्र क्षिपति चकुलामादगभस्य वायो ; दावप्रेम्णा मरमविमतीत्र  
 मात्रोत्तगय, ताम्यमूर्ति श्रयति बहुतो मृत्यवे चन्द्रपादान् । [ ३३२ ]  
 रगरी = सुनी । सलाका = सलाई ( अजन लगानेवाली ) । आगति =  
 दुष । [ ३३५ ] हस = परमहस, प्रसन्नानी । [ ३३७ ] कैमे =  
 समाप्त । आगरे = घटकर । [ ३३८ ] जल० = जल में शीगी हुवान से  
 बुझे निकलते हैं । वार = देर । [ ३४० ] पास = पास, जाल ।